VOLUME-2
ISSUE-1
June-2017

ISSN No. : 2456-2424

EMERGING RESEARCH JOURNAL

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

JABALPUR PUBLIC COLLEGE
RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION
49, KAMETA PATAN ROAD, JABALPUR (M.P.)
E-mail : jabalpurpubliccollegejbp@gmail.com
Website : jpc.org.in

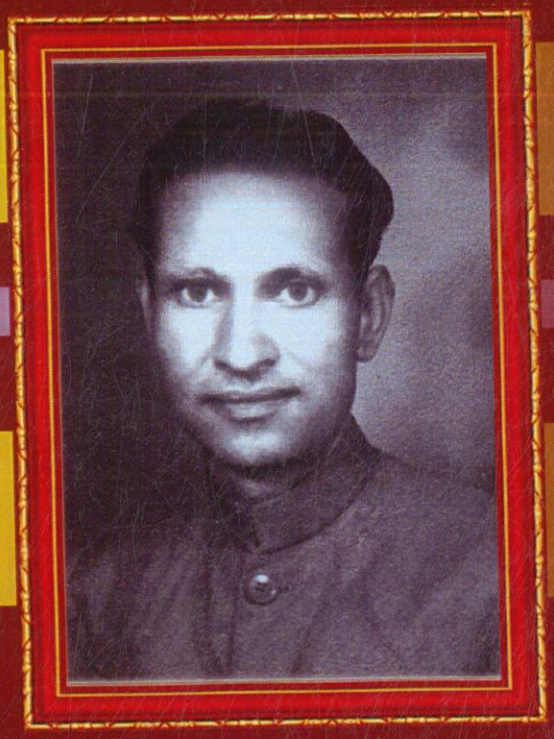

LATE SHRI SHIV NARAYAN VERMA

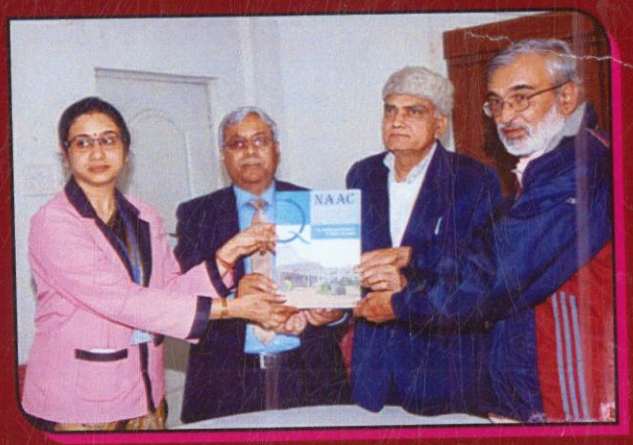

ISSN No. : 2456-2424

Emerging Research Journal

Vol. - 2 | Issue - 1 | June 2017

A Multi-Disciplinary International Research Journal

Emerging Research Journal is a high quality Journal devoted to the field of science, social science, education, commerce & Management. "Emerging research Journal" is an official Publication of the national society of Shiv Narayan Foundation. The Journal publisher original records, review articles, short communications, scientific survey, etc. Emerging Research Journal provides a forum for all above discipliner for development and research techniques and produces of laboratory investigations. It aims to Provide a highly readable and valuable addition to the literature which will serve as an indispensable reference for years to come. The Journal's core aims therefore, is to provide a platform for the researchers, scholars and research findings with the rest of the world there by facilitating informed decision which will improve society as a whole.

ISSN No. : 2456-2424 : June 2017

Bhupendra Nigam
Retd. Councellor
Govt. College of Educational Psychology
and Guidance, Jabalpur

MESSAGE

Research is a very commonly used word by many people both outside world and in the educational institutions. Research is the back bone of progress. Researches are being conducted every day for quality improvement and progress. It is very important in all fields specially Education in which not only quality research with proper planning, execution and development is required but more important aspect is reporting authentically.

We all know that research is quest for knowledge. Research is original contribution to the existing stock of knowledge for the advancement in the field in which it is carried out. In the field of education it's importance is many fold. The conclusions of research are useful in gaining new insides for the development of the personality of students who are future citizens of our democracy who will make India proud for the developments.

I believe that only carrying out research is not of much use. It's contribution will only be significant when the conclusions are known to a large majority of people, who may benefit from it.

I am glad that 'Emerging Research Journal' has come forward with this mission in leaps and bounds because of it's large circulation of researches with quality research paper which are of great use to researches, educationist and educators.

I wish it every success and congratulate the management and staff of Jabalpur Public College for it's publication.

Bujam

(BHUPENDRA NIGAM)

अनुक्रमणिका

क्र.		पेज नं.
	शिक्षा / Education	
1.	**श्रीमती संगीता कौल** उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन	1-4
2.	**डॉ. अम्बु नाथ मिश्रा** माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् अध्यापकों के प्रशासनिक सन्दर्भ में उनके तनाव का अध्ययन	5-10
3.	**डॉ. श्रीमती विनीता पाण्डेय** विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव	11-17
4.	**डॉ. प्रीति शुक्ला** उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन	18-25
5.	**श्रीमति सुधा पासी** विभिन्न संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन	26-30
6.	**श्रीमति समता तिवारी** शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	31-35
7.	**श्रीमती स्वाति गर्ग** शिक्षा में ई-शासन (अभिगमन तथा सहभागिता की विवेचना)	36-39
8.	**श्रीमति कीर्ति मिश्रा** शिक्षा के क्षेत्र में कला का महत्व	40-43
9.	**श्रीमती ज्योति शुक्ला** विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन	44-48
10.	**श्रीमती प्रियंका साहू** जबलपुर शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	49-51
11.	**श्रीमति किरण श्रीमाली** माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर गणित शिक्षण की परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट आधारित शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	52-55

12. **श्रीमती जया चतुर्वेदी** 56-64
उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

13. **श्रीमति रूपा सिंह** 65-69
शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का अध्ययन

14. ***Dr. Urmila Yadav / Dr. S.D.Singh*** 70-75
Ethics & Technology in Education System

15 ***Dr. Dimple Bhalla*** 76-84
A Comparative Study Of Educational Interest Of Students Having Visual & Hearing Impairment

मनोविज्ञान / Psychology

16. **डॉ. सुधा द्विवेदी** 85-92
विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व का तुलनात्मक अध्ययन

सूचना प्रौद्योगिकी / Information Techology

17. **श्रीमती श्वेता सिंह** 93-98
जनसंचार माध्यम एवं भारतीय महिलाओं का विकास

रसायन विज्ञान / Chemistry

18. ***Mrs. Anjulata Yadav*** 99-104
Alcohal, Phenol & Ether

-------*****--------

उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन

*श्रीमती संगीता कौल**

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु जबलपुर नगर की 5 शासकीय उच्चतर माध्यमिक शालाओं से कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में कोई अंतर नहीं होता है। विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों में सतत् रूचि जागृत कर उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का विकास किया जाना चाहिये।

प्रस्तावना :- शिक्षा का उद्देश्य बालक का सम्पूर्ण विकास करना है शिक्षा के द्वारा ही देश के लिये सुयोग्य, प्रतिभाशाली नागरिक तैयार किये जा सकते हैं। शिक्षा विद्यार्थी में अच्छी आदतों का विकास करती है, जिससे वे चरित्रवान बने व अनेक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकें व लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। प्राय: सभी छात्र अच्छे विद्यार्थी कहलायें यही महत्वाकांक्षा रखते हैं। अच्छे विद्यार्थी के लिये सर्वप्रथम आवश्यक है कि विद्यार्थी द्वारा अध्ययन की अच्छी आदतों का पालन किया जाये। विद्यार्थी को जब भी कोई अध्ययन संबंधी समस्या व उपलब्धि प्राप्त करने में बाधा आती है तो इन समस्याओं व बाधा को दूर करने के लिये सर्वप्रथम हम उनकी आदतों का ही अध्ययन करते हैं व उसे सही दिशा में निर्देश देते हैं व छात्र-छात्राओं को अध्ययन संबंधी उपलब्धि प्राप्ति में सहायक कार्यक्रमों व योजनाओं को बनाया जाता है।

किसी भी राष्ट्र की रीढ़ वहाँ के विद्यार्थी होते हैं। अत: किसी भी आयु का विद्यार्थी, जो अपने दैनिक कार्य (जिसमें अध्ययन भी सम्मिलित है) की योजना बनाता है, वह ऐसी आदतों का विकास करता है जो उसे न केवल अपने विद्यालय जीवन में वरन् उसके उपरांत भी सफल होने में सहायता देती है व उपलब्धि प्राप्ति में भी सहायता देती है। अध्ययन की क्रमबद्धता एवं सुव्यवस्थित योजनाओं का अनुसरण करने से स्पष्ट विचार का प्रादुर्भाव होता है। छात्रों की अध्ययन संबंधी आदतें उसके व्यक्तित्व पर, लक्ष्य प्राप्ति पर, उद्देश्य प्राप्ति व उपलब्धियों को प्राप्त करने, सफलता प्राप्ति पर प्रभाव डालती हैं यही आदतें छात्रों के भावी निर्माण के लिये भी आवश्यक हैं। यदि छात्र की अध्ययन संबंधी आदतें सकारात्मक है तो शिक्षा प्राप्ति में सहयोग देती है और आदतें नकारात्मक होने पर छात्रों पर विपरीत प्रभाव डालती हैं।

मरसैल - 'आदतें व्यवहार करने की ओर परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना करने की निश्चित विधियॉ है।'

विलियम जोन्स - 'प्राणी के पूर्ववर्ती व्यवहारों की पुनरावृत्ति आदत है।'

छात्रों की अध्ययन से संबंधित अनेक प्रकार की आदतें होती है जैसे उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र किस विषय में रूचि रखते हैं तथा रूचिपूर्ण किस विषय को पढ़ते हैं। प्रात: काल में पढ़ते हैं या रात्रिकाल में पढ़ते हैं, प्रात: कौन सा विषय पढ़ते हैं तथा बैठकर पढ़ते हैं या लेटे-लेटे पढ़ते हैं तथा छात्र विषयों का अध्ययन पूरे वर्ष करते हैं या परीक्षा के समय

*सहायक प्राध्यापक, जबलपुर पब्लिक कॉलेज, करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

ही अध्ययन करते हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में यह बात ज्यादा दृष्टिगोचर हो रही है कि उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययन कर रहे अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की संख्या काफी कम होती है तथा जो विद्यार्थी अध्ययन कर भी रहे हैं वे अपने विषय चुनाव व अपने परीक्षा परिणामों से संतुष्ट नहीं होते इसका कारण इन जाति या जनजातियों का आर्थिक पिछड़ापन, उचित मार्गदर्शन न मिल पाने के साथ-साथ अध्ययन संबंधी सही आदतों का न होना भी है। किसी भी उपलब्धि के लिये अनेक कारण उत्तरदायी होते हैं। अच्छे शैक्षिक परिणामों के लिये निर्देशात्मक सामग्री, शैक्षिक वातावरण आदि की कमियों को दूर किया जाना चाहिये। मिश्र (1983) ने सेना कर्मियों की अध्ययन एवं पढ़ने की अदतों का अध्ययन किया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि रूचि के अनुसार प्राप्त सामग्रियों का अभाव, थकान की अनुभूति, सही मार्गदर्शन का अभाव, भविष्य के प्रति उदासीन आदि अध्ययन एवं पढ़ने की आदतों में बाधक थे। एस.ग्रे. एवं आर. मोनरो (1990) ने वयस्कों की पढ़ने की रूचि पर अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि अविवाहित स्त्री -पुरुष, विवाहित स्त्री-पुरुषों से अधिक पढ़ने की रूचि रखते हैं।

किसी राष्ट्र का भविष्य वहाँ की शिक्षा व्यवस्था व विद्यार्थी पर निर्भर रहता है, जिसे देश की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी उस देश में वैसे ही विद्यार्थी को शिक्षित कर भविष्य के नागरिक का निर्माण होगा। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और सही दिशा निर्धारित करने के लिये सबसे महत्वपूर्ण माध्यम शिक्षा ही है शिक्षा द्वारा छात्रों को न केवल ज्ञान प्राप्त करना बल्कि अनुकूल विषय-वस्तु प्रस्तुत करना व साथ ही अर्जित ज्ञान का सही मूल्यांकन भी आवश्यक है। अत: आवश्यक है कि छात्रों की विभिन्न रूचियों, दृष्टिकोणों के साथ-साथ उनकी पढ़ने की आदतों का ज्ञान प्राप्त किया जाये। अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति का बड़ा भाग देश में निवास करता है। यह भाग शैक्षिक क्षेत्र में समाज के अन्य समुदाय से पिछड़ा है। इस समुदाय को समान स्तर तक लाना चाहते हैं तो इस वर्ग के छात्रों को समान रूप से शिक्षा दी जाए। इसके लिये आवश्यक है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के विभिन्न विषयों जैसे गणित, जीव विज्ञान, वाणिज्य, कला संकाय आदि के चुनाव में उनकी रूचि, आवश्यकता, क्षमता, उचित दिशा निर्देश आदि का ध्यान रखा जाए। इनके चुनाव में छात्र के व्यक्तित्व एवं वैयक्तिक भिन्नता का जहाँ प्रभाव रहता है वहीं इनकी अध्ययन संबंधी आदतों का प्रभाव पड़ता है।

चर:- स्वतंत्र चर - अध्ययन संबंधी आदतें

आश्रित चर - अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी

उद्देश्य:- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :-

1. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श :-

न्यादर्श तालिका

जाति	छात्र	छात्राएं	योग
अनुसूचित जाति	25	25	50
अनुसूचित जनजाति	25	25	50
योग	**50**	**50**	**100**

उपकरण :- अध्ययन संबंधी आदत मापनी - एस.पी. पालसने (पुणे)

शोध विधि :- शोध अध्ययन के लिये आवश्यक प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया।

परिणामों का विश्लेषण :-

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों के प्राप्तांकों के माध्यमानों के अंतर की सार्थकता

लिंग	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	अनुसूचित जाति	25	61	9.27	1.85	0.72	< 0.05
	अनुसूचित जनजाति	25	62.8	8.3	1.66		
छात्राएं	अनुसूचित जाति	25	63.8	8.32	1.66	0.086	< 0.05
	अनुसूचित जनजाति	25	64	8.0	1.6		
छात्र एवं	अनुसूचित जाति	50	62.1	68.03	1.13	1.10	< 0.05
छात्राएं	अनुसूचित जनजाति	50	63.9	8.36	1.18		

स्वतंत्रता का अंश 48/48/98 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 2.01/2.01/1.98

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्र/छात्रा/ विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमशः 0.72, 0.08 एवं 0.56 है जो सार्थक हेतु न्यूनतम सारणी मान की अपेक्षा कम है। अनुसूचित जाति के छात्र/छात्रा /विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों के अंकों के माध्य से स्पष्ट होता है कि उनकी आदतें अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की आदतों की तुलना में निम्न है।

अत: अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास करना चाहिये। पाठ्य पुस्तकों के अलावा दृश्य सामग्री, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि द्वारा पाठ्य सामग्री को जानने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिये। एक ही पुस्तक से पढ़ने की आदत न अपनाकर अनेक पुस्तकों से पाठ्य सामग्री एकत्रित करने की प्रक्रिया पर जोर डालना चाहिये, पुस्तकालय का उपयोग, नियमित रूप से समाचार पत्र का अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे सकारात्मक आदतों का विकास होगा व उच्च उपलब्धियों को प्राप्त करने के अवसरों का ज्ञान होगा तभी योग्य विद्यार्थियों का निर्माण होगा।

निष्कर्ष:- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ -

- भटनागर, सुरेश शिक्षण (1998) अधिगम प्रक्रिया का विकास, लालबुक डिपो, मेरठ।
- भटनागर, सुरेश (2002) शिक्षा अनुसंधान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- कपिल, एच.के. (1997) सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- राय, पारसनाथ (1999) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् अध्यापकों के प्रशासनिक सन्दर्भ में उनके तनाव का अध्ययन

डॉ. अम्बु नाथ मिश्रा *

शोध सार

तनाव का तात्पर्य उस कारक, घटना या कुसमायोजन से है जो तनाव उत्पन्न कर देता है। यह एक ऐसा गहरा व गंभीर मानसिक भारीपन होता है जिसमें व्यक्ति निरन्तर यथाशीघ्र मुक्त होना चाहता है परन्तु ऐसा कर पाने में अपने आपको व्यवहारिक रूप से असफल व असमर्थ अनुभव करता है। शोध का प्रमुख उद्देश्य कार्यरत् अध्यापकों के प्रशासनिक सन्दर्भ में उनके तनाव का अध्ययन करना था। शोध में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। तनाव संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए तनाव मापनी का प्रयोग किया है। प्राप्त जानकारी को सांख्यिकीय विधि द्वारा सत्यापन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् अध्यापकों के प्रशासनिक संदर्भ में उनके तनाव में कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

प्रस्तावना :- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कभी-कभी किसी मात्रा में तनाव होता है। कुछ मात्रा में तनाव सकारात्मक होता है जो अधिक उपलब्धि की ओर अग्रसरित करता है जबकि अधिक मात्रा में तनाव के नकारात्मक परिणाम होते हैं। शिक्षक भी मनुष्य है इसलिए उसके जीवन में तनाव आना स्वाभाविक है। कुछ शिक्षक इस तनाव को आसानी से सहन कर लेते हैं जबकि कुछ शिक्षकों को इसके लिए सहन कर पाना बड़ा मुश्किल होता है। जिसका प्रभाव न कि उनके शिक्षण कार्य पर पड़ता है बल्कि उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है। अनुसंधानों (वेन्डी मूरी) से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षण कार्य में बहुत अधिक तनाव होता है। अनेक व्यवसायों में विभिन्न पदों पर कार्यरत व्यक्तियों की तुलना में जो परिणाम प्राप्त हुए हैं उनमें शिक्षकों में तनाव की मात्रा सबसे अधिक थी। अमेरिका में शिक्षकों के राष्ट्रीय संघ के (1999) सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि 36% शिक्षकों में तनाव पाया गया। एक अन्य अनुसंधान (2000) में यह संख्या बढ़कर 41.5% हो गयी जबकि बाकी 58.5% भी कम तनाव की श्रेणी में पाए गए।

आज हमारा राष्ट्र 21 वीं सदी में प्रवेश कर चुका है। वर्तमान में हमें एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना है जो लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित हो। सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रीय एकता, तथा समाजवादी विचारधारा को संगठित कर भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति करके मानव संसाधन का समुचित विकास करना है। इन सब तथ्यों के विकास में शिक्षा पद्धति की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान शिक्षा का भावी स्वरूप तथा अपेक्षित समाज के निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षक किस प्रकार सहायक हो सकते हैं, यह सोचना नितान्त आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा ही भौतिक, बौद्धिक, नैतिक एवं भावनात्मक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को सुदृढ़ किया जा सकता है।

शिक्षा का किस प्रकार पुनर्गठन हो कि वह इस उत्तरदायित्व को वहन करने तथा नई चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो। इस दिशा में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें सजग, जागरूक एवं चेतनाशील अध्यापकों की आवश्यकता है। क्योंकि शिक्षा ही सम्पूर्ण शिक्षक की धुरी है। हमें उन कारणों का पता लगाना है जिससे प्रभावित होकर एक कुशल शिक्षक

*सूबेदार मेजर (रिलीजस टीचर) 11 बटालियन जम्मू एण्ड काश्मीर राइफल्स आर्मी

तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करने लगता है। परिणामस्वरूप वह न तो उचित शिक्षण दे पाता है और न ही अपने उत्तरदायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर पाता है। यदि इन सब कारणों का निदान हो जाय तो निश्चित ही हमारी शिक्षा पद्धति में गुणात्मक सुधार हो सकता है और आज का शिक्षक एक कुशल शिक्षक एवं भावी राष्ट्र के उज्जवल भविष्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

टामालिन्सन और एलेन (1980) ने तनाव के कारणों का संगठनात्मक प्रशासनिक प्रभावशीलता के सन्दर्भ में अध्ययन किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किया कि उच्चतम तनाव एवं चिन्ता विशेष रूप से निम्न एवं मध्यम स्तर के कोणों में व्याप्त है। इसी प्रकार गुप्ता (1981) ने अपने शोध अध्ययन के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाएँ अपेक्षाकृत पुरुष अध्यापकों के सुनियोजित ढंग से समायोजित हैं। **सीथा, रामू (1987)** ने नगरीय क्षेत्रों में स्थापित शैक्षणिक संस्थाओं एवं उनकी समस्याओं से संबंधित विद्यालयों में कार्यरत एवं शिक्षा प्राप्त अध्यापकों तथा छात्रों की समायोजन प्रक्रिया का अध्ययन किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों से आये शैक्षणिक संस्थान में छात्रों की समायोजन संबंधी समस्याएँ अधिक पायी गयी हैं। **शर्मा, एस. (1988)** ने तनाव एवं चिंता से संबंधित अध्ययन किया तथा अपने अध्ययन के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि मूलरूप से तनाव को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व, व्यक्ति एवं कार्यकर्ता से संबंधित वातावरण, रहन-सहन का स्तर एवं प्रशासनिक प्रभावशीलता है।

शैक्षिक संस्थाओं के वातावरण मुख्य रूप से प्रशासनिक एवं प्रबन्धकीय सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। माध्यमिक स्तर पर प्रशासनिक सन्दर्भ में प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य की विशेष भूमिका होती है। इन विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक जिनका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं चारित्रिक विकास में योगदान देकर देश के सुनहरे भविष्य की रचना करना है परन्तु ऐसा अनुभव किया गया है कि विद्यालय के प्रशासनिक वातावरण से प्रभावित होकर शिक्षकगण तनावग्रस्त होकर अपने आपको समायोजित करने में असफल होने लगते हैं।

वर्तमान में अब तक सटीक रूप से माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के तनाव का उनके प्रशासनिक सन्दर्भ में शिक्षा जगत में अधिक कार्य नहीं हो पाया है जबकि अध्यापक या अध्यापिकाओं के तनाव एवं समायोजन में पारिवारिक परिस्थितियों के साथ-साथ विद्यालय के प्राचार्य, प्रबन्धक एवं प्रशासनिक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि प्रशासनिक सन्दर्भ एवं प्रभावशीलता से संबंधित यत्किंचित कार्यों का अवलोकन अवश्य हुआ है परन्तु उपरोक्त शोध विषय के सन्दर्भ से संबंधित नहीं है। अत: ऐसी दशा में प्रस्तुत शोध कार्य की नितान्त आवश्यकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के तनाव एवं समायोजन का उनके प्रशासनिक सन्दर्भ में अध्ययन करना है, क्योंकि अध्यापक शैक्षणिक उद्देश्यों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। दूसरी तरफ यह सामान्य विचारधारा है कि विद्यालयीन प्रशासन में प्रधानाचार्य या प्रबन्धक की प्रभावशीलता विभिन्न तथ्यों से प्रभावित होती है जिसमें शिक्षकों की भूमिका एक महत्वपूर्ण कारक है। इस प्रकार उपरोक्त तर्कगत विचारों के आधार पर वर्तमान में उपरोक्त विषय के अध्ययन की आवश्यकता एवं उपयोगिता सार्थक है ताकि शिक्षक तनाव मुक्त होकर शिक्षण कार्य को सम्पादित करते हुए एक अच्छे भारत के निर्माण एवं सर्वांगीण विकास में अपना सहयोग दे सकें जिससे एक ''सुन्दर राष्ट्र का निर्माण हो सके''।

प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं परामर्श हेतु एक मील का पत्थर साबित होंगे जिसके माध्यम से वे विभिन्न परिस्थितियों में तनाव प्रबन्धन कर सकेंगे, जिससे कि उनका समायोजन स्तर बढ़ जायेगा और जहाँ उन्हें एक ओर कार्य संतुष्टि होगी वहीं दूसरी ओर जीवन संतुष्टि भी होगी जिससे वे अपने शिक्षकीय दायित्व का निर्वाह और अधिक गुणवत्ता पूर्वक कर सकेंगे, जिससे अच्छे विद्यार्थियों के रूप में भारत को अच्छे भावी नागरिक प्राप्त हो सकेंगे।

उद्देश्य –

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के तनाव में अन्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के तनाव में अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य में जबलपुर संभाग के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन क्रमानुसार किया गया है –

प्रशासनिक प्रकृति	संस्था की प्रकृति	पुरुष	महिला	योग
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल	शासकीय	100	100	200
	अशासकीय	100	100	200
राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश	शासकीय	100	100	200
	अशासकीय	100	100	200
योग		**400**	**400**	**800**

उपकरण– तनाव मापनी – डॉ. एम. सिंह द्वारा निर्मित।

विधि– तनाव मापनी का प्रशासन अनुसंधानकर्ता ने व्यक्तिगत रूप से किया है। परीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को अत्यंत सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में परीक्षणों के उद्देश्यों को भली भांति समझाया गया उन्हें यह भी बताया गया तथा विश्वास दिलाया गया कि परीक्षण परिणामों के आधार पर दिया जाने वाला परामर्श तनाव–प्रबन्धन में सहायक होगा एवं तनाव को कम करने ने भी अपनी अहम् भूमिका अदा करेगा।

प्रत्येक परीक्षण में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा भरी जाने वाली समस्त जानकारी को उनसे भरवाया गया इसके साथ ही परीक्षण के निर्देशों को भी उन्हें अच्छी तरह से समझाया गया कि किस प्रकार उन्हें अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त करनी है। उन्हें यह भी विश्वास दिलाया गया कि परीक्षण परिणाम पूर्णत: गोपनीय रखे जायेंगे, इसलिए निर्भीक होकर अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त कर सकते हैं। उनसे यह निवेदन किया गया कि यदि वे चाहें तो अपना नाम न लिखें। निर्देशों को समझ लेने के पश्चात् उन्हें इस निवेदन के साथ प्रतिक्रियायें देने का निवेदन किया गया कि वे किसी परीक्षण प्रश्न को अनुश्रित न छोड़ें। न्यादर्श में लिए गए सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से दोनों परीक्षण भरवाकर फलांकन कुंजी के आधार पर उनका मूल्यांकन किया गया एवं मण्डल, प्रबन्धन की प्रकृति तथा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आधार पर सारणीबद्ध करके 'मास्टर शीट' तैयार की गयी है। परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण की गणना की गयी है।

विश्लेषण एवं व्याख्या-

प्रदत्तों का विश्लेषण कर जो परिणाम प्राप्त हुए है उनको निम्नलिखित सारणियों में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 01

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षकों के तनाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय	140	16.16	8.16	1.26	> 0.05
राज्य	136	14.06	7.66		

स्वतन्त्रता के अंश - 274

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के शिक्षकों का मध्यमान 16.16 एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षकों का मध्यमान 14.06 है। इनके मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 1.26 है जो 0.05 स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारित मान 1.97 की अपेक्षा कम है। उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश के शिक्षकों के तनाव में कोई अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 02

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश की शिक्षिकाओं के तनाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय	181	16.39	8.65	0.08	> 0.05
राज्य	171	16.47	8.81		

स्वतन्त्रता के अंश - 350

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.59

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की शिक्षिकाओं का मध्यमान 16.39 एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश की शिक्षिकाओं का मध्यमान 16.47 है। इनके मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.08 है जो 0.05 स्तर के लिए न्यूनतम

निर्धारित मान 1.97 की अपेक्षा कम है। उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश की शिक्षिकाओं के तनाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक 03

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के तनाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

माध्यमिक शिक्षा मण्डल	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
केन्द्रीय	321	16.29	8.43	0.73	> 0.05
राज्य	307	15.80	8.34		

स्वतन्त्रता के अंश – 626

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 1.96

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.59

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का मध्यमान 16.29 एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का मध्यमान 15.80 है। इनके मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.73 है जो 0.05 स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारित मान 1.96 की अपेक्षा कम है। उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के तनाव में कोई अन्तर नहीं है।

तनाव संबंधी परिणामों के विश्लेषण के उपरान्त जो विभिन्न तथ्य स्पष्ट होते हैं उनसे यह ज्ञात होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षकों, शिक्षिकाओं तथा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के सामूहिक समूहों के तनाव में कोई अन्तर नहीं है (सन्दर्भ तालिका क्रमांक 01, 02, 03)। यह स्पष्ट होता है कि मण्डल चाहे वह केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा हो या राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश हो का प्रभाव शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं उनके सम्मिलित समूहों के तनाव पर नहीं पड़ता है। यह सम्भवत: दोनों मण्डल के शिक्षक समूहों के समान शैक्षिक योग्यता, समान शिक्षक दायित्व, अवकाश की सुविधा के फलस्वरूप हो सकता है। शिक्षकों का जीवन स्तर प्राय: एक समान ही होता है। सम्भवत: यह एवं इससे मिलते-जुलते अन्य उपरोक्त परिणामों हेतु उत्तरदायी हो सकते हैं। जहाँ तक शिक्षण कार्य का प्रश्न है उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्यापन कार्य अति विशिष्ट करना होता है क्योंकि इस अवधि की उपलब्धि विद्यार्थियों के भविष्य को निर्धारित करती है। सभी शिक्षक विद्यार्थियों के लाभार्थ पूरी लगन एवं उत्साह के साथ अध्यापन करने का प्रयास करते हैं। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के शिक्षकों को वेतन भी पर्याप्त मिलता है, जिससे उनमें जीवन संतुष्टि भी पर्याप्त रहती है ऐसी स्थिति में मण्डल की सम्बद्धता अधिक महत्व नहीं रखती है। आर. रविचन्द्रन एवं राजेन्द्रन (2007) द्वारा किये गये शिक्षकों में तनाव के प्रत्यक्षित स्रोत विषयक अध्ययन के अनुसार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अनुभव तनाव के विभिन्न स्रोतों का पता लगाया गया। विश्लेषण उपरान्त परिणामत: यह पाया गया कि शिक्षण व्यवसाय से संबंधित तनाव विभिन्न स्रोतों के प्रत्यक्षण में व्यक्ति चरों, लिंग, आयु, शैक्षिक स्तर, शिक्षण अनुभव एवं विद्यालय के प्रकार सार्थक भूमिका का निर्वाहन करता है।

इस प्रकार उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि तनाव को शिक्षकों के लिंग, आयु, शैक्षिक स्तर, अनुभव एवं विद्यालय का प्रकार प्रभावित करता है। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश मंडलों के न्यादर्श में चयनित शिक्षकों के उपरोक्त चरों में समानता के फलस्वरूप सम्भवत: तनाव की मात्रा में अन्तर नहीं आया है। इस संबंध में विभिन्न मण्डलों के तुलनात्मक परिणामों संबंधी कोई अन्य शोध उपलब्ध नहीं हो सका परन्तु शिक्षकों के तनाव एवं शिक्षक प्रभावोत्पादकता संबंधी इन्दिरा शुक्ला (2008) का शोध महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। इन्दिरा शुक्ला ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उनके शिक्षक प्रभावोत्पादकता के संबंध में किये गये अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों द्वारा प्रत्यक्षित शिक्षक प्रभावोत्पादकता एवं संवेगात्मक थकान की तीव्रता तथा बारम्बारता के कारण क्लांतता ही व्यक्तिगत निपुणता सार्थक रूप से संबंधित है। शिक्षार्थियों द्वारा शिक्षण प्रभावोत्पादकता एवं व्यक्तिगत निपुणता की बारम्बारता के कारण क्लांतता सार्थक रूप से सह संबंधित पाई गई। इसके साथ ही साथ पाया गया कि शिक्षकों के तनाव एवं संवेगात्मक थकान की तीव्रता के मध्य सकारात्मक संबंध होता है।

निष्कर्ष - केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं के तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमश: 1.26, 0.08 तथा 0.73 आए हैं जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थकता के लिए न्यूनतम तालिका मानों की अपेक्षा कम हैं। अत: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं राज्य माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश के शिक्षक, शिक्षिकाओं तथा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ -

- अरूण कुमार सिंह (2001), ''मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा की विधियाँ'', मोतीलाल बनारसीदास, संस्करण-2001, 2, 4, 6, पृष्ठ 46, 47
- अरूण कुमार सिंह (2005), ''आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान'', मोतीलाल बनारसीदास पुर्नमुद्रण, दिल्ली, 2005, पं.सं. 247-248
- बर्मन, गायत्री (2005) ''किशोरावस्था'' द्वितीय संस्करण, शिवा प्रकाशन, श्री गणेश मार्केट, खजूरी बाजार, इन्दौर, पृ.सं. 137-138
- भार्गव, उषा (1987), ''किशोर मनोविज्ञान'', प्रथम संस्करण 1987, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, ए-26/2, विद्यालय मार्ग, तिलकनगर, जयपुर-302004 पृ.सं. 190-1991
- अर्नेस्ट डब्ल्यु, ब्रेवर एवं जामा मैक्माहन (2003), 'औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी शिक्षक प्रशिक्षकों में कार्य तनाव एवं क्लांतता' जर्नल ऑफ वोकेशनल एड्युकेशन रिसर्च, ईश्यु-वॉल्युम-28, नं. 2।
- अबेल, मिलिसेन्ट एच. एवं सीबेल जोन्ने (1989), 'ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में क्लांनता एवं तनाव', द जर्नल ऑफ एड्युकेशनल रिसर्च।
- बख्तियार, डॉ. एस. चौधरी एवं विजया राव (2004), 'शिक्षण के समय हदयवाहिका प्रतिक्रिया: विद्यालयी शिक्षकों में एक उभरता हुआ व्यवसायिक तनाव', इंडियन जर्नल ऑफ ऑक्युपेशनल एण्ड एनवायरमेंटल मेडिसिन, वॉल्युम 8, पृ. 1।

विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव

*डॉ. श्रीमती विनीता पाण्डेय**

शोध सार

*प्रस्तुत शोध पत्र में विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबन्धन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया एवं डॉ. बी.हसन (1990) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया गया। शोधकार्य में कुल 1440 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से न्यादर्श हेतु चुना गया। विद्यार्थियों पर कॅरियर निर्णय क्षमता मापनी पर परिणाम प्राप्त किये गये आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, प्रसरण विश्लेषण एवं 3*2*2 कारक अभिकल्प का प्रयोग किया गया। निष्कर्षत: विद्यार्थियों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर विद्यालय प्रबन्धन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।*

प्रस्तावना:- शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य को होती है बिना शिक्षा के मानव जीवन भार स्वरूप हो जाता है जीवन में किसी भी समस्या के उपस्थित होने पर व्यक्ति अपने सीखे हुये ज्ञान के आधार पर उसका हल ढूँढता है यदि उसकी शिक्षा उच्चकोटि की है तो वह अपनी समस्या का उपयुक्त तथा सम्यक हल ढूँढ लेता है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश के चहुंमुखी विकास हेतु शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। शिक्षा के द्वारा ही समाज में परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम है अत: इसके आभाव में एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति का सीधा प्रभाव मानव जीवन पर देखा जा रहा है। भाषा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संविधान ने इसे संरक्षण प्रदान किया है प्रत्येक प्रांत के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा राष्ट्रीय भाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर सकते है। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई जाने वाली नित्य नई संस्थाएँ खुल रही हैं उच्च शिक्षा के नये आयाम उपस्थित हो रहे है प्रत्येक विद्यार्थी को अंग्रेजी एवं हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है इस स्थिति में अभिभावकों के समक्ष सबसे बड़ी समस्या है कि वे अपने बच्चों को किस माध्यम से शिक्षा प्रदान करें ताकि उनका जीवन उत्तम हो सके क्योंकि शिक्षा का माध्यम उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति का भी परिचायक है कि उन्हें दूसरे किस दृष्टि से देखेंगे या स्वीकार करेंगे।

पूर्व अनुसंधान परिणामों की विवेचना से यह तथ्य उभरकर आता है कि मातृभाषा एवं पढ़ाये जाने वाले माध्यम अर्थात् शिक्षण माध्यम किसी न किसी प्रकार से विद्यार्थी के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है किंतु विद्यार्थियों की कैरियर निर्णय क्षमता पर शिक्षण माध्यम के प्रभाव के संबंध में अभी तक शोध कार्य नहीं हुए हैं अत: प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि शिक्षण माध्यम विद्यार्थियों की कॅरियर निर्णय क्षमता को किस प्रकार से प्रभावित करता है उन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु प्रस्तुत शोध समस्या का चुनाव किया गया है।

***एसोसिएट प्रोफेसर, लक्ष्मीबाई साहू कॉलेज, जबलपुर म.प्र.**

समस्या का कथन :-

''विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव''

शोध कार्य के उद्देश्य :-

1. विभिन्न संकाय के छात्रों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।
2. विभिन्न संकाय के छात्राओं के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।
3. विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना :-

1. विभिन्न संकाय के छात्रों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. विभिन्न संकाय के छात्राओं विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर :-

1. **स्वतंत्र चरः**- - विद्यालय प्रबंधन शासकीय /अशासकीय
2. **आश्रित चरः**- कॅरियर निर्णय क्षमता
3. **नियंत्रित चरः**- कक्षा, लिंग, आय।

न्यादर्श तालिका

माध्यम	परिवेश	प्रबंधन का प्रकार	लिंग	संकाय			योग
				गणित	विज्ञान	वाणिज्य	
हिन्दी माध्यम	शहरी	शासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
		अशासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
	ग्रामीण	शासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
		अशासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90

माध्यम	परिवेश	प्रबंधन का प्रकार	लिंग	संकाय			योग
				गणित	विज्ञान	वाणिज्य	
अंग्रेजी माध्यम	शहरी	शासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
		अशासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
	ग्रामीण	शासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
		अशासकीय	छात्र	30	30	30	90
			छात्राएं	30	30	30	90
कुल योग				480	480	480	1440

अनुसंधान उपकरण:- प्रस्तुत अध्ययन में कु. विजया तिवारी एवं डॉ. बी.हसन द्वारा (1990) में निर्मित एवं मानकीकृत कॅरियर निर्णय क्षमता मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संकलन विधि:- शोध कार्य में प्रदत्तों का संकलन महत्वपूर्ण कार्य होता है। प्रदत्तों के अभाव में शोध का प्रतिपादन, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण तथ्यहीन हो जाता है। अत: प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों पर कॅरियर निर्णय मापनी को प्रशासित कर उचित एवं आवश्यक प्रदत्त एकत्र किये गये।

सांख्यिकीय विधियाँ:- प्रस्तुत अध्ययन में मानक विचलन, मध्यमान, द्वि-दिक प्रसरण विश्लेषण एवं 'एफ' मान की सहायता से परिणाम प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण:- परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया -

सारणी क्रमांक - 1

छात्रों की कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

चरिता के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान का वर्ग	''एफ'' मान	'पी' मान
(अ) संकाय	2	58.97	29.49	1.99	> 0.05
(ब) प्रबंधन	1	10.27	10.27	0.69	> 0.05
संकाय × प्रबंधन	2	11.30	5.65	0.38	> 0.05
आंतरिक चरिता (त्रुटि)	714	10561	14.79		
कुल योग	**719**	**10641**	**60**		**सार्थक नहीं**

स्वतंत्रता के अंश - 1, 714
- 2, 714

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 3.85, 3.00
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 6.66, 4.62

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का छात्रों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। विभिन्न संकायों के मध्य, विद्यालय प्रबंधन के मध्य एवं इन दोनों की अंत: क्रिया संबंधी ''एफ'' अनुपातों के मान क्रमश: 1.99, 0.69 एवं 0.38 आये है जो 0.05 स्तर पर न्यूनतम सारणी मान की अपेक्षा कम हैं।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विभिन्न संकायों, विद्यालय प्रबंधन एवं इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का छात्रों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिणामों को ग्राफ क्रमांक -1 में प्रदर्शित किया गया है।

ग्राफ क्रमांक-1

छात्रों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के अंत: क्रियात्मक तुलनात्मक परिणामों का ग्राफीय निरूपण

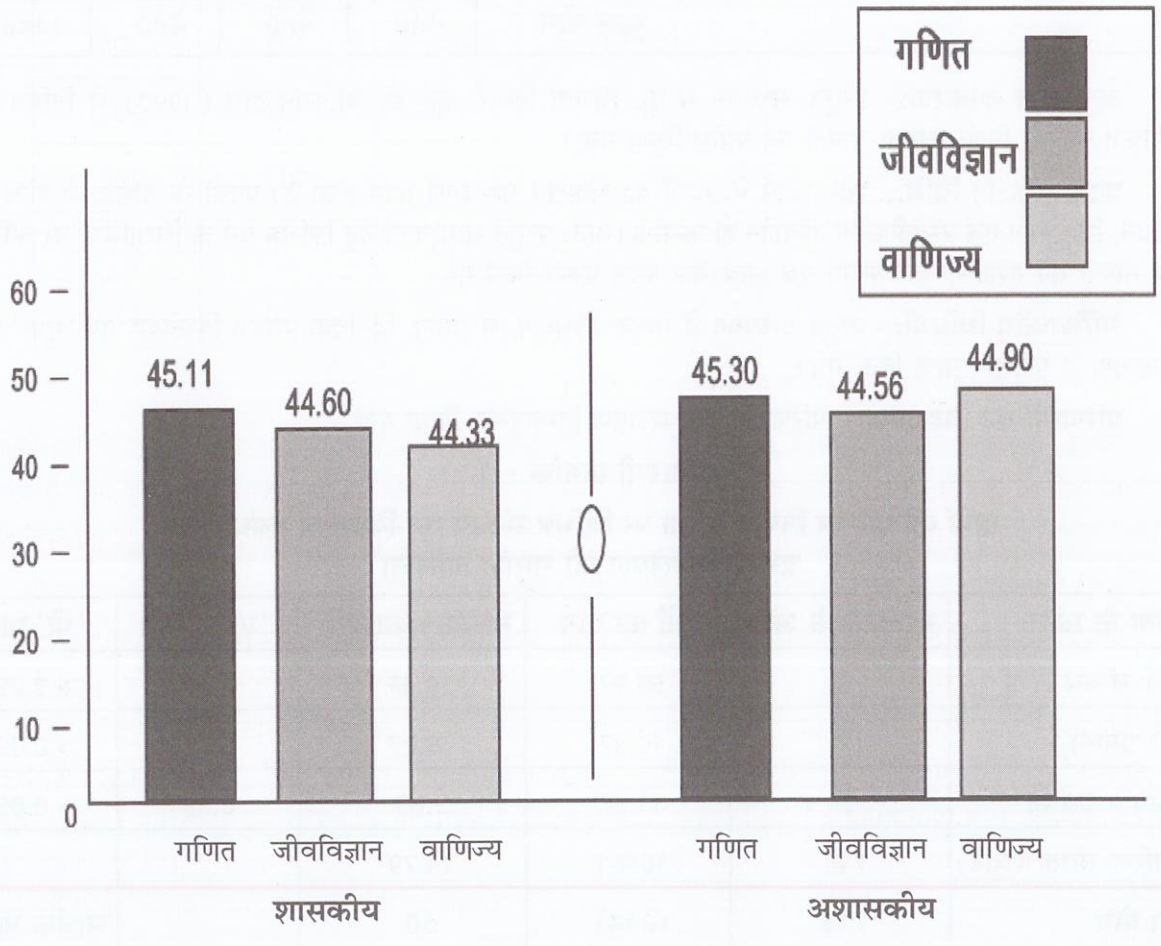

सारणी क्रमांक - 2

छात्राओं की कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

चरिता के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान का वर्ग	''एफ'' मान	'पी' मान
(अ) संकाय	2	30.44	15.22	0.93	> 0.05
(ब) प्रबंधन	1	0.40	0.40	0.02	> 0.05
संकाय × प्रबंधन	2	20.45	10.23	0.63	> 0.05
आंतरिक चरिता (त्रुटि)	714	10671	16.35		
कुल योग	**719**	**11722**	**42**		**सार्थक नहीं**

स्वतंत्रता के अंश - 1, 714 — 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 3.85, 3.00

- 2, 714 — 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 6.66, 4.62

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न संकाय, विद्यालय प्रबंधन एवं इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का छात्राओं के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। विभिन्न संकायों के मध्य, विद्यालय प्रबंधन के मध्य एवं इन दोनों की अंत: क्रिया संबंधी''एफ'' अनुपातों के मान क्रमश: 0.93, 0.02 एवं 0.63 आये है जो 0.05 स्तर पर न्यूनतम सारणी मान की अपेक्षा कम हैं।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विभिन्न संकायों, विद्यालय प्रबंधन एवं इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का छात्राओं के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उपरोक्त परिणामों को ग्राफ क्रमांक -2 में प्रदर्शित किया गया है।

ग्राफ क्रमांक-2

छात्राओं के कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के अंत: क्रियात्मक तुलनात्मक परिणामों का ग्राफीय निरूपण

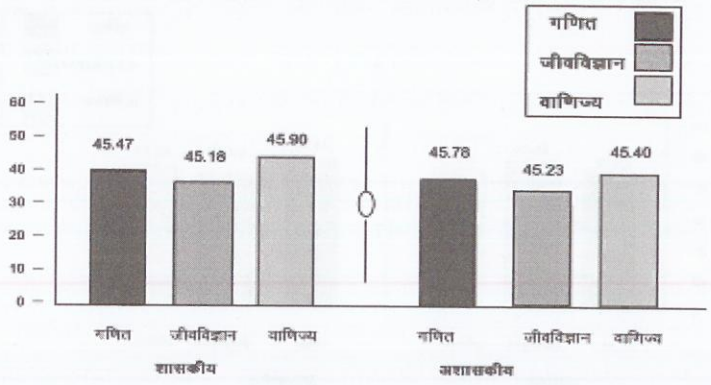

विद्यालय प्रबंधन एवं संकाय

सारणी क्रमांक 3

विद्यार्थियों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

चरिता के स्त्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान का वर्ग	''एफ'' मान	'पी' मान
(अ) संकाय	2	65.73	32.86	2.10	> 0.05
(ब) प्रबंधन	1	3.31	3.31	0.21	> 0.05
संकाय × प्रबंधन	2	4.33	2.16	0.14	> 0.05
आंतरिक चरिता (त्रुटि)	1434	22461	15.66		
कुल योग	**1439**	**2253531899**	**54**		**सार्थक नहीं**

स्वतंत्रता के अंश - 1, 714 — 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 3.85, 3.00

- 2, 714 — 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 6.66, 4.62

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का विद्यार्थियों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता। विभिन्न संकायों के मध्य, विद्यालय प्रबंधन के मध्य एवं इन दोनों की अंत: क्रिया संबंधी ''एफ'' अनुपातों के मान क्रमश: 2.10, 0.21 एवं 0.14 आये है जो 0.05 स्तर पर न्यूनतम सारणी मान की अपेक्षा कम हैं।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विभिन्न संकायों, विद्यालय प्रबंधन एवं इन दोनों के मध्य अंत: क्रिया का विद्यार्थियों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। उपरोक्त परिणामों को ग्राफ क्रमांक -3 में प्रदर्शित किया गया है।

ग्राफ क्रमांक-3

विद्यार्थियों के कॅरियर निर्णय क्षमता पर विभिन्न संकाय एवं विद्यालय प्रबंधन के अंत: क्रियात्मक तुलनात्मक परिणामों का ग्राफीय निरूपण

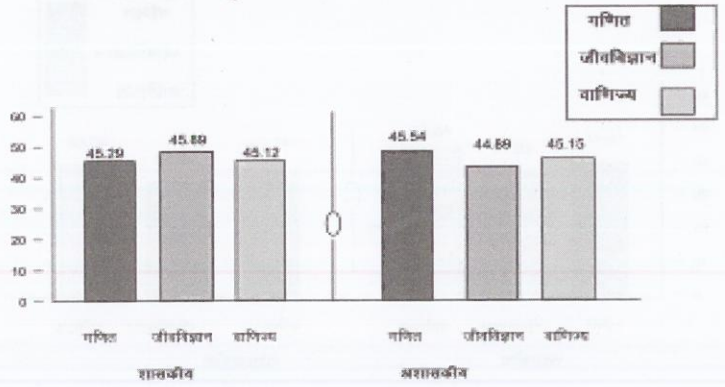

विद्यालय प्रबंधन एवं संकाय

परिणामों की व्याख्या :- विभिन्न संकायों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के कैरियर निर्णय क्षमता संबंधी परिणामों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न संकाय के एवं विद्यालय प्रबंधन के विद्यार्थियों की कैरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। तीनो समूहों के अत: क्रियात्मक ''एफ'' अनुपातों के मान सारणी मान की अपेक्षा कम है। वर्तमान समय में नए व्यवसाय उत्पन्न हो जाने के कारण कैरियर निर्णय एक चुनौती है। वर्तमान में सभी व्यवसाय उच्च तथा पुरुषों एवं महिलाओं दोनों के लिए है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय प्रबंधन के विद्यार्थियों को एक सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अत्याधुनिक संचार सुविधाओं के फलस्वरूप सभी सूचनाओं को प्राप्त करने में सक्षम है। अत: विद्यालय प्रबंधन का कैरियर निर्णय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष :-

- विभिन्न संकाय के छात्रों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के गणित, जीवविज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के छात्रों की कॅरियर निर्णय क्षमता समान होती है।
- विभिन्न संकाय के छात्राओं के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के गणित, जीवविज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के छात्राओं की कॅरियर निर्णय क्षमता समान होती है।
- विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रबंधन का उनकी कॅरियर निर्णय क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के गणित, जीवविज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की कॅरियर निर्णय क्षमता समान होती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

- Garret Henry âß- (1989) & Statistics in Psychology and âßducation Kalyani Publishers, New Delhi PP. 317- 339
- Jaily B. And Saily A (2007) "Style of career decision making", Australian journal of career development Vol. 16(1) PP. 20-28
- ओबेराय एस.के. (2007)- कॅरियर निर्देशन एवं कॅरियर सूचना, लॉयल बुक डिपो मेरठ पृ.सं.149-185

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन

डॉ. प्रीति शुक्ला *

शोध सार

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिये न्यादर्श के रूप में कक्षा 11 वीं के 240 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक लॉटरी विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि प्रयोग की गई। अनुसंधान उपकरण के रूप में डॉ. पी. श्रीनिवासन - शाब्दिक बुद्धि परीक्षण एवं स्वनिर्मित पूर्व उपलब्धि परीक्षण एवं पश्च परीक्षण का प्रयोग किया। सांख्यिकीय गणना के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी-परीक्षण/ क्रांतिक अनुपात एवं एनोवा परीक्षण द्वारा विश्लेषण किया गया एवं निष्कर्ष रूप में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं इनमें लिंग भिन्नताएं नहीं है।

प्रस्तावना :- शिक्षा गतिशील एवं जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने विभिन्न अनुभवों से अपने जीवन में कुछ न कुछ सीखता रहता है। वर्तमान समय में समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण में विज्ञान एवं तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज बढ़ते हुए वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रभाव ने व्यक्तियों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक बना दिया है। मनुष्य अर्थात् मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष विज्ञान के नित नये अविष्कारों से प्रभावित है एवं शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में पुरानी अवधारणाओं को आधुनिक संदर्भ में परिवर्तित कर एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है। शिक्षा के क्षेत्र में सैद्धांतिक ज्ञान से संबंधित समस्या हो या उनके प्रयोगात्मक शिक्षण के क्षेत्र में समस्या हो तकनीकी हमें सहायता प्रदान करती है। शिक्षण में अब श्रव्य-दृश्य साधनों जैसे-रेडियो, टेप-रिकॉर्डर, टेलीविजन, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., इलैक्ट्रॉनिक वीडियो टेप रिकॉर्डर तथा प्लेयर आदि अनेक साधनों के अविष्कार एवं उनके प्रयोग के कारण शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन आने लगे हैं। शिक्षक के बहुत से उत्तरदायित्व होते हैं। शिक्षक अपने उत्तरदायित्वों को परामर्शदाता, विषय शिक्षक, पाठ्यक्रम निर्माता, परीक्षक इत्यादि की भूमिका द्वारा पूरा करते हैं। इन भूमिकाओं को निभाने के लिए अनेक प्रकार के शिक्षण प्रतिमान का प्रयोग करते हैं। रसायन विज्ञान, विज्ञान की सबसे उपयोगी एवं महत्वपूर्ण शाखा है। आधुनिक समाज के विकास में नई प्रौद्योगिकी में रासायनिक ज्ञान को सफल एकीकरण के द्वारा जोड़ा गया है। विज्ञान के क्षेत्र में बहुत से अनुत्तरित प्रश्न हैं और इसी तरह मस्तिष्क की भाषा और समझ के साथ जलवायु में परिवर्तन जैसे बहुत सी अस्पष्टीकृत घटना भी शामिल है। रसायन विज्ञान इन प्रश्नों का उत्तर देने के साथ ही भविष्य के लिये स्थायी वातावरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रसायन विज्ञान विद्यार्थियों में उनके जीवन को समृद्ध और समाज के वैज्ञानिक सक्षम सदस्य बनने के लिये सहायता प्रदान करती है।

वर्तमान समय में वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित है, यह शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है। बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका पथप्रदर्शक की है। अधिगम परिस्थितियों में संबंधित प्रश्न शिक्षक प्रस्तुत करता है जो बालक को सोचने की पहल

***विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, श्रमधाम कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कैमोर , कटनी (म.प्र.)**

करता है तथा खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है। बालकों के विचारों को व्यवस्थित करवाता है तथा नवीन परिस्थितियों में उसके निष्कर्षों का प्रयोग करके उनका परीक्षण करता है। सुयोग्य शिक्षक के लिये केवल विषय को जानना एवं शिक्षण करना पर्याप्त नहीं है क्योंकि विषय में नित्य प्रतिदिन परिवर्तन होता रहा है। अत: शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों और युक्तियों का प्रयोग करके ही शिक्षण को प्रभावशाली बना सकेगा।

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान

सृजनात्मकता प्राय: समस्त प्राणियों में पायी जाती है। यह अवश्य है कि किसी व्यक्ति में यह कम तो किसी व्यक्ति में अधिक होती है। प्राय: यह धारणा है कि लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार, वैज्ञानिक, फिल्म अभिनेता आदि ही सृजनशील होते हैं। आज यह विचार मान्य नहीं हैं क्योंकि शिक्षक, क्लर्क, श्रमिक, माता, रसोइया, कृषक, औद्योगिक कर्मचारी आदि अपने-अपने क्षेत्रों में सृजनशील हो सकते हैं अर्थात् समस्त व्यवसायों अथवा क्षेत्रों में सृजनशील व्यक्ति होते हैं।

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान का विकास विलियम जे.जे. गोर्डन एवं उनके सहयोगियों ने किया। प्रारंभ में इसका प्रयोग औद्योगिक क्षेत्र में ''सृजनात्मक समूह'' विकसित करने में किया गया था। इस समूह में व्यक्ति एक साथ मिलकर कार्य करते हुए समस्या का समाधान करते थे एवं नवीन उत्पाद का निर्माण करते थे किंतु बाद में इसका प्रयोग विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सृजनात्मक गतिविधियों हेतु सफलतापूर्वक किया जाने लगा।

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान सामाजिक प्रणाली के सिद्धांत पर आधारित हैं। इसमें शिक्षक क्रमबद्ध रूप से शैक्षिक अनुभवों हेतु युक्तियों का प्रयोग करता है। छात्र शिक्षक के नियंत्रण व निर्देशन में उत्साहित होकर कार्य करते हैं। यह प्रतिमान विद्यार्थियों में आत्मबोध तथा आत्मचिंतन के गुणों के विकास पर ध्यान देता है। यह उस प्रक्रिया पर बल देता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी विशेष स्थिति को बनाते हैं और संगठित करते हैं। यदि व्यक्तियों को अपने वातावरण के साथ उत्पादक संबंध बनाने में तथा उनको अपने आपको योग्य व्यक्ति समझने में सहायता दी जावे तो अच्छे अंत: व्यक्तिगत संबंध बनेंगे और अधिक प्रभावशाली ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में कुशलता प्राप्त होगी।

राष्ट्रीय शोध कुमारी सुचेता (1990), मल्होत्रा एस.पी. (1990) एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध मारटिस, आनंदी (1990) के शोधकार्यों के अध्ययन एवं परिणामों से ज्ञात होता है कि विभिन्न विषयों में सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के द्वारा अध्यापन से उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव है एवं सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान द्वारा अध्यापन का, पारंपरिक शिक्षण विधि के द्वारा अध्यापन की तुलना में उपलब्धि में सार्थक प्रभाव है।

उपरोक्त विश्लेषण एवं अन्य शोध निष्कर्षों के फलस्वरूप शोधकर्ता ने समस्या का निम्नांकित रूप में निर्धारण किया -

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन''

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है कि जिसके द्वारा शिक्षक एवं छात्र एक सहभागी पर्यावरण का निर्माण करते हैं, जिनमें निश्चित मूल्यों एवं विश्वासों का सहारा लिया जाता है जो उनका वास्तविकता का दृष्टिकोण निर्धारित करते हैं। अत: शिक्षण कार्य को सफल व उपयोगी बनाने के लिये विभिन्न शिक्षण प्रतिमानों का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके।

रसायन विज्ञान शिक्षण में विभिन्न उद्देश्यों को लेकर विभिन्न शिक्षण विधियों एवं विधाओं में अलग-अलग शिक्षण नीति की आवश्यकता होती है। रसायन विज्ञान शिक्षण सीखने के संदर्भ, स्थितियों और परिस्थितियों के बाद ही शिक्षक तय करें कि उसे रसायन विषय या प्रकरण कौन सी विधि से पढ़ाना है और आवश्यकतानुसार किन साधनों या क्रियाओं को अपनाना है। इन विभिन्न शिक्षण विधियों एवं विधाओं को शिक्षण प्रतिमान के स्वरूप से ही समझा जा सकता है। सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को बिल्कुल वही विषयवस्तु पूरी तरह से समझा पाने में सक्षम होता है, जिसे सिखाना उसका उद्देश्य है। सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के द्वारा विद्यार्थी व्यक्तिगत एवं समूह में कार्य करके समस्या का समाधान करते हैं एवं नवीन तथ्यों का उत्पाद करते हैं। इस प्रकार उनमें सृजनशीलता का विकास होता है। ये प्रतिमान विद्यार्थियों के ज्ञान के विकास में सहायक होते हैं।

सिंह, कुशल पाल (1988) ने ''विज्ञान और कला समूहों के बीच सृजनात्मक, उपलब्धि के साधन, प्रेरणा, व्यक्तित्व की आवश्यकता एवं सुरक्षा-असुरक्षा के अंतर के महत्व'' का परीक्षण करने के लिये शोध कार्य किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि विज्ञान समूह के विद्यार्थियों ने सृजनात्मक, उपलब्धि, प्रेरणा परीक्षण, व्यक्तित्व सूची में कला समूह के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त किए। **मल्होत्रा, एस.पी. (1990)** ने ''भाषा में सृजनात्मकता के विकास में सिनेटिक प्रतिमान के प्रभाव का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि सिनेटिक प्रतिमान के द्वारा अध्यापन से भाषा में धाराप्रवाहिता, लोचकता, नवीनता, प्रोत्साहित आदि कौशल में वृद्धि हुई, साथ ही भाषा एवं विद्यार्थी के बुद्धि स्तर में धनात्मक सहसंबंध में वृद्धि हुई। **जेकेलिन, ग्रेस बारेकर (2012)** ने ''विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रतिमानों एवं पारंपरिक शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि विभिन्न प्रतिमानों के द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पारंपरिक शिक्षण विधि की अपेक्षा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं :-

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की रसायन विषय में उपलब्धि में सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन करना।
2. सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के माध्यम से अध्यापन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रसायन विषय में उपलब्धि में अंतर का अध्ययन करना।

चर :-

स्वतंत्र चर :- 1. सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान
2. पारंपरिक शिक्षण विधि से अध्ययन

परतंत्र चर :- रसायन विषय में उपलब्धि

नियंत्रित चर :- उच्चतर माध्यमिक कक्षा के छात्र/छात्रायें/विद्यार्थी

परिकल्पना

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के माध्यम से अध्यापन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रसायन विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

न्यादर्श

विद्यालय	शिक्षण प्रतिमान एवं विधि	छात्र	छात्राएँ	विद्यार्थी
शासकीय विद्यालय	सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान	30	30	60
	पारंपरिक शिक्षण विधि	30	30	60
अशासकीय विद्यालय	सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान	30	30	60
	पारंपरिक शिक्षण विधि	30	30	60
	कुल	**120**	**120**	**240**

उपकरण

(अ) मानकीकृत परीक्षण

1. शाब्दिक बुद्धि परीक्षण – डॉ. पी. श्रीनिवासन
   विद्यार्थियों की बुद्धि स्तर के मापन हेतु।

(ब) स्वनिर्मित उपकरण:-

1. पूर्व उपलब्धि परीक्षण
2. पश्च उपलब्धि परीक्षण

विधि – प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की भूमिका का अध्ययन करने के लिये जो न्यादर्श लिया गया था, उस पर शोध परीक्षणों के प्रशासन का फलांकन के पश्चात् प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण क्रमवार किया गया है।

सारणी क्रमांक-1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की प्रभावशीलता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

क्र.	परीक्षण	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक मान	'पी' अनुपात
1.	छात्र	पूर्व	60	18.18	6.53	13.87	< 0.01
		पश्च	60	33.86	5.84		
2.	छात्रा	पूर्व	60	16.90	4.89	15.78	< 0.01
		पश्च	60	32.91	6.16		
3.	विद्यार्थी	पूर्व	120	17.54	5.80	20.77	< 0.01
		पश्च	120	33.39	6.02		

स्वतंत्रता के अंश 118/238 के लिये

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान – 1.98/1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान – 2.62/2.00

उपरोक्त सारणी में छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों के सम्मिलित समूह के सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के तुलनात्मक परिणाम प्रस्तुत किये गये है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि तीनों समूहों के क्रांतिक मान क्रमशः 13.87, 15.78, 20.77 है। ये मान सांख्यिकीय दृष्टिकोण से निर्धारित किये गये न्यूनतम मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.98 से अधिक है।

सारणी में प्रदर्शित तीनों समूहों के पश्च परीक्षणों के मध्यमान पूर्व परीक्षणों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के द्वारा अध्यापन से रसायन शास्त्र विषय में उपलब्धि पर सार्थक अंतर है। (संदर्भ आरेख क्रमांक-1)

आरेख क्रमांक - 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान की प्रभावशीलता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

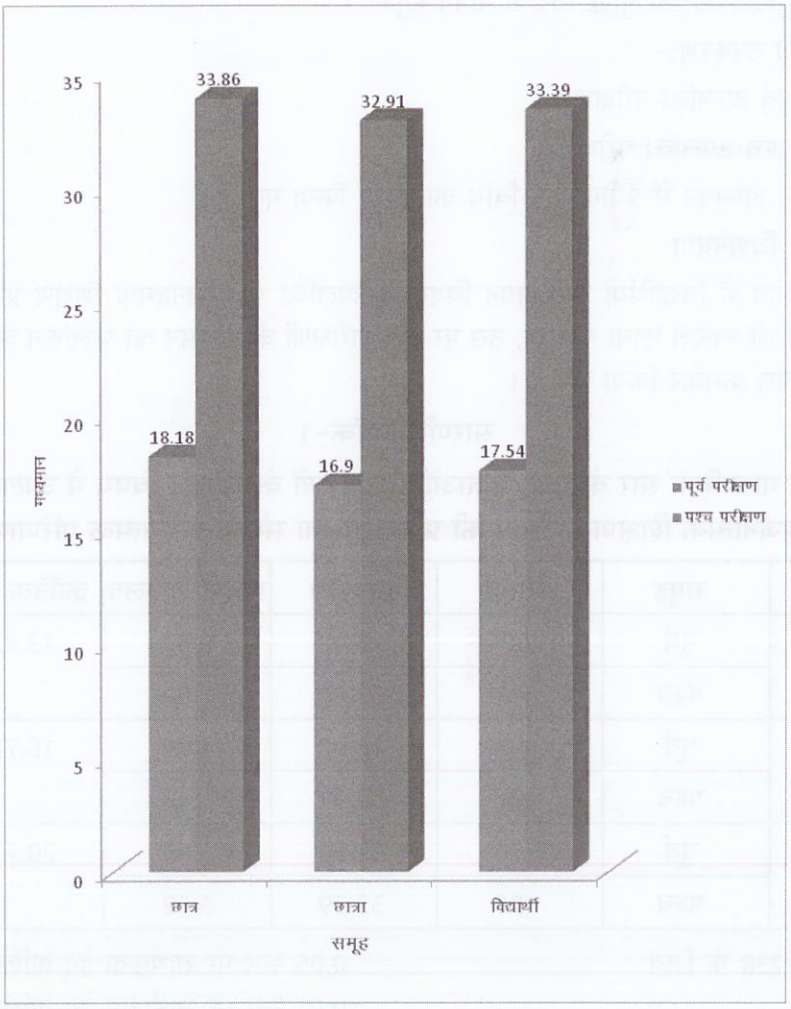

सारणी क्रमांक-2

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान से उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के रसायन विषय में उपलब्धि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

क्र.	परीक्षण	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक मान	'पी' अनुपात
1.	पूर्व	छात्र	60	18.18	6.53	1.21	> 0.05
		छात्रा	60	16.90	4.89		
2.	पश्च	छात्र	60	33.86	5.84	0.291	> 0.05
		छात्रा	60	32.91	6.16		

स्वतंत्रता के अंश 118 के लिये

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 2.62

उपरोक्त सारणी में छात्र एवं छात्राओं के सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के तुलनात्मक परिणाम प्रस्तुत किये गये है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि पूर्व एवं पश्च परीक्षण के क्रांतिक मान क्रमशः 1.21 एवं 0.291 है। ये मान सांख्यिकीय दृष्टिकोण से निर्धारित किये गये न्यूनतम मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.98 से कम है।

इससे स्पष्ट होता है कि पूर्व एव पश्च परीक्षण में छात्र एवं छात्राओं की रसायन विषय में उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात इनकी उपलब्धि लिंग भिन्नतायें नहीं है। (सारणी क्रमांक-2)

आरेख क्रमांक - 2

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान से उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के रसायन विषय में उपलब्धि के प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

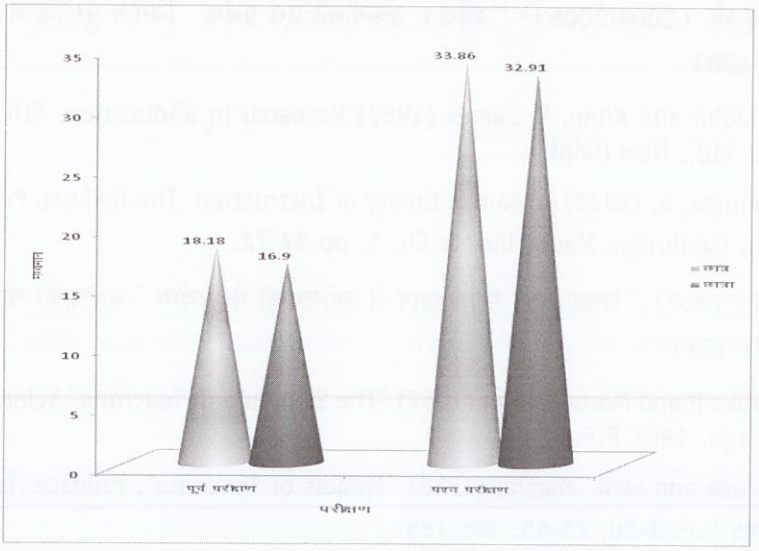

प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के रसायन विषय में उपलब्धि पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के प्रभाव संबंधी परिणामों से स्पष्ट होता है कि छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों के समूहों में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमश: 13.87, 15.78, 20.77 है (संदर्भ सारणी क्रमांक 1, आरेख क्रमांक 1)। ये मान सांख्यिकी दृष्टिकोण से निर्धारित किये गये न्यूनतम मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.98 से अधिक हैं। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के माध्यम से जो शिक्षण कार्य किया जाता है उसमें विद्यार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता की वृद्धि होती है। विद्यार्थी प्रत्येक कार्य को स्वयं करते हैं जिससे उनके सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है एवं विषय वस्तु स्पष्ट एवं सरलता से समझ में आती है। पूर्व परीक्षण की तुलना में पश्च परीक्षणों में अधिक प्राप्तांक सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के रसायन विषय में उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित कर रहे है।

पूर्व एवं वर्तमान शोध के आधार पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान का उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसमें भी कालजन, विषयजन्य परिवर्तन एवं देश-विदेश की सीमा प्रभावित नहीं करती है निश्चित रूप से पारंपरिक शिक्षण विधि के स्थान पर सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान से अध्यापन कार्य किया जाता है तो विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होता है एवं किसी भी समस्या के समाधान करने की योग्यता में वृद्धि होती हैं। शिक्षण कार्य शिक्षक छात्र सहभागिता से सम्पन्न होने के कारण विद्यार्थियों में अध्यापन शैली में रूचि उत्पन्न होती है। रूचिपूर्ण एवं सक्रिय रूप से अध्ययन करने के फलस्वरूप विद्यार्थियों की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन, सामाजिक समस्याओं की खोज, समस्या समाधान क्षमता का विकास होता है।

निष्कर्ष –

सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान द्वारा अध्यापन से छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की रसायन विषय की उपलब्धि में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है पश्च परीक्षण के प्राप्तांक पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों की अपेक्षा अधिक है। सृजनात्मक शिक्षण प्रतिमान के द्वारा अध्यापन से रसायन विषय में उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं इनमें लिंग भिन्नतायें नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ –

- अग्रवाल जे.सी. (2004/2005)- ''शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2- पृ.क्र. 1-10, 386-400।
- Best. W. John and Khan, V. James (1989) Research in àßducation, 6th àßd, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi.
- Bruner Jerome, S. (1972) Toward A theory of Instruction, The Belknap Press of Harvard University Press, Cambridge Massachusets Ch. 3, pp 37-72.
- गैरेट हेनरी (1989) ''शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'' कल्याणी पब्लिषर्स ग्यारहवाँ संस्करण पृ.क्र. 120-125।
- Joyce, Bruke R and Marootunion (1967) "The Structure of Teaching" Science ResearchAssciation Inc. Chicago. 1967 P.P.1-5
- Joyce, Bruce and weil, Marsha (1985) "Models of Teaching", Printice Hall India Limited, New Delhi 1985 P.P. 1-20, 25-45, 165-185

- कपिल एच.के. (2006) ''अनुसंधान विधियाँ'' एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा पृ.क्र. 55-65।
- कथूरिया रामदेव प्रसाद डॉ. (2014-15) ''सूक्ष्म अध्यापन एवं शिक्षण प्रतिमान'' अग्रवाल पब्लिकेषन्स, दषवाँ संस्करण पृ.क्र. 239-243।
- कोठारी सी.आर. (2004) ''रिसर्च मैथेडोलॉजी'' मैथड्स एंड टेक्नीस'' न्यू एच. पब्लिकेषन्स, न्यू दिल्ली, द्वितीय संस्करण पृ.क्र. 1-10।
- Malhotra, S.P. (1990) Effect of Synetics Model of Teaching on the Development of Language Creativity in Hindi, Fifth Survey of Educational Research, Section 24 : 441-
- Martis Anandi (1990) Developing Making The Strange Familiar (MSF) Competencies Through Synetics Model of Teaching in Graduate Student-Teacher and the Study of Their Reaction and Reactions of Pupils, Fifth Survey of Education Research, Section 24: 441-2.
- Rajput, J.S. (1998) Curriculum Frame Work for Quality Teacher Education, New Delhi : NCTE : 34-46.
- Sharma, Jagdish (2006) Models of Science Teaching, Raj Publishing House, Jaipur.

Journals and Surveys :

- Ausubel, D.P. (1977) The Faliciation of Meaningful Verbal Learining in the Classroom. Education Psychologist pp 167-168 Quoted by Encylopaedia of Educational Research fifth edition, vol.-2, 1992.
- Dr. Bilal Adel Al-khatib 2012, The Effect of Using Brainstorming Stretegy in Developing Creative Problem Solving Skills among Femal Students in Princess Alia University College. Vol 2 No. 10 October 2012, www.aijcrnet.com.
- Likhia, K.S. (1996, b) Effectiveness of Synectics Model for Developing Creativity, Journal of Education and Psychology, Vallabha Vidyanagar, Sardar Patel University, 54(3): 19z-23.
- Passi, B.K. Singh L.C. and Sawanwal, D.N. (1992), Effecvtiveness of strategy of training in models of teaching. An experimental study. Indian Educational Review Vol. 24(1) - 36-88.
- Rolheiser Bennett, Noreen Carol (1986) Four Models of Teaching : A Meta-Analysis of Student Outcomes, Dissertation Abstracts International 47(11) : 3866A.
- Singh Ajit (1990) Training of student teachers in the models of teaching : Relative effectivemness of different training strategies. Indian Educational Review. Vol. 25(4). 27-41.
- Siddiqui, Mijibut Hassan (1991) Models of Teaching-Strategies for Making Effective Teaching, Journal of Indian Education, 17(1) : 26-9.

विभिन्न संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

श्रीमति सुधा पासी *

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य विभिन्न संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में सर्वप्रथम जबलपुर शहर के अशासकीय बी.एड. महाविद्यालय कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के कुल 90 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया जिसमें प्रत्येक संकाय के 15 पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों तथा 15 महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर डॉ. (श्रीमति) निवेदिता पॉल द्वारा निर्मित मानव अधिकार जागरूकता मापनी का सामूहिक रूप से प्रशासन किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि विभिन्न संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।

प्रस्तावना :- आज के बदलते परिवेश में मानवाधिकारों की गूंज जगह-जगह सुनाई पड़ती है, लेकिन मानवाधिकार कोई नवीन प्रत्यय नहीं है। इसकी जड़े अतीत की गहराईयों में छिपी हुई है। भारत प्राचीन काल से ही अधिकारों का समर्थक रहा है। इतिहास पर नजर डालने पर हम पायेंगे कि प्राचीनकाल में किसी न किसी रूप में मानवाधिकार से संबंधित धारणायें और विचार पाये जाते थे, अत: ये अधिकार मानव व्यक्तित्व के अटूट अंग हैं। प्रत्येक राष्ट्र का कर्त्तव्य है कि अपने नागरिकों को अच्छी शिक्षा व सुविधायें मुहैया करवायें ताकि देश के नागरिक अपने अधिकार व कर्त्तव्य को समझ सकें। मानवाधिकार शिक्षा का महत्वपूर्ण तत्व मानवीय मूल्यों की स्थापना करना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान व आत्म गौरव की भावना का विकास करना होता है।

आधुनिक समय में लोकतांत्रिक अवधारणा पूरे विश्व में लोकप्रिय है, अपने संविधान की समझ तथा मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता प्रत्येक बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए आवश्यक है, क्योंकि आज के विद्यार्थी कल के कुशल नागरिक हैं उन्हें शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी, नेता आदि की भूमिका निभानी होती है यदि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगे तो अपने बच्चों एवं परिवार के सदस्यों को मानवाधिकारों की जानकारी दे पायेंगे, यदि वे जागरूक नही होंगे तो उनकी संततियों की जागरूकता की बात सोची भी नही जा सकती है।

वर्तमान समय में जहां एक तरफ समाज में ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में बहुआयामी प्रगति की है, वहां इसका दूसरा दुखद पहलू यह भी है कि नैतिक एवं शाश्वत मूल्यों में निरतंर गिरावट आ रही है और मानवाधिकारों का निरन्तर हनन हो रहा है किसी भी क्षेत्र के विकास का संबंध केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं रहता है बल्कि इसका संबंध वहां के नागरिकों के द्वारा अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की जागरूकता से भी होता है, यही कारण है कि वर्तमान दशक में मानवाधिकार की शिक्षा की आवश्यक्ता महसूस की जाने लगी है क्योंकि मानवाधिकारों की शिक्षा ही लोगों को मौलिक आवश्यक्ताओं एवं मानव अधिकारों के विषय में जागरूक बनाती हैं।

* सहायक प्राध्यापक, डॉ. राधाकृष्णन् कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पाटन रोड, करमेता, जबलपुर

प्रस्तुत शोधकार्य को दिशा प्रदान करने में निम्नांकित पूर्व अनुसंधानों का विशेष योगदान रहा है

शारदा, डी. एवं अमृथावली, के. (2006) ने स्नातक स्तर के विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों में मानवाधिकारों के ज्ञान, मनोवृत्ति एवं उनके व्यावहारिक उपयोग का अध्ययन किया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि सामान्यत: पारिवारिक साक्षरता, पारिवारिक आय एवं व्यवसाय का मानव अधिकारों के ज्ञान एवं उनके प्रति मनोवृत्ति से कोई संबंध नही है परंतु पारिवारिक साक्षरता एवं मानवाधिकारों के व्यावहारिक उपयोग में संबंध पाया गया।

पॉल, डॉ. निवेदिता तथा मुखी, डॉ. ईश्वर (2009) ने मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का सामाजिक आर्थिक स्तर पर शोध कार्य किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार औसत, सामाजिक, आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुई।

चौकसे, श्रीमति मुक्ता (2009) ने उच्चत्तर माध्यमिक शालाओं के विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं मं मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार उच्चतर माध्यमिक शालाओं के विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नहीं है।

मागरे डॉ. सुनीता (2011) ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थी सामान्यत: मानवाधिकारों से अवगत है, परन्तु मानवाधिकारों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे मानवाधिकार और महिला विकास, मानवाधिकार और बाल विकास तथा मानवाधिकार एवं सामाजिक रूप से अपेक्षित वर्ग के विकास से परिचित नहीं हैं।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि देश व समाज के समग्र विकास के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था की सुचारूता के लिए विद्यार्थियों में इन अधिकारों के प्रति जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए शिक्षण संस्थाओं में नियमित शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न की जावे ताकि वे अपने अधिकारों को समझ सके और अपना तथा देश का उचित विकास कर सके।

उद्देश्य:- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नांकित उद्देश्य लिये गए हैं -

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (पुरुष/महिला/पुरुष+महिला) की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना:-

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (पुरुष/महिला/पुरुष+महिला) की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।
2. विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।

चर :- प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित चर लिये गये हैं -

स्वतंत्र चर - 1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थी

2. संकाय - (अ) विज्ञान (ब) कला (स) वाणिज्य

परतंत्र चर - जागरूकता - मानव अधिकारों के प्रति

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोधकार्य हेतु न्यादर्श का चयन निम्नानुसार किया गया है -

न्यादर्श तालिका

समूह	संकाय	पुरुष	महिला	योग
प्रशिक्षणार्थियों	विज्ञान	15	15	30
	कला	15	15	30
	वाणिज्य	15	15	30
	योग	**45**	**45**	**90**

उपकरण :- मानव अधिकार जागरूकता मापनी - डॉ. (श्रीमती) निवेदिता पॉल।

विधि :- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है एवं आंकड़ो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणामों का विश्लेषण:-

तालिका क्रमांक 1

विज्ञान तथा कला संकाय के पुरुष/महिला/पुरुष + महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता संबंधी परिणाम -

लिंग	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थकता
पुरुष	विज्ञान	15	80.93	7.55	0.96	सार्थक नहीं
	कला	15	83.26	5.19		
महिला	विज्ञान	15	79.06	8.37	0.82	सार्थक नहीं
	कला	15	81.66	8.55		
पुरुष+महिला	विज्ञान	30	79.99	8.03	1.26	सार्थक नहीं
	कला	30	82.46	7.12		

स्वतंत्रता का अंश-28, 28, 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.05, 2.00

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.76, 2.66

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि विज्ञान तथा कला संकाय के पुरुष/महिला/पुरुषमहिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात 1.26 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक नहीं है।

तालिका क्रमांक 2

विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के पुरुष/महिला/पुरुष + महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता संबंधी परिणाम

लिंग	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थकता
पुरुष	विज्ञान	15	80.93	7.55	0.78	सार्थक नहीं
	वणिज्य	15	78.73	7.56		
महिला	विज्ञान	15	79.06	8.37	0.02	सार्थक नहीं
	वणिज्य	15	79.00	7.79		
पुरुष + महिला	विज्ञान	30	79.99	8.03	0.56	सार्थक नहीं
	वणिज्य	30	78.86	7.72		

स्वतंत्रता का अंश 28, 28, 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.05, 2.00
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.76, 2.66

उपरोक्त तालिका क्रमांक 02 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के पुरुष/महिला/पुरुषमहिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात 0.56 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक नही है।

तालिका क्रमांक 3

कला तथा वाणिज्य संकाय के पुरुष/महिला/पुरुष + महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता संबंधी परिणाम

लिंग	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थकता
पुरुष	कला	15	83.26	5.19	1.87	सार्थक नहीं
	वणिज्य	15	78.73	7.56		
महिला	कला	15	81.66	8.55	0.87	सार्थक नहीं
	वणिज्य	15	79.00	7.79		
पुरुष + महिला	कला	30	82.46	7.12	1.87	सार्थक नहीं
	वणिज्य	30	78.86	7.12		

स्वतंत्रता के अंश 28, 28, 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.05, 2.00
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.76, 2.66

उपरोक्त तालिका क्रमांक 03 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि कला तथा वाणिज्य संकाय के पुरुष/महिला/पुरुषमहिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात 1.87 है, जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक नही है।

परिणामों की व्याख्या :-

उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट हो जाता हैं कि विज्ञान, कला और वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पुरुष/महिला/पुरुषमहिला की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नहीं पाया गया। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थी देश के भावी शिक्षक हैं, उनमें मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार के परिणाम मागरे, डॉ. सुनीता (2011) के अध्ययन से भी प्राप्त हुये, प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात होता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थी सामान्यत: मानवाधिकारों से अवगत हैं, परंतु मानवाधिकारों के विभिन्न क्षेत्रों जैसे - ''मानवाधिकार और महिला विकास, मानवाधिकार ओर बाल विकास तथा मानवाधिकार एवं सामाजिक रूप से अपेक्षित वर्ग के विकास के प्रति जागरूक नही हैं, जबकि कला एवं विज्ञान संकाय के पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थी की जागरूकता में कोई अंतर नहीं है। चौकसे, श्रीमति मुक्ता (2009) ने उच्चत्तर माध्यमिक शालाओं के विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राओं में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकाय के छात्र-छात्राओं में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकाय के छात्र-छात्राओं में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।

निष्कर्ष :- प्रस्तुत शोधकार्य के निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये -

- बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों (पुरुष/महिला/पुरुषमहिला) की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।
- विज्ञान, कला तथा वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में कोई अंतर नही है।

संदर्भ :-

- अग्रवाल, डॉ. ए.ओ. (2004) :- ''अर्न्तराष्ट्रीय विधि एवं मानव अधिकार'' सातवां संस्करण, सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहबाद, पृष्ठ-62
- कौशिक, आशा (2004) :- मानवाधिकार और राज्य बदलते संदर्भ, उभरते आयाम, प्रथम संस्करण, प्रेमचंद, बाकलीवाल, अविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, पृष्ठ-192-193
- कपिल, डॉ. एच. के. (2010) :- अनुसंधान विधियां, चौदहवा संस्करण, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पृष्ठ-53
- छाबड़ा, प्रेम एवं पारेख, प्रेमलता:- मानवाधिकार शिक्षा क्यों और कैसे, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी-2004, वर्ष - 22, अंक-3, एन.सी.ई.आर.ही. पृष्ठ-19

शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमति समता तिवारी *

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है, शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में 300 महिलाओं को लिया गया है 300 महिलाओं मे से 150 शिक्षित और 150 आशिक्षित महिलाओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में उनके द्वारा अर्जित अंकों के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति अशिक्षित महिलाओं की अभिवृत्ति की तुलना से उत्तम है।

प्रस्तावना:- शिक्षित नारी समूह ही परिवार व समाज को सुसंस्कृत बनाती है, इसी कारण मनु ने कहा है कि -

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां ईश्वर निवास करते हैं। पूजा का अर्थ रोरी अक्षत चढ़ाने से नही है बल्कि इसका अर्थ यह है कि जहां नारी को सम्मान दिया जाता है उसकी शिक्षा की उचित व्यवस्था की जाती है और उसको समाज के निर्माण में पुरूषों के समान ही स्वतंत्रता प्रदान की जाती है वहां देवता निवास करते हैं। भारत के बहुमुखी विकास हेतु स्त्रियों को गौरव प्रदान करना चाहिये और स्त्री शिक्षा का अधिक से अधिक प्रसार करने का भी प्रयास किया जाना चाहिये।

महात्मा गांधी का कथन यह था कि - ''इस धरती पर जो कुछ भी पवित्र है, धार्मिक है, महिलायें उसकी विषेष संरक्षिकायें हैं।''

रमण लेखक के अनुसार - ''पति के लिये चरित्र, संतान के लिये ममता समाज के लिये शील, विश्व के लिये दया और जीव मात्र के लिये करूणा संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है।''

इस कथन के संबंध में हम यह कह सकते हैं कि स्त्री ही बालक के जीवन में मूल्यों का रोपण कर बालक के जीवन को मूल्यवान बना देती है, किन्तु समय परिवर्तन के साथ-साथ महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया है। समय और युग की मांग का असर आज की पीढ़ियों में साफ झलकता है। आज की पीढ़ी अत्यंत सजग है, अपने कैरियर के प्रति वह बहुत सावधान है। वह समस्त सुख-सुविधाओं से युक्त कैरियर को अपनाना चाहती है, कैरियर की इस उड़ान में न तो आज युवा पीढ़ी और महिलायें नीति और सिध्दातों के मजबूत घेरों में खुद को सीमित नहीं रखना चाहती है। अतिशीघ्र सुविधा से भरे जीवन पर आगे बढ़ना उनका लक्ष्य है।

***सहायक प्राध्यापक, डॉ. राधाकृष्णन् कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पाटन रोड, करमेता, जबलपुर**

मूल्यहीनता के धरातल पर खड़ी पीढ़ी को परिचय की हवा तथा भौतिकता की चकाचौंध रिझा रही है और वह आंखे बंद किये उसके पीछे भाग रहा है, इस लालुपता के वशीभूत होकर महिलायें दिग्भ्रमित हो रही हैं, उनमें भटकाव बढ़ रहा है और इसके लिये मीडिया भी बहुत हद तक उत्तरदायी है।

केन्द्रीय मंत्री बाबू जगजीव राम ने कहा था - ''एक कन्या को पढ़ा देने से आने वाली पीढ़ी सुशिक्षित होगी।''

अर्थात् एक बच्चा सबसे पहले अपनी मां से परिचित होता है और उसके व्यक्तित्व पर उसकी मां का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है और यदि मां शिक्षित है तो बच्चों की स्वाभाविकता रूचि शिक्षा के प्रति होगी।

उपर्युक्त सभी बातों के कारण शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई है कि बदलते हुये परिवेश में महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति किस प्रकार की है। शिक्षित एवं अशिक्षित महिलायें पारिवारिक मूल्यों के प्रति क्या नजरिया रखती है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व:- समाज के निर्माण एवं व्यक्ति के उत्थान में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है आज वर्तमान परिस्थितियों का अवलोकन किया जाय तो हमे आभास होगा कि मानव मूल्यों में दिन-प्रतिदिन परिवर्तन आ रहा है जब हम इन परिवर्तनों के रूप और दिशा पर दृष्टिपात करते हैं तो हमारे समक्ष बहुत ही विपरीत परिस्थितियां आ खड़ी होती है। आज मानव मूल्य नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो रहे हैं और उनमें दिन-प्रतिदिन गिरावट आ रही है जिस कारण जन-साधारण की जीवन के नैतिक सामाजिक पारिवारिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति आस्था कम हो रही है।

आज हम शिक्षितों की फौज तो तैयार करते जा रहे हैं पर एक अच्छा नागरिक देश को नही दे पा रहे हैं नतीजन मूल्यों में गिरावट आ रही है, अनैतिकता अपराध और अनाचर बढ़ गया है रिश्तों में वह सोंधापन और मिठास नदारत हो चुकी है जिसके लिये हमारा देष जाना जाता है हम भारतीय संस्कृति और सभ्यता की जंग से दूर हटते जा रहे हैं।

मूल्य व्यक्तियों की रूचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्तियों की ओर इंगित करते हैं इनके महत्व की विवेचना करते हुये सर्वपल्ली **डॉ. राधाकृष्णन्** ने अपने विचार प्रकट करते हुआ था -

''शिक्षा सूचना प्रदान करने तथा कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नही है इसका काम शिक्षित व्यक्ति को मूल्यों का विचार प्रदान करना है। वैज्ञानिक तथा तकनीकि व्यक्ति भी नागरिक है अत: वे जिस समुदाय में रह रहे हैं उसके प्रति भी उनका उत्तरदायित्व है।''

बालक अधिकांश समय अपने परिवार में अपनी मां के साथ व्यतीत करता है जिसमें उसकी अहम भूमिका होती है। वर्तमान परिवेश में महिलाओं पर घर एवं बाहर की दोहरी जिम्मेदारी है अत: ऐसी शिक्षित महिलायें अपने पारिवारिक मूल्यों के प्रति सजग हैं या नही ? जानना आवश्यक प्रतीत होता है।

इसलिये यह एक जिम्मेदारी है, कि हम बालकों को जो कल के भावी नागरिक हैं उन्हें दिशा बोध कराते रहे और यह कार्य केवल मूल्य शिक्षा द्वारा ही संभव है। परिवार बालक की पहली पाठशाला है अत: मूल्य शिक्षा की शुरूआत शैशवास्था से ही की जानी चाहिये। जिसमें महिलायें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगी। अत: शिक्षा इन मूल्यों के निर्माण में योगदान देती है।

अत: व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास ही शिक्षा है। अपनी अस्मिता की वास्तविक पहचान ही शिक्षा द्वारा होती है। मूल्यों की शिक्षा भी उद्देश्यपूर्ण है जो वर्तमान की महती आवश्यक्ता है।

पारिवारिक मूल्य:- परिवार समाज की मूल इकाई है और एक सामाजिक समूह की भांति कार्य करता है।

''कोई भी लक्ष्य तब 'मूल्य' बन जाता है, जब उसमें कोई रूचि लेता है'' इस प्रकार परिवार के रूचिपूर्ण लक्ष्यों को ही पारिवारिक मूल्यों की संज्ञा दी जाती है। अभिवृत्तियां जन्मजात भी होती हैं और अर्जित भी अर्थात् बालक को अभिवृत्तियां अपनी आनुवांशिक कारण से प्राप्त होती हैं, किन्तु परिस्थितिवश उनमें परिवर्तन आ जाता है और किशोरावस्था में इन अभिवृत्तियों में स्थायित्व आ जाता है। इन अभिवृत्तियों की मदद से ही व्यक्ति के विचारों में स्थायित्व आता है।

शोध कार्य के उद्देश्य:-

1. शिक्षित महिलाओं एवं अशिक्षित महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शहरी शिक्षित एवं ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शहरी अशिक्षित एवं ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना :-

1. शिक्षित महिलाओं एवं अशिक्षित महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही होता है।
2. शहरी शिक्षित एवं ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही होता है।
3. शहरी अशिक्षित एवं ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर होता है।

चर:-

स्वतंत्र चर - अभिवृत्ति

आश्रित चर - महिलायें

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन में 300 महिलाओं को लिया है। इन 300 महिलाओं में से 150 शिक्षित 150 अशिक्षित महिलाओं को लिया गया है।

उपकरण:- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

तालिका क्रमांक 1

शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का अध्ययन

समूह	महिलाओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	प्रमाणिक त्रुटि
शिक्षित महिलायें	150	2.8	0.73	0.11	00.89
अशिक्षित महिलायें	150	2.81	0.93		

स्वतंत्रता की कोटी - 298

0.01 स्तर पर न्यूनतम - 2.59

0.05 स्तर पर न्यूनतम मान - 1.97

परिकल्पना के अनुसार शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 2.8 प्राप्त हुआ है एवं अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 2.81 प्राप्त हुआ है एवं उनकी पारिवारिक मूल्यों संबंधी अभिवृत्ति का क्रांतिक अनुपात 0.11 प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक 2

शहरी शिक्षित एवं ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का अध्ययन

समूह	महिलाओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	प्रमाणिक त्रुटि
शहरी शिक्षित महिलायें	150	9.87	1.61	7.8	0.14
ग्रामीण शिक्षित महिलायें	150	8.85	2.01		

स्वतंत्रता की कोटी - 298

0.01 स्तर पर न्यूनतम - 2.59

0.05 स्तर पर न्यूनतम मान - 1.97

परिकल्पना के अनुसार शहरी शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 9.87 प्राप्त हुआ है एवं ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 8.85 प्राप्त हुआ है एवं उनकी पारिवारिक मूल्यों संबंधी अभिवृत्ति का क्रांतिक अनुपात 7.8 प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक 3

शहरी अशिक्षित एवं ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का अध्ययन

समूह	महिलाओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	प्रमाणिक त्रुटि
शहरी अशिक्षित महिलायें	150	5.8	1.5	3.02	0.92
ग्रामीण अशिक्षित महिलायें	150	4.5	1.83		

स्वतंत्रता की कोटी - 298 0.01 स्तर पर न्यूनतम - 2.59

0.05 स्तर पर न्यूनतम मान - 1.97

परिकल्पना के अनुसार शहरी अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 5.8 प्राप्त हुआ है एवं ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों में आने वाली अभिवृत्ति का मध्यमान 4.5 प्राप्त हुआ है एवं उनकी पारिवारिक मूल्यों संबंधी अभिवृत्ति का क्रांतिक अनुपात 3.02 प्राप्त हुआ।

निष्कर्ष :-

1. शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में उनके द्वारा अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति अशिक्षित महिलाओं की अभिवृत्ति की तुलना से उत्तम है।
2. शहरी शिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में उनके द्वारा अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षित महिलाओं की अभिवृत्ति की तुलना से उत्तम है।
3. शहरी अशिक्षित महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में उनके द्वारा अर्जित अंको के माध्य से ज्ञात होता है कि उनकी अभिवृत्ति ग्रामीण अशिक्षित महिलाओं की अभिवृत्ति की तुलना से उत्तम है।

संदर्भ ग्रन्थ -

- सुखिया, एस.पी. :- शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा - 1970
- शर्मा, आर.ए. :- फजमेंटल ऑफ एजुकेशन रिसर्च लायल बुक डिपो, मेरठ - 1999
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. :- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा - ग्यारहवां संस्करण - 2009
- राय, पारसनाथ :- अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, त्रयोदश संस्करण - 2004-10
- कपिल, एच.के. :- अनुसंधान विधिया हरप्रसाद, आगरा - 1980

शिक्षा में ई-शासन

(अभिगमन तथा सहभागिता की विवेचना)

श्रीमती स्वाति गर्ग *

सारांश

ई-शासन से अभिप्राय सरकार द्वारा सूचनाओं एवं सेवाओं को जनता द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वैद्युत साधनों का प्रयोग कर जनसाधारण को उपलब्ध कराये जाने से है इस प्रकार के सूचना प्रदाता साधन सूचना प्रौद्योगिकी के रूप में जानी जाती है शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके विभागीय कर्मचारी, शिक्षकों, विद्यार्थियों आदि को जनता एवं अन्य अभिकरणों को सूचनाओं के प्रसार हेतु प्रक्रिया को दक्ष, त्वरित, पारदर्शी बनाने तथा प्रशासनिक गतिविधियों के निष्पादन में सुविधा रहती है भारत सरकार ने निकट भविष्य में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महाशक्ति बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है। देश में अधिकांश विदेशी कम्पनियों के लिये सस्ती प्रोग्रामिंग किये जाने हेतु कार्यशालाओं के अस्तित्व से परिवर्तन आरंभ हो चुके हैं। भारत सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक विभाग की स्थापना 1970 में की और 1977 में नेशनल इनफॉरमेटिव सेंटर की स्थापना 'ई-शासन' की दिशा में पहला कदम था। वर्तमान में मिशन मोड परियोजना द्वारा यह कार्य केन्द्रीय तथा राज्य स्तर पर किया जा रहा है जिसमें शिक्षा व्यवस्था को ई-शासन द्वारा उन्नत बनाने पर जोर दिया जा रहा है।

ई-शासन का लक्ष्य है, कि किसी भी देश के प्रबंधन के राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक पहलुओं की आम जनता तक पहुँच अधिक सरल हो, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से उन्हें शासन की सुविधायें अधिक दक्ष, अधिक तेजी तथा पारदर्शिता से प्रदान करना, ई-शासन के द्वारा शासन की प्रभावशीलता व निष्पादन देख सकते हैं। (यूनेस्को)

भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की स्थापना 1970 में हुई। इसके पश्चात् एनआईसी (National Informatics Centre) की स्थापना 1977 में हुई, जो ई-शासन के क्षेत्र में पहला बड़ा कदम था। कम्प्यूटर का अन्य क्षेत्रों में उपयोग 1980 से शुरू हुआ। एनआईसी NET नेशनल सेटेलाईट बेस्ड कम्प्यूटर नेटवर्क की स्थापना 1987 में हुई। इसके बाद डीआईएस एनआईसी। की स्थापना 1990 में हुई और सभी राज्यों में काम शुरू हुआ। 1999 से सूचना प्रौद्योगिकी को शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग किया जाने लगा। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की स्थापना 1999 में की गई। सन् 2000 में विभाग की 12 बिन्दुओं की एक कार्य सूची बनायी गई। यह कार्य सूची ई-शासन हेतु मार्गदर्शक साबित हुई, जिसे भारत सरकार ने सभी शासकीय विभाग तथा मंत्रालयों में लागू करने के लिए निर्देशित किया:-

- सभी विभागों व मंत्रालय में पर्सनल कम्प्युटर होंगे।
- वे सभी कम्प्यूटर एलएएन (LAN) से जुड़ेंगे।
- समस्त स्टाफ की ट्रेनिंग सुनिश्चित की जाये।
- सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।

* **वरिष्ठ अध्यापक (शिक्षा विभाग), प्रशिक्षणार्थी, शासकीय शिक्षा मनोविज्ञान तथा संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)**

- सभी सूचनाओं का आदान-प्रदान ई-मेल के द्वारा हो।
- ऑन लाईन नोटिस बोर्ड लगाये जाये।
- सॉफ्टवेयर अपडेट करें।
- इन सभी सूचनाओं का हिन्दी वर्जन भी विकसित करना। आदि।

सुशासन को बढ़ाने के लिये ई-शासन जरूरी है। सम्प्रेषण के नये तरीकों, विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप करने के लिये नई सूचना व सेवायें देने के नये-नये तरीकों की खोज हेतु सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। आई.टी., इंटरनेट, मोबाईल सम्प्रेषण के द्वारा विद्यार्थी तथा प्रशासन के मध्य नये तरीके से संबंध बनाना तथा अच्छे उद्देश्य को लेकर अपना सहयोग देना ही ई-शासन का लक्ष्य है। विद्यार्थियों को आई.टी. द्वारा नई तथा आवश्यक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में एक बड़ी सहभागिता मिली है, ये लक्ष्य व्यक्ति समूहों को ऑनलाईन चर्चा उपलब्ध कराते हैं तथा त्वरित लाभ, विकास तथा प्रभावशीलता प्रदान करते हैं, वह भी कम आर्थिक निवेश में। इससे शैक्षिक मानकों का प्रभावी पर्यवेक्षण किया जा सकता है। अत: ई-शासन एक अति महत्वपूर्ण उपकरण है।

वैश्विक उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने में ई-शासन का महत्वपूर्ण योगदान है, इसमें तकनीकी प्रगति का एक उपकरण के रूप में प्रयोग करना होगा, ताकि शैक्षिक तथा व्यावसायिक उन्नति हो सके। शिक्षा में सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति, सूचना को सुनिश्चित करना, सेवा प्रदाय को मजबूती देना, विद्यार्थी की प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करना ताकि उसकी निर्णय क्षमता विकसित हो सके, प्रशासन की पारदर्शिता तथा प्रभावशीलता में वृद्धि करना, शिक्षा के लिए एक नई श्रृंखला का निर्माण करने में ई-शासन का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान व्यवस्था को आई.टी. सेवा द्वारा निश्चित तौर पर मजबूती प्राप्त हुई है। यह समय की बचत के साथ धन के अपव्यय को भी कम करता है, जिससे समान सूचना वितरण होता है। ई-शासन निम्न प्रकार से परिलक्षित होता है:-

- **ई-प्रशासन :-** सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी (ICT) द्वारा सभी विभागों की प्रशासनिक प्रक्रिया तथा आंतरिक कार्यप्रणाली उन्नत होती हैं।
- **ई-सर्विस:-** विद्यार्थी को सही सेवा प्रदान करना इसका मुख्य लक्ष्य है, जैसे- आवेदन करना, प्रवेश प्रक्रिया, फीस, आई-कार्ड इत्यादि सेवायें।
- **ई-सहभागिता-** ज्यादा सक्रिय विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों द्वारा प्रशासनिक प्रतिभागिता बढ़ाना तथा आई.सी.टी. द्वारा निर्णय क्षमता का विकास करना।

ई-शासन के तीन रूप देखने मिलते हैं:-

- शासन-नागरिक (G To C)
- शासन-शासन (G To G)
- शासन-व्यवसाय (G To B)

शिक्षा में ई-शासन की सुनिश्चितता हेतु एम.एम.पी. (Mission Mode Project) आरंभ किया गया। इसमें कहा गया- सीमित समय में सभी को केन्द्रीयकृत रूप से सेवा प्रदान करना, जिनका कि मापन तथा मूल्यांकन योग्य प्रभाव व निष्कर्ष प्राप्त हो।

एम.एम.पी. का मुख्य उद्देश्य है- केन्द्रीयकृत योजना तथा विकेन्द्रीकृत कार्यान्वयन, जो हितग्राही (Stakholders) तक पूर्णरूप से पहुंच सके। ICT के उद्देश्य, लक्ष्य, इसकी सेवाऐं तथा सभी क्षेत्र एम.एम.पी. के लिए मूलाधार है। इसमें समय-समय पर शासन कार्यशालायें नियोजित करता है, ताकि स्कूल शिक्षा में ई-शासन की उपयोगिता सुनिश्चित की जा सके। सचिव, आयुक्त, संचालक, प्रधान अध्यापक, शिक्षक, एन.सी.ई.आर.टी. आदि के द्वारा शिक्षा में आने वाली चुनौतियों को चिन्हित किया जाता है, ताकि उनका निराकरण किया जा सके। शिक्षा में ई-शासन के लाभ निम्न रूप से देखे जा सकते हैं-

- **शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाना:-** ई-शासन शिक्षा व्यवस्था को बेहतर तथा उन्नत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शासन की शिक्षा नीतियों में आरंभ से ही नवाचार की बात की जाती रही है। प्रत्येक नीति में शिक्षा की पहुँच, सहजता, सरलता तथा गुणवत्ता पर जोर दिया गया है। सही समय पर सही सूचना प्रसारण से सही निर्णय लेने में सहायता प्राप्त होती है।
- **शिक्षण उपकरणों को विकसित करना :-** ई-लर्निंग की अवधारणा में पिछले 10 वर्षों में बहुत परिवर्तन आया है। इसका प्रभाव उच्च शिक्षा हेतु रणनीति बनाने तथा कार्यप्रणाली विकसित करने में पड़ता है, क्योंकि इसके प्रत्यक्ष तथा तात्कालिक प्रभाव परिलक्षित होते हैं। वर्तमान में सीखने के वातावरण में परिवर्तन हुआ है। व्याख्याता, शिक्षक के कार्यों में परिवर्तन हुआ है, इससे एक बेहतर, लचीली, संगठनात्मक प्रणाली बनाने में ई-लर्निंग का ही योगदान है। यह शिक्षकों के लिए एक बेहतर शिक्षण उपकरण सिद्ध हो रहा है। भविष्य हेतु बेहतर शिक्षण विधियाँ उपलब्ध करा रहा है। परम्परागत की तुलना में ई-लायब्रेरी, वर्चुअल व्याख्यान, वेबसाइट्स इत्यादि सीमित स्थान तथा समय में भी सामग्री उपलब्ध कराते हैं। इसका प्रयोग शिक्षा विभाग में अभी हाल ही में ओ.ई.आर. (मुफ्त शैक्षिक संसाधन) द्वारा शिक्षकों को ऑन-लाईन सर्टिफिकेट कोर्स कराया गया है।
- **सूचना का केन्द्रीयकरण :-** ई-शासन से सूचना सेवायें बेहतर, पारदर्शी, स्तरीय होती हैं। कम लागत पर सूचनाओं का निर्माण, व्यवस्था, वितरण सरल होता है।
- **एकीकृत सेवाऐं :-** सभी विभागों द्वारा प्रदाय की जाने वाली सुविधायें एक ही स्थान पर मिल जाती हैं।
- ई-शासन द्वारा सेवाऐं कहीं भी-कहीं भी प्राप्त की जा सकती हैं।
- कम लागत।
- ई-शासन द्वारा निर्णय क्षमता तथा बेहतर योजना बनाने में सहायता मिलती है।
- बेहतर सुरक्षा तथा सावधानी की सूचना।

उच्च शिक्षा द्वारा शिक्षा में ई-शासन की प्रभावशीलता हेतु कई प्रावधान किये गये हैं तथा संस्थाओं की स्थापना की गई है, जिनकी अपनी कार्यप्रणाली है, जैसे- यूजीसी, एआईसीटीई, एनसीटीई, पीसीआई, एमसीआई, आईएमसी, डीसीआई, एनएएसएससीओएम।

मध्य प्रदेश में भी शिक्षा की पहुँच सरल बनाने के लिए एजुकेशन पोर्टल की स्थापना की गई है, जिससे सभी कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को विभाग की विभिन्न जानकारियाँ एक ही साथ प्राप्त हो सकती हैं।

चुनौतियाँ :-

ई-शासन का शिक्षा में प्रभाव विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। शिक्षा में सिर्फ तकनीकी चुनौतियाँ ही नहीं हैं, बल्कि मूलभूत चुनौतियाँ भी हैं, जैसे- पुनः संशोधित शिक्षा प्रक्रिया तथा कार्यप्रणाली को किस तरह अपनाया जाये ? यह कर्मचारी, शिक्षक तथा विद्यार्थियों हेतु नई जबावदारी है। यह भी मुख्य प्रश्न है, कि सभी सूचनायें सुरक्षित रहें तथा अवांछित परिवर्तन न हो पाये। व्यक्ति की गोपनीयता बनी रहे, इसके लिए एक नियंत्रित क्रिया विधि की आवश्यकता है, ताकि सूचनायें सही हाथों में जायें।

सही प्रशिक्षण की कमी भी एक मुख्य चुनौती है। इसके लिए निवेश तथा उपकरणों की उपलब्धता भी शासन के लिये चुनौती है तथा कर्मचारियों को इस हेतु सही प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। यह आवश्यकता तथा उत्तरदायित्व के परिप्रेक्ष्य में एक नई अवधारणा है, जिसकी समझ शिक्षकों को होना आवश्यक है। शिक्षकों के सभी विभागीय कार्य ऑन-लाईन प्रशासित किये जा रहे हैं, अतः शिक्षकों को इसका प्रतिपादन करने में सक्षम होना आवश्यक है।

वर्तमान परिवेश में और मुख्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में ई-शासन की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि यह सभी शिक्षकों हेतु अति आवश्यक है, उन्हें अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का बोध होना आवश्यक है, क्योंकि यदि शिक्षक विभिन्न विभागीय जानकारियों से युक्त रहेंगे, तो वे अपने आपको वर्तमान परिवेश के अनुसार अपग्रेड करते रहेंगे तो उनका विद्यार्थी भी उनके इस ज्ञान से अवश्य ही लाभान्वित होगा और उनकी समझ के भी द्वार खुलेंगे, साथ ही शासन की उपलब्धता सुनिश्चित होगी, जिससे राष्ट्र निर्माण में सहायता प्राप्त होगी।

संदर्भ ग्रंथ -

(i) egov.eletsonline.com
(ii) nisg.org
(iii) www.ijettcs.org
(iv) www.mpnic.in
(v) ictschool.gov.in
(vi) www.iosrjournals.org
(vii) ducc.du.ac.in

शिक्षा के क्षेत्र में कला का महत्व

*श्रीमति कीर्ति मिश्रा **

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख में कला का शिक्षा के क्षेत्र में महत्व को दर्शाया गया है। कला जिस प्रकार हमारे जीवन में आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी कला की विशेष भूमिका को दर्शाया गया है। कला के माध्यम से शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कला की शिक्षा एक साधना है। कला के माध्यम से हम निरक्षर को भी साक्षरता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। कला शिक्षा में हम चित्रों के माध्यम से संगीत, नृत्य, नाटक के द्वारा समाज की बुराईयों को दूर कर सकते हैं। कला के माध्यम से शिक्षा की ओर अग्रसर करना हमारा मूल उद्देश्य है।

कला शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

1- *छात्रों को आत्मानुभूति का एहसास कराना।*

2- *छात्रों को विभिन्न कलाओं के प्रति रूचि उत्पन्न करना।*

3- *छात्रों में आन्तरिक अनुभूति तथा सौन्दर्य बोध के प्रति लगाव उत्पन्न करना।*

4- *छात्रों को अधिक से अधिक जिज्ञासु बनाना।*

5- *छात्रों को देश की विविधता तथा सुविकसित संस्कृति के प्रति जागरूक करना।*

कला शब्द का शाब्दिक अर्थ है सुन्दर अर्थात् जो आनन्द प्रदान करती है जिससे सुन्दरता आती है, वह कला है। कला को 'सुन्दर' 'कोमल' मधु या 'सुख' लाने वाला मानते है। कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती है कला का अर्थ अभी तक निश्चित नही हो पाया है। यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएँ की गई है। भारतीय परम्परा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते है, जिनमें कौशल अपेक्षित हो यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है।

शिक्षा के क्षेत्र में कला का समन्वय करने का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से छात्र-छात्राओं की रूचि को बढाना है ताकि शिक्षा कला के माध्यम से उनके छात्र छात्राओं के सर्वागीण विकास में सहायक सिद्ध हो। यही मूल उद्देश्य है।

कला एक अनुकृति होती है अनुकृति का अर्थ सादृश्य। महान दार्शनिक प्लेटों ने कहा है - ''कला सत्य की अनुकृति है।'' कला एक प्रकार का कौशल है क्योंकि कोई भी कलाकृति तभी कलाकृति कही जा सकती है जब वह विशेष कुशलता पूर्वक बनाई गई हो।

कला एक प्रकार का शिल्प है, शिल्प अर्थात अपनी कला को काट छाँट कर प्रदर्शित करना वह चाहे मूर्तिकला हो, वास्तु शिल्प, धातु शिल्प या वस्त्र शिल्प, प्लास्टिक कला किसी भी कला को अपने विचारों के अनुरूप काँट-छाँटकर या तराशकर भावों को प्रस्तुत करना ही शिल्प अर्थात क्राफ्ट है। कला का उद्देश्य मानव मन के भावों को मूर्त रूप देना है इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ''कलाकार अपनी संवेदनाओं एवं तनावों को दूर करने के लिए कला को माध्यम बनाता है और

सहायक प्राध्यापिका, जबलपुर पब्लिक कालेज, करमेता, जबलपुर

कला ही उसे स्वस्थ मानसिक जगत की तरफ ले जाती है।

कला का महत्व -

जीवन ऊर्जा का महासागर है जब अंतश्चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है कला जीवन को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से संबंधित करती है। इसके द्वारा ही बुद्धि आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका कोई छोर नहीं। कला इतनी विशाल है कि इतनी विस्तृत अनेक विधाओं को अपने में समेटें हैं तभी तो कवि मन कह उठा।

''साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः''

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला ''कला में मनुष्य अपने भावों को अभिव्यक्त करता है'' तो प्लेटो ने कहा - ''कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।''

टालस्टाय के शब्दों में अपने भावों की क्रिया रेखा, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति करना कि उसे देखने या सुनने में भी वही भाव उत्पन्न हो जाय कला है। ह्दय की गहराईयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती है, कलाकार का अतंर्मन मानो मूर्त रूप ले उठता है चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या रंगो से भीगी तूलिका या सुरों की पुकार या वाद्यों की झंकार कला है। कला के द्वारा आत्मिक शक्ति का माध्यम ही एक कठिन तपस्या है साधना है। इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इन्द्रधनुषी आत्मा से स्वप्रिल विचारो को सकार रूप देता है।

कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाकर उसे ऐसे ऊंचे स्थान पर पहुँचा दे जहां मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार क्षेत्र, धर्म, भाषा और जाति आदि की सीमाएँ मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करता है। व्यक्ति के मन को उदात्त बनाती है। वह व्यक्ति को ''स्व'' से निकालकर ''वसुवैधव कुटुम्बकम'' से जोड़ती है।

कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा अभिरूचि को दिशा देने की अदभुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितनों तत्वों से यह भरपूर है जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है।

यह अपना जादू तत्काल दिखाती है और व्यक्ति को बदलने में लोहा पिघलाकर पानी बना देने वाली भट्टी की तरह मनोवृत्तियों में भारी रूपांतरण प्रस्तुत कर सकती है।

जब यह कला संगीत के रूप में उभरती है तो कलाकार गायन और वादन से स्वयं को ही नहीं श्रोताओं को भी अभिभूत कर देता है। मनुष्य आत्मविस्मृत हो उठता है। दीपक राग से दीपक जल उठता है और मल्हार राग से मेघ बरसना यह कला है साधना के ही चरमोत्कर्ष की संगीत की साधना, सुरो की साधना है मिलन है आत्मा से परमात्मा का, **अभिव्यक्ति है अनुभूति की।**

संगीत के वाद को ललित कलाओं में स्थान दिया गया है तो वह है तो **नृत्य कला** चाहे वह भरतनाटयम् हो या कत्थक, मणिपुरी, श्रेष्ठ कला है। चित्रकला मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखती है जैसा देखती है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है। यही उसकी आत्माभिव्यजना है। अपनी रंगों से भरी तूलिका से चित्रकारं जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। तो दर्शक हतप्रभ रह जाता है। पाषाण युग से ही जो चित्र पारितोषिक पाते रहे है ये मात्र एक निश्चित

सोपान प्रस्तुत करते है। धीरे-धीरे चित्रकला शिल्पकला नये सोपान चढ़ी सिन्धुघाटी सभ्यता में पाये गये चित्रों में पशु, पक्षी, मानव आकृति सुन्दर प्रतिभाएं, ज्यादा नमूने भारत की आदि सत्यता की कला प्रियता का घोतक है। अजन्ता, बाध आदि के गुफा चित्रों की कलाकृतियों पूर्व बौद्धकाल के अंतर्गत आती है। भारतीय कला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से ही प्रारंभ होता है और संसार में अनेक समान चित्र कही नहीं है और संसार में अनेक समान चित्र कही नही बने ऐसा विद्वानों का मत है। अजन्ता के कला मंदिर प्रेम, धैर्य, उपासना, भक्ति, सहानुभूति त्याग और शांति के अपूर्व उदाहरण है। उदा. मधुवनी शैली, पहाड़ी शैली, तंजौर शैली, मुगल शैली, बंगाल शैली।

भारतीय संस्कृति के ऐसे तत्व हैं, जिन्होंने अनेक बाधाओं के बीच भी हमारी संस्कृति की निरंतरता को अक्षुण्ण बनाए रखा है। इन विशेषताओं ने हमारी संस्कृति में वह शक्ति उत्पन्न की है कि वह भारत के बाहर एशिया, दक्षिण, पूर्व एशिया में अपनी जड़ फैला सके।

हमारी संस्कृति के इन तत्वों को प्राचीन कला से लेकर आज तक की कलाओं में देखा जा सकता है। इन्ही ललित कलाओं ने हमारी संस्कृति को **सत्य, शिव, सौन्दर्य** जैसे अनेक सकारात्मक पक्षों को चित्रित किया है। इन कलाओं के माध्यम से ही हमारा लोक जीवन, लोकमानस तथा जीवन का आंतरिक और आध्यात्मिक पक्ष अभिव्यक्त होता रहा है, हमें अपनी इस परम्परा से कहना नहीं है अपितु अपनी परम्परा से ही रस लेकर आधुनिकता को चित्रित करना है।

शिक्षा में कला के उद्देश्य (Objectives of Art Education)

कला शिक्षा एक साधना है कलाकृतियाँ मानव सभ्यता एवं संस्कृति की दर्पण होती है। इनका सृजन भी युगों-युगों से होता आया है।

अगर हम पीछे मुड़कर देखें तो हमें समझने में कोई असुविधा नहीं होगी कि आदिमानव के समय से कला का उद्गम हुआ था क्योंकि मानव अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कला के माध्यम से ही प्रगट करता था।

सौन्दर्य बोध का विकास करने के लिए कला शिक्षा एक साधना है जो बाल मन को रंगों की सुन्दरता उसका आकार, प्रकार, शिक्षण में तो सहायक है ही साथ ही साथ वह मनोरंजन भी प्रदान करता। इससे स्वस्थ मानसिकता का विकास होता है साथ ही साथ मनुष्य या जो कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करना चाहता वह अपने आस-पास के वातावरण एवं पर्यावरण के प्रति उसका प्रेम एवं संवेदना का भी विकास होता है।

एक बालक को कला के माध्यम से विभिन्न आकारों वातावरण, पर्यावरण में फल-फूल, पेड़-पौधा, पशु-पक्षी एवं जानवरों का ज्ञान स्वतन्त्रतापूर्वक खेलने एवं सीखने में प्राकृतिक के द्वारा सहायता प्रदान करता है कला में संगीत, नृत्य वादन, नाटक आदि के द्वारा बालकों में सहयोग एवं मित्रता की भावना का विकास करना मूल उद्देश्य होता है।

प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा के उद्देश्य छात्रों के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम है कला शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को आत्मनिर्भरता, आत्मभिव्यक्ति, कलात्मकता, स्वतंत्रता की भावना और स्वस्थता प्रदान करती है।

कला शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1- छात्रों को आत्मानुभूति का एहसास कराना।

2- छात्रों को विभिन्न कलाओं के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

3- छात्रों में आन्तरिक अनुभूति तथा सौन्दर्य बोध के प्रति लगाव उत्पन्न करना।

4- छात्रों को अधिक से अधिक जिज्ञासु बनाना।

5- छात्रों को देश की विविधता तथा सुविकसित संस्कृति के प्रति जागरूक करना।

6- छात्रों में कला के माध्यम से त्यौहारों, उत्सवों चाहे फिर राष्ट्रीय त्यौहार हो या धार्मिक उत्सवों सभी मौकों पर कला किसी न किसी माध्यम से समाहित हो फिर चाहे वह चित्रकला हो या मूर्तिकला, स्थापत्य कला या संगीत कला, नृत्य कला या नाट्य कला हो सभी कलाओं का अपना-अपना महत्व एवं उद्देश्य होता है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष तौर पर हम कह सकते है कि कला ही जीवन है, अनुभूति है एवं कला के माध्यम से हम अपने भावों को अभिव्यक्त करते है। जब शिक्षा और कला का समन्वय होता है तो हमारे विचार विभिन्न रंगों की तरह अभिव्यक्त होते है।

संदर्भ ग्रंथ -

- सक्सेना, आन्शवना - शिक्षा में नाटक कला एवं सौन्दर्य शास्त्र, प्रथम संस्करण 2016, राखी प्रकाशन प्रा.लि. आगरा
- शर्मा, कुसुम - कला शिक्षण, सप्तम् संशोधित संस्करण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- सिंह, चित्रलेखा - कला शिक्षण, चतुर्थ संस्करण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- शर्मा, आर. के. - कला शिक्षा, दशम संशोधित संस्करण, राधाप्रकाशन मंदिर, प्रा.लि.

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती ज्योति शुक्ला *

शोध सार

समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होती है बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को और जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है। समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन है क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के समाने कुछ न कुछ परेशानियाँ और समस्यायें होती है। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है यह इस बात से स्पष्ट होता है कि जीवन की चुनौतियों को वह किस प्रकार स्वीकार करता है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस हेतु 100 उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों के समायोजन के मापन हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं ए.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रशासन किया किया गया एवं निष्कर्ष स्वरूप पाया कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन में कोई अंतर नहीं है अर्थात उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि होने का उनके समयोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

प्रस्तावना :- आज आवश्यक है कि वर्तमान बालक, देश का भावी नागरिक पूर्णत: विकसित हो, समायोजित व्यक्तित्व का स्वामी हो और यह तभी संभव हो सकता है जब वह अपने परिवार से उचित वातावरण व सहयोग प्राप्त करेगा जो कि उसके अधिगम व्यवहार को धनात्मक दिशा में प्रेरित कर उसकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रगत दिशा में परिवर्तित करेगा। एक सफल राष्ट्र के निर्माण के लिये वर्तमान बालक-बालिकाओं का विकास अति आवश्यक है क्योंकि आज का बालक ही कल का नागरिक है।

यह बालक आने वाले समय में राष्ट्र की बागडोर संभालेगा एवं राष्ट्र विकास की दिशा का भी निर्धारण करेगा। अत: यह आवश्यकता महसूस की गई कि क्या कारण है, जिस बालक का अधिगम व्यवहार धनात्मक नहीं है और उसमें क्षमता- बौद्धिक, शारीरिक होने के बावजूद भी वह अपने जीवन में उतनी शैक्षणिक उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं कर पाता। परिवार बालक के जीवन का आधार क्षेत्र है अभिभावक उसके जीवन की धुरि है। उसका वर्तमान, भविष्य सभी कुछ परिवार एवं अभिभावकों पर निर्भर करता है। शिक्षा शास्त्रियों की विचारधारा में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या कारण है वर्तमान में उपलब्ध समस्त संसाधन तभी पूर्णत: उपयोगी हो सकते हैं जबकि इनका भरपूर उपयोग हो। अत: यह आवश्यक है कि बालक की शैक्षिक प्रगति अर्थात शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारणों का पता लगाया जाये और कारणों से संबंधित समस्याओं का समाधान कर बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिये प्रयास किये जायें।

आज का बालक कल का नागरिक है जिसे आने वाले समय में देश की बागडोर सम्हालना है। देश एवं समाज की प्रगति के लिये आवश्यक है कि बालकों के समुचित विकास पर जीवन की प्रारंभिक अवस्थाओं से ही अत्यधिक ध्यान दिया जाए। विकास की सभी अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है, किशोरों के आवेग एवं संवेग अत्यधिक तेजी से परिवर्तित होते हैं फलस्वरूप उनमें अनेक प्रकार की संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न होती है जो उनमें उलझन और तनाव

* सहायक प्राध्यापक, डॉ. राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जबलपुर

उत्पन्न करती है।

इस समय किशोरों के व्यवहार को समझना अत्यंत कठिन होता है जिससे वे माता-पिता, शिक्षक ओर समाज के लिए समस्या बन जाते हैं। आने वाले समय में ये समस्याएँ स्थायी तनाव व उलझनें पैदा करती हैं जो कि बालक के समुचित विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति का वर्तमान और भविष्य का जीवन तभी सफल और आनंददायक होगा। जब वह संवेगात्मक रूप से परिपक्व समाज में सफल एवं सुसमायोजित हो तथा उसे अपने आत्म-प्रत्यय का सही ज्ञान हो। ऐसा व्यक्ति ही अपनी समस्याओं को पहचान उनका सही मूल्यांकन कर सकता है और जीवन की हर कसौटी पर खरा उतर सकता है तथा परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना सक्रिय योगदान दे सकता है।

विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है फिर चाहे वह मनुष्य का शारीरिक हो या मानसिक विकास। मनुष्य का मानसिक विकास होने से उसमें कल्पना, विचार चिन्तन, आत्म-बोध आदि का विकास निरंतर होता रहता है। ये विचार कल्पना, आत्म का बोध विकासशीलन मानव मन को श्रेष्ठतर बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। कभी-कभी देखा जाता है क्यों कुछ लोग जिनकी विद्यालयीन शैक्षिक उपलब्धियाँ काफी उच्च थी, बाद की जिंदगी में उन्हें असफलता हाथ लगी तथा क्यों कुछ लोग जिनकी विद्यालयीन शैक्षिक उपलब्धियाँ काफी निम्न थीं बाद की जिंदगी में उन्हें काफी सफलता मिल पाई। इसका स्पष्ट कारण यह है कि पहले तरह के व्यक्ति में समायोजन की कमी थी, परंतु दूसरे तरह के व्यक्ति में समायोजन क्षमता थी। विश्वभर के शिक्षा शास्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि व्यक्ति के समग्र विकास के लिए बौद्धिक विकास ही पर्याप्त नहीं है, वरन् उसके मानसिक विकास की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है जिसमें समायोजन महत्वपूर्ण हैं परिपूर्ण शिक्षा का एक अंग है, भावना का विकास, संवेगों में सद्भावना के विकास तथा दुर्भावना के निवारण को वरीयता देनी होगी। बचपन में ही, समायोजन क्षमता अनुकंपा, करूणा, सेवा, त्याग, समर्पण, प्रेम, सहकार, अनुशासन, संवेदना, मानवता आदि सद्भावों के विकास की ओर ध्यान देना होगा। इसी प्रकार इन बातों का ध्यान रखना होगा कि बच्चों में क्रोध, ईर्ष्या, स्वार्थ, अहम्, द्वेष, असत्य, कपट, विश्वासघात, दुर्बलता आदि अंकुरित न हो सकें। बौद्धिक विकास के साथ ही भावनात्मक अर्थात् भावना पक्ष का भी समान रूप से और साथ-साथ भावनाका विकास हो सके। केवल भावना के विकास से विवेक नष्ट होने का खतरा संभव है और केवल बुद्धि के विकास से सन्मार्ग की दिशा नजरों से ओझल हो जाने का डर रहेगा। मानव व्यवहार परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से इन्हीं चरों पर आधारित रहता है। प्रस्तुत अनुसंधान में दिशा निर्धारण में कुछ अनुसंधान कार्यों का विशेष योगदान है जिनके अध्ययन परिणामों से इस शोध में दिशा-निर्देशन एवं सहायता मिली है।

समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है यह उसकी समस्याओं की संख्या से ज्ञात नहीं होता है बल्कि उसकी प्रभावशीलता इस बात से स्पष्ट होती है कि वह इन समस्याओं को और जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है। समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन है क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के समाने कुछ न कुछ परेशानियाँ और समस्यायें होती हैं। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है यह इस बात से स्पष्ट होता है कि जीवन की चुनौतियों को वह किस प्रकार स्वीकार करता है।

उद्देश्य -

प्रस्तुत शोध-कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं-

- उच्च एवं निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ -

- उच्च एवं निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श-

न्यादर्श में प्राप्त फलांको के आधार पर सारणी -

न्यादर्श तालिका क्रमांक-1

समूह	कुल छात्र-छात्राएँ
उच्च शैक्षणिक उपलब्धि	50
निम्न शैक्षणिक उपलब्धि	50
कुल	**100**

उपकरण - प्रस्तुत शोध कार्य हेतु डॉ. ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का उपकरण हेतु प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं परिणाम

सारणी क्रमांक -01

उच्च एवं निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च	50	8.16	4.48	1.88	> 0.05
निम्न	50	10.32	3.70		

स्वतंत्रता के अंश - 98

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.68

उपरोक्त सारणी में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह के परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 8.16 तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 10.32 है तथा जिनके मध्य 2.16 का अंतर है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं, है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.88 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 1.96 से कम है।

अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी क्रमांक -02

उच्च एवं निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्रों के समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	''टी' मान	सार्थकता
उच्च	25	10.92	3.84	0.22	> 0.05
निम्न	25	10.86	3.46		

स्वतंत्रता के अंश - 48

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.01

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.68

उपरोक्त सारणी में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह के परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 10.92 तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 10.86 है तथा जिनके मध्य 0.06 का अंतर है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.22 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 2.01 से कम है।

अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का छात्रों के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी क्रमांक-03

उच्च एवं निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाली छात्राओं के समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	''टी' मान	सार्थकता
उच्च	25	12.08	3.54	0.95	> 0.05
निम्न	25	12.96	3.14		

स्वतंत्रता के अंश - 48

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.01

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.68

उपरोक्त सारणी में उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि समूह के परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 12.08 तथा निम्न शैक्षणिक उपलब्धि समूह का मध्यमान 12.96 है तथा जिनके मध्य 0.88 का अंतर है जो कि सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.95 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम मान 2.01 से कम है।

अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि का छात्राओं के समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिणामों का संभावित कारण यह हो सकता है कि जिस आयु समूह का न्यादर्श के रूप में चुनाव किया गया है वह अभी-अभी ही अपने जीवन के इस कठिन काल किशोरावस्था में प्रवेश किये होते हैं जिससे उनमें अधिक शारीरिक,

संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं जो कि उनके समायोजन व्यवहार को प्रभावित करते है। भारत में बालिकाओं द्वारा कुसमायोजित व्यवहार का एक मुख्य कारण समाज द्वारा उनके बालकों से अपेक्षाकृत कम महत्व प्राप्त होना हो सकता है। एक अन्य कारण यह हो सकता है कि कक्षा 11वीं के विद्यार्थी उतने परिपक्व नहीं होते है कि वे अपनी बुद्धि के अनुसार समायोजन कर सके जितना की उनसे अपेक्षित किया जाता है। संभवत: वे उस अवस्था तक नहीं पहुँचे है जहाँ बुद्धि, वातावरण से समायोजन करने में एक मुख्य कारक की भूमिका निभाती है। कभी-कभी कम बुद्धि वाला विद्यार्थी भी अच्छा समायोजन प्रदर्शित करता है। इसके पीछे यह कारण हो सकता है कि वह हमेशा जागरूक होता है कि वह कम बौद्धिक क्षमता का है। यह मार्ग निर्देशन उसे प्रेरित करता है कि वह या तो इन परिस्थितियों का सामना करें या इनसे दूर चला जाये। फलस्वरूप वह न चाहते हुए भी विपरीत परिस्थितियों को स्वीकार करता है। जिसके परिणाम स्वरूप वह अपने अच्छे और नवाचारी विचारों को अन्य विद्यार्थियों के समाने प्रगट नहीं कर पाता और स्वयं को समायोजित कर लेता है।

निष्कर्ष -

उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र, छात्राओं एवं विद्यार्थियों के समायोजन में कोई अंतर नहीं है अर्थात उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि होने का उनके समयोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ -

- आस्थाना, विपिन (1985), ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन का मूल्यांकन'', नवम् संस्करण 1985
- भटनागर, सुरेश (2003), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', संस्करण, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- गैरेट, ई. हेनरी (1972), ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय'', प्रथम संस्करण, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना
- जायसवाल, डॉ. सीताराम, ''समायोजन मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मंदिर, रागेय राघव रोड, आगरा
- जायसवाल, सीताराम (1975), ''समायोजन मनोविज्ञान'', प्रथम संस्करण, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ (आगरा)
- कपिल, डॉ. एच.के. (2009), ''अनुसंधान विधियाँ'', चौदहवाँ संस्करण, राखी प्रकाशन, आगरा
- कपिल, डॉ. एच.के. (2008), ''सांख्यिकीय के मूल तत्व'', अष्टम संस्करण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- कोठारी एवं कोठारी (1980), ''सांख्यिकीय के सिद्धांत एवं व्यवहार'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
- खान, शहीद (1992), ''नैदानिक मनोविज्ञान'', द्वितीय संशोधित संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, रागेय राघव रोड, आगरा

जबलपुर शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

*श्रीमती प्रियंका साहू**

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में जबलपुर शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता पर शोध कार्य किया गया है। इस कार्य के लिए जबलपुर नगर के 2 शासकीय व 2 अशासकीय विद्यालयों को लिया गया है। जिसमें माध्यमिक स्तर के कक्षा 8 के 50 विद्यार्थियों को चुना गया 25 विद्यार्थी शासकीय एवं 25 अशासकीय विद्यालयों से लिए गए। प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा विद्यार्थियों से प्रश्नावली हल करवा कर आकड़े प्राप्त किये एवं आकड़ों को संकलित का विशलेषण करने के बाद यह परिणाम प्राप्त हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में अन्तर पाया गया।

प्रस्तावना:- मनुष्य मूल्यों से अपने जीवन को नियंत्रित एवं निर्देशित करता है। मूल्यों से मनुष्य जाना समझा जाता हैं मूल्यवादी दृष्टिकोण से ही बहुत से लोग अनुयायी बनते है जीवन एवं मूल्य घनिष्ट रूप से जुड़े होते है। इस सृष्टि में मनुष्य अपने कार्यो से ही अच्छा और बुरा बनता हैं।

जो मनुष्य अच्छा होता है उसकी सभी जगह पर प्रशंसा होती है, उसकी कीर्ति होती हैं वही पर बुरे कृत्य करने वालों की सर्वत्र निंदा की जाती है इसलिए प्रत्येक मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह बुरे कार्य को त्याग कर समाज का कल्याणकारी सदस्य बनने आदर्शवादी मूल्यों के अनुरूप अपने जीवन यापन करें। दर्शन शास्त्र में मूल्य शब्द का अर्थ स्पष्ट नही है। विद्वान किसी एक परिभाषा पर एक नहीं हो सके। शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार इतना ही कहा जा सकता है कि मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण वस्तु का प्रतिनिधित्व करते है। जैसे -जैसे वह अधिकाधिक सीखता जाता है वह परिपक्व होता है। मूल्य मानव जीवन को नियंत्रित एवं निर्देशित करने वाला वह अमूर्त सम्प्रत्यय है जो व्यक्ति की आवश्यकताओं की संतुष्टि के साथ लोकमंगल व आत्मोपलब्धि की सिद्धि से सहायता प्रदान करता है।

विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना अति आवश्यक है। ऐसी शिक्षा प्रणाली जो विद्यार्थियों में राग, द्वेष, हर्ष, शोक, उत्पन्न कर रही हो। मूल्यों को ह्रास होने का प्रमुख कारण है भावना नहीं किन्तु यदार्थ शिक्षार्थी में चिन्तन का विषय बन गया है। विद्यार्थी अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो रहा है। वर्तमान शिक्षा पद्वति और मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा जीवन यापन करना सीखे एवं स्वयं ही शाश्वत मूल्यों के पालन का प्रयास करें। शिक्षा द्वारा विद्यार्थी को आध्यात्मिकता की शिक्षा देना चाहिए तभी मूल्यों का धारावाही वृक्ष खड़ा किया जा सकता है। वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों में भी मानवीय मूल्यों से संबंधी अंश बढ़ा देना चाहिए।

शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के वातावरण में अन्तर होता है जिससे विधार्थियों के मानवीय मूल्यों में अन्तर आ जाता है। साथ ही विद्यार्थियों पर उनके पारिवारिक एवं संस्कृति वातावरण का प्रभाव भी पड़ता है। जो विद्यालयीन वातावरण के अन्तर को समाप्त कर देता है।

***सहायक प्रध्यापक, जबलपुर पब्लिक कालेज, करमेता, जबलपुर (म.प्र.)**

प्रस्तुत शोध पत्र में इसी बात का अध्ययन किया गया है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में सार्थक अन्तर है या नहीं। पूर्ववर्ती शोध श्याम सुंदर व्यास (1968) ने मानवीय मूल्यों पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया की प्रशिक्षण कार्यक्रम का विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों पर शिक्षण प्रतिमानों का कोई प्रभाव नही पड़ता है।

उद्देश्य :- शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :- शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :- वर्तमान समस्या के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोधकार्य के अन्तर्गत जबलपुर शहर के दो शासकीय एवं दो अशासकीय विद्यालयों से माध्यमिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों को चुना गया है। इसमें शासकीय विद्यालयों के 25 विद्यार्थियों और अशासकीय विद्यालयों के 25 विद्यार्थियों को यादच्छिक विधि से चुना गया है।

चर :- स्वतंत्र चर-मानवीय मूल्य

परतंत्र चर-छात्र एवं छात्राऐं

उपकरण :- स्वर्निमित प्रश्नावली

कार्य विधि :-

1. शोध कार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।
2. विद्यार्थियों पर स्वार्निमत प्रश्नावली प्रशासित कर ऑकड़े प्राप्त किये गये।
3. सांख्यिकी विधियों में मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात को प्रयुक्त किया गया।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

सारणी क्रमांक 1

शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य संबंधी परिणाम

विद्यालय के प्रकार	विद्यार्थियों संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक विचलन त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
शासकीय विद्यालय	25	7.48	6.64	0.72	4.25	> 1.97
अशाकीय विद्यालय	25	4.42	2.58			

स्वंतत्रता की त्रुटि = 48

0.01 स्तर पर न्यूनतम मान = 2.60

0.25 स्तर पर न्यूनतम मान = 1.97

सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों का मध्यमान 7.48 है व अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य का मध्यमान 4.42 जिनका अन्तर 3.06 है। यह अन्तर क्रांतिक अनुपात 4.25 't' सारणी के अनुसार 0.05 स्तर 1.97 और 0.01 स्तर पर 2.60 प्राप्त मान से अधिक है इससे ज्ञात

होता है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में सार्थक अंतर है। अत: परिकल्पना मान्य नहीं की जाती है।

परिणाम की व्याख्या:- शासकीय विद्याथी में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का माध्यमान 7.48 आया है और अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता का मध्यमान 4.42 आया है यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है।

प्रथम पाठशाला उसका परिवार है। उसके माता-पिता प्रथम शिक्षक तथा भाई बहन प्रथम सहपाठी है। हर माता -पिता अपने बच्चों को मानवीय मूल्यों के बारे में शिक्षा देते हैं, जिससे उनका व शिक्षा दोनों का स्तर विकसित हो सके। विद्यार्थी अपने माता-पिता के बाद विद्यालय में अध्यापक द्वारा मानवीय मूल्यों को विकसित करता हैं। अत: कहा जा सकता है कि उत्तम पारिवारिक वातावरण, सामाजिक संबंध एवं विद्यालय मानवीय मूल्यों पर प्रभाव डालते हैं।

निष्कर्ष - निष्कर्ष में पाया गया है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों में अंतर होता है।

संदर्भ ग्रंथ -

(1) शर्मा, आर.ए. - मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी इन्टरनेशनल पठितसिंग हाउस, मेरठ।

(2) शर्मा, बी.एल. - मूल्य पर्यावरण और मानव अधिकार की शिक्षा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ।

(3) राय, पारसनाथ - अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।

माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर गणित शिक्षण की परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट आधारित शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमति किरण श्रीमाली *

शोध सार

आधुनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गणित ने अपनी महत्ता दशाई है। गणित से ही मानव के विचारों में वृद्धि हुई है। आज विज्ञान की प्रगति में भी गणित एक रीढ़ की हड्डी के समान है, जिसके बिना विज्ञान अधूरा है। समाज की अर्थ व्यवस्था, लेन-देन, क्रय-विक्रय, यातायात, समय व्यवस्था तथा संचालन को सुचारू रूप से चलाने के लिये गणित की आवश्यकता होती है। आज बड़े-बड़े कारखानों को चलाने, रॉकेट यान द्वारा चांद एवं अन्य ग्रहों पर पहुँचने की योजनाओं के पीछे गणित का ठोस सिद्धांत कार्य कर रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य ग्रामों में परम्परागत एवं सेटेलाइट आधारित शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिणक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। जिसके अंतर्गत हमने न्यादर्श के रूप में (60 छात्र + 60 छात्रायें) शासकीय माध्यमिक विद्यालय जबलपुर में आठवीं कक्षा के 120 विद्यार्थियों को लिया, जिसमें आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, क्रांन्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।शोध परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सेटेलाइट से शिक्षण द्वारा छात्र, छात्राओं में शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ती है।

प्रस्तावना :- शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करते हुए उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। शिक्षा मानव विकास की पूर्ण अभिव्यक्ति है। प्राचीन काल से ही ज्ञान प्राप्त करने के लिये मानव द्वारा विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं। वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर बच्चों को पढ़ाये जाने वाले विषय में गणित, पर्यावरण, विज्ञान एवं भाषा प्रमुख है। शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रभावशील शिक्षण पद्यतियों का होना आवश्यक है। विज्ञान एवं तकनीकी के इस युग में सेटेलाइट द्वारा शिक्षण एक नवीन शिक्षण विधि है। मल्टी मीडिया तकनीकी का प्रयोग कर टीवी स्क्रीन पर दिखायी जा रही विषयवस्तु को विद्यार्थी सुन भी सकते हैं एवं आंखों से देख भी सकते हैं एवं अपनी समस्या का हल भी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।देश के दूरस्थ शिक्षा क्षेत्र में क्रान्ति लाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए (ISRO) इंडियन सेटेलाइट रिसर्च, ऑर्गनाइजेशन ने 20 सितम्बर 2004 को श्री हरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से 1950 किलो ग्राम भार का श्स्वदेशी सेटेलाइटश् को सफलतापूर्वक भूस्थैतिक कक्षा में स्थापित किया गया। इसीप्रकार आज गणित शिक्षण के लिये भी नई विधियों व प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है। परम्परागत विधि में बालकों को मूक रहकर शिक्षक के व्याख्यान को सुनना पड़ता है एवं दूसरी तरफ सेटेलाइट द्वारा गणित शिक्षण के लिये पाठ्यवस्तु को छोटी-छोटी ईकाइयों में बांट कर प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा पाठ्य-योजना तैयार की जाती है। इस प्रकार सेटेलाइट के द्वारा न केवल शालाओं में बल्कि अपने घर बैठे भी पढ़ाई भी की जा सकती है।

'MATHS IS THE LANGUAGE IN WHICH GOD HAS WRITTEN THE UNIVERSE' (गैलीलियो)

***सहायक प्राध्यापिका, प्रेमवती कॉलेज ऑफ एजूकेशन, जबलपुर (म0प्र0)**

उद्देश्य:- माध्यमिक विद्यालयीन स्तर पर गणित शिक्षण की परम्परागत एवं सेटेलाइट शिक्षण विधि गांव के शासकीय विद्यालय में छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:-

(1) परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(2) परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर :- (1) स्वतंत्र चर - परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट आधारित शिक्षण

(2) आश्रित चर - शैक्षणिक उपलब्धि

(3) नियंत्रित चर - माध्यमिक विद्यालय कक्षा 8 एवं आयु 12 से 14 वर्ष

न्यादर्श - तालिका क्रमांक - 1 न्यादर्श विवरण को प्रस्तुत करती है

तालिका क्रमांक - 1

क्रमांक	विद्यालय का नाम	समूह	छात्र	छात्रा	कुल
1.	शासकीय माध्यमिक विद्यालय सगड़ा जबलपुर	नियंत्रित	15	15	30
		प्रयोगात्मक	15	15	30
2.	शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरगवां जबलपुर	नियंत्रित	15	15	30
		प्रयोगात्मक	15	15	30
	कुल		**60**	**60**	**120**

उपकरण:- उक्त शोध कार्य हेतु उपलब्धि परीक्षण (पूर्व एवं पश्च) का उपयोग किया गया है, जिसे निष्पत्ति परीक्षण भी कहा जाता है। निष्पत्ति परीक्षण के प्रकारों के आधार पर हमारे द्वारा शोध कार्य में स्वनिर्मित वस्तुनिष्ठ उपलब्धि परीक्षण का उपयोग किया गया है, जिसमें कक्षा आंठवी गणित की 5 इकाईयों को चुना गया - (1) लंबाई, वजन एवं धारिता (2) क्षेत्रफल एवं परिमाप (3) समय (4) ज्यामितीय आकृतियाँ (5) भिन्न।

विधि:- कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों पर पहले परम्परागत शिक्षण विधि उसके पश्चात सेटेलाइट विधि द्वारा गांव के स्कूल की छात्राओं में दोनों विधियों द्वारा शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया और अध्ययन करने हेतु मध्यमान प्रमाणिक विचलन, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :-

परिकल्पना (1) परम्परागत विधि एवं सेटेलाइट से शिक्षण करने पर ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक -2

परीक्षण	छात्रों का समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	प्राप्तिक अनुपात	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	नियंत्रित	30	11.5	2.45	0.45	0.06	सार्थक अंतर नहीं है।
	प्रयोगात्मक	30	11.43	3.56	0.65		
पश्च परीक्षण	नियंत्रित	30	12.96	2.72	0.5	2.74	सार्थक अंतर है।
	प्रयोगात्मक	30	95.0	3.0	0.54		

स्वतंत्रता कोटि (पूर्व परीक्षण) (60-2) = 58 0.05 विश्वास के स्तर पर = 2.00

स्वतंत्रता कोटि (पश्च परीक्षण) (60-2) = 58 0.01 विश्वास के स्तर पर = 2.66

व्याख्या में प्रयुक्त परिकल्पना में (शासकीय शाला) ग्रामीण क्षेत्र के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के छात्रों का पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण किया गया, जिसमें पूर्व परीक्षण का CR 0.06 जो 0.01 से 0.05 विश्वास स्तर पर कम है, जिससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं है और पश्च परीक्षण के अनुसार CR 2.74 है जो 0.01 व 0.05 विश्वास के स्तर पर अधिक है। जिससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में सार्थक अंतर है। इसलिये परिकल्पना(1) अस्वीकृत की गई अर्थात यह पाया गया कि सेटेलाइट से शिक्षण द्वारा छात्र अधिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं।

तालिका क्रमांक -3

परीक्षण	छात्रों का समूह	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	प्राप्तिक अनुपात	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	नियंत्रित	30	11.3	2.22	0.40	0.43	सार्थक अंतर नहीं है
	प्रयोगात्मक	30	11.7	2.49	0.45		
पश्च परीक्षण	नियंत्रित	30	13.04	2.48	0.45	3.01	सार्थक अंतर है।
	प्रयोगात्मक	30	15.9	2.74	0.5		

स्वतंत्रता कोटि (पूर्व परीक्षण) (60-2) = 58 0.05 विश्वास के स्तर पर = 2.00

स्वतंत्रता कोटि (पश्च परीक्षण) (60-2) = 58 0.01 विश्वास के स्तर पर = 2.66

व्याख्या में प्रयुक्त परिकल्पना में (शासकीय शाला) ग्रामीण क्षेत्र के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के छात्रों का पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण किया गया, जिसमें पूर्व एवं पश्च परीक्षण में CR का मान 0.43 एवं 3.01 प्राप्त हुआ जिसमें 0.01 से 0.05 विश्वास स्तर से पूर्व परीक्षण का CR कम है, जिससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं है और पश्च परीक्षण में CR का मान 0.01 व 0.05 विश्वास के स्तर से अधिक है। जिससे दोनों समूहों में सार्थक अंतर है। इसलिये यह परिकल्पना भी अस्वीकार की गई। अर्थात परिकल्पनाओं का विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि परम्परागत विधि की अपेक्षा सेटेलाइट से शिक्षण द्वारा छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ती है।

निष्कर्ष :- माध्यमिक विद्यालयीन स्तर पर ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं को परम्परागत व सेटेलाइट आधारित शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुये।

(1) ग्रामीण शासकीय शालाओं के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि सेटेलाइट द्वारा शिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

(2) ग्रामीण शासकीय शालाओं की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर परम्परागत विधि की अपेक्षा सेटेलाइट शिक्षण द्वारा अधिक प्रभावित होती है।

संदर्भ ग्रंथ -

(1) राय, डॉ. पारसनाथ - अनुसंधान परिचर्या, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड़, आगरा।

(2) कुलश्रेष्ठ, डॉ. एस.पी. - शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

(3) गैरट, डॉ. हैनरी ई. - शिक्षा और मनेविज्ञान में सांख्यिकी, वकील्स, फेफर एण्ड सीमन्स एल.टी.एस., बॉम्बे, 400038

(4) भटनागर, सुरेश - शिक्षा मनेविज्ञान, मेरठ पब्लिक हाउस बेगम, ब्रिज रोड़ मेरठ।

(5) CHAPLIN, J.P. - "DICTIONARY OF PSYCHOLOGY," 1968, P.225

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती जया चतुर्वेदी *

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि के प्रभाव का अध्ययन करना था। प्रस्तुत अध्ययन में जबलपुर शहर के शासकीय विद्यालय के कक्षा 8वीं के 100 विद्यार्थियों (50 प्रयोगात्मक समूह एवं 50 नियंत्रित समूह) तथा अशासकीय विद्यालय के कक्षा 8वीं के 100 विद्यार्थियों (50 प्रयोगात्मक समूह एवं 50 नियंत्रित समूह) का चयन किया। इस प्रकार कुल 200 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्य पूर्ण विधि के द्वारा किया गया। विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि (पूर्व एवं पश्च परीक्षण) के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया प्राप्त आंकड़ों के आधार पर क्रांतिक अनुपात के द्वारा परिणामों को प्राप्त किया गया। शोधार्थी ने शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया।

प्रस्तावना :- भूगोल एक ऐसा विषय है जिसे प्राथमिक से लेकर माध्यमिक उच्च माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के सभी स्तरों में पढ़ाया जाता है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर तो यह अनिवार्य विषय होता ही है, आगे ऐच्छिक विषय के रूप में भी इसका महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। लेकिन प्राथमिक स्तर पर यह एक महत्वपूर्ण विषय माना जाता है। क्योंकि प्राथमिक स्तर पर जो ज्ञान छात्रों को दिया जाता है। वही उसके भविष्य के ज्ञान की नींव होता है। जिस प्रकार से छात्रों को ज्ञान दिया जाता है वही ज्ञान उनके जीवन की आधार शिला होता है अत: यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी शिक्षकों की है कि वे किस प्रकार से किस विधि के प्रयोग द्वारा छात्रों को विषय का ज्ञान प्रदान करें। परंतु वर्तमान समय में आमतौर पर जिन शिक्षण विधियों का प्रयोग भूगोल जैसे विषय के लिए किया जाता है वे बहुधा इसे अरूचिकर बना देने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। ऐसे अरूचिकर विधियों के द्वारा जब छात्रों को भूगोल विषय का ज्ञान दिया जाता है तो छात्र भी केवल उसी वर्ष उन तथ्यों को परीक्षा प्राप्त पास करने के उद्देश्य से रटते हैं।

क्या विद्यालय में भूगोल शिक्षण की स्थिति सुदृढ़ हैं?

पाटिल (1999) ने भूगोल शिक्षण की समस्याओं पर शोध किया और पाया कि ज्यादातर शिक्षक भूगोल शिक्षण के लिए पारंपरिक विधियों जैसे व्याख्यान पाठ्यपुस्तक विधि उपयोग करते हैं।

जानी (2000) ने माध्यमिक विद्यालयों में भूगोल की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया और पाया कि 50 प्रतिशत शिक्षक जो भूगोल विषय पढ़ाते हैं। उनके पास शिक्षा में स्नातक या इसके समकक्ष उनके पास कोई उपाधि नहीं है। 77 प्रतिशत शिक्षक भूगोल का शिक्षण व्याख्यान विधि के द्वारा कराते थे। जिसमें वे किसी प्रकार की सहायक सामग्री का उपयोग नहीं करते थे। इस शोधों से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में विद्यालयों में आम तौर पर परम्परागत विधि का प्रयोग भूगोल जैसे विषय के अध्ययन के लिए किया जा रहा है।

***असिस्टेंट प्रोफेसर, जबलपुर पब्लिक कालेज, करमेता, जबलपुर**

परम्परागत विधि में शिक्षक मुख्य और छात्र गौंण भूमिका अदा करता है इस विधि में शिक्षक क्रिया शील रहता है। जबकि बालक निष्क्रिय श्रोता के रूप में परिवतर्तित हो जाता है। परंतु यह विधि भूगोल जैसे विषय को अरूचिकर बना देने में कोई कसर नहीं छोड़ता है तथा विद्यार्थियों को भूगोल से संबंधित तथ्यों को रटने के सिवाय कोई चारा नहीं रहता है। जो उन्हें भूगोल विषय में पास तो करा देता है परंतु उनके ज्ञान में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध नहीं होता है।

क्या परम्परागत विधि भूगोल जैसे विषय के अध्यापन के लिए उपयुक्त है ?

पोक्षें (1993) ने अपने शोध में पाया कि भूगोल की संकल्पनाओं को पारम्परिक विधि की तुलना में संकल्पनामुखी विधि से ज्यादा अच्छे ढंग से पढ़ाया जा सकता है। तथा संकल्पनामुखी विधि परम्परागत विधि की तुलना में ज्यादा उपयोगी भी है।

शैलजा (1999) ने अपने शोध में पाया कि जहां पर उचित शिक्षण विधि के द्वारा तथा सहायक समाग्री का उपयोग करके बच्चों को भूगोल विषय का ज्ञान दिया जाता है वहां विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान का स्तर ऊंचा था।

भट्टाचार्य (1984) ने भूगोल शिक्षण में विभिन्न प्रकार के मॉडलों की प्रभावशीलता पर शोध किया और पाया कि जिन छात्रों को सप्रत्यक्ष संप्राप्ति प्रतिमान के द्वारा पढ़ाया जाता है। उनकी उपलब्धि उन छात्रों की तुलना में काफी अच्छी थी जिन्हें पारम्परिक विधि से पढ़ाया गया था।

इससे स्पष्ट होता है कि यदि भूगोल का शिक्षण उचित विधि से दिया जाये तो विद्यार्थियों के भूगोल विषय की उपलब्धि में वृद्धि होगी। अत: आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों को भूगोल विषय का ज्ञान इस प्रकार दिया जाये जो उनके भूगोल विषय के ज्ञान में वृद्धि करने के साथ ही उसे मजबूत करने में भी सहायक हो। क्या योजना (विधि) के द्वारा विद्यार्थियों को भूगोल विषय का ज्ञान प्रभावी ढंग से दिया जा सकता है?

योजना (प्रोजेक्ट) विधि एक ऐसी विधि है जिसमें विद्यार्थी किसी समस्या के समाधान की प्राप्ति के लिए शारीरिक एवं मानसिक दोनों क्रियाएं करता है। जिसके कारण विद्यार्थी का पूरा ध्यान अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में लगता है। जिसके कारण योजना (प्रोजेक्ट) विधि से प्राप्त ज्ञान विद्यार्थियों के लिए स्थायी रूप से होता है।

Rahman, Fazalur (2011) ने अपने शोध कार्य में विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर योजना विधि के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि योजना विधि के द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने से विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

GUO, S (2012) ने अपने शोध कार्य में पाया कि योजना विधि का शिक्षकों के प्रदर्शन और विद्यार्थियों के अधिगम पर प्रभाव देखा। क्या योजना विधि का विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर भी प्रभाव पड़ता है।

Cakicm, Yilmaz (2012) ने विद्यार्थियों के विसान उपलब्धि एवं अभिवृति पर योजना आधरित अधिगम का प्रभाव देखा और पाया कि योजना आधारित अधिगम के द्वारा विद्यार्थियों की विज्ञान उपलब्धि एवं अभिवृत्ति में वृद्धि होती हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में भूगोल उपलब्धि पर योजना विधि के प्रभाव देखने का प्रयास किया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य वर्तमान विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है क्योंकि प्राप्त निष्कर्ष भूगोल विषय के शिक्षण को नई दिशा प्रदान करने में सहायता होगी। जिससे विद्यार्थी भूगोल विषय को एक बोझिल विषय के रूप में न लेकर उसका रूचिपूर्वक अध्ययन करेंगे। छात्रों के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए तथा शिक्षकों को उनके उत्तरदायित्व का ज्ञान

कराने के लिए इस अध्ययन का बहुत महत्व है। अगर विद्यार्थियों को भूगोल विषय का ज्ञान रोचक एवं उचित शिक्षण विधि (योजना विधि) से दिया जाये तो विद्यार्थियों की भूगोल विषय के ज्ञान की उपलब्धि में बढ़ोत्तरी होगी। अत: प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि विद्यार्थियों कि भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि एवं योजना विधि के द्वारा शिक्षण का क्या प्रभाव पड़ता है तथा भूगोल जैसे विषय के शिक्षण के लिए परम्परागत विधि एवं योजना (प्रोजेक्ट) विधि में से कौन सी विधि अधिक उपयुक्त है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य -

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना -

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट)विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
2. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
3. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
4. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

5. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
6. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
7. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागतविधि के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

शोध विधि –

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों केा प्राप्त करने के लिए 2 क्वाजी पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रयोगात्मक गुणक प्राकल्प का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श –

सर्वप्रथम उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा एक शासकीय एवं एक अशासकीय विद्यालय का चयन किया गया।शासकीय विद्यालय के कक्षा 8 वीं के 100 विद्यार्थियों का चयन परीक्षण के लिए किया गया। जिसमें से 50 विद्यार्थियों का चयन प्रयोगात्मक समूह एवं 50 विद्यार्थियों का चयन नियन्त्रित समूह के लिए किया गया। अशासकीय विद्यालय के कक्षा 8 वीं के 100 विद्यार्थियों का चयन परीक्षण के लिए किया गया। जिसमें से 50 विद्यार्थियों का प्रयोगात्मक समूह एवं 50 विद्यार्थियों को नियन्त्रित समूह के रूप में लिया गया।इस प्रकार कुल 200 विद्याार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप के किया गया।

उपकरण– स्वनिर्मित प्रश्नावली

1. पूर्व परीक्षण हेतु
2. पश्च परीक्षण हेतु

स्वनिर्मित पाठ योजना–

1. परम्परागत विधि पर आधारित
2. योजना (प्रोजेक्ट) विधि पर आधारित

स्वनिर्मित प्रश्नावली (विद्यार्थियों के भूगोल विषय की उपलब्धि के परीक्षण हेतु)

1. पूर्व परीक्षण हेतु
2. पश्च परीक्षण हेतु

विधि –

प्राप्त आंकड़ों को सारणीबद्ध करने के पश्चात् परिकल्पनाओं की जांच हेतु आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

व्याख्या एवं विश्लेषण-

तालिका क्रमांक 1

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	100	7.69	2.008	16.44	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	100	3.55	1.52		

स्वतंत्रता का अंश 198

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.20

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 1.97

तालिका क्रमांक 1 के अनुसार उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात 16.49 है जो 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 2

शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	50	6.69	1.67	12.51	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	50	3.3	1.25		

स्वतंत्रता का अंश 98

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.63

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 1.98

तालिका क्रमांक 2 के अनुसार शासकीय विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात 21.51 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 3

शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	25	7.04	1.56	9	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	25	3.14	1.32		

स्वतंत्रता का अंश 48

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.68

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.01

तालिका क्रमांक 3 के अनुसार शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं के भौगोलिक ज्ञान की उपलिब्ध पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात का मान 9 है जो कि 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 4

शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर की छात्रों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	25	6.88	1.7	8.416	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	25	3.16	1.15		

स्वतंत्रता का अंश 48

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.68

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.01

तालिका क्रमांक 4 के अनुसार शासकीय विद्यालय के अच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात का मान 8.41 है जो कि 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 5

अशासकीय विद्यालयों केउच्च प्राथमिक स्तर की विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	50	8.42	2.06	12.43	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	50	3.8	1.7		

स्वतंत्रता का अंश 98

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.68
0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.01

तालिका क्रमांक 5 के अनुसार अशासकीय विद्यालय के अच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात 12.43 है जो कि 0.01 के विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 6

अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रयोगिक समूह	25	8.68	1.75	18.66	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	25	3.92	1.74		

स्वतंत्रता का अंश 98

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.68
0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.01

तालिका क्रमांक 6 के अनुसार अशासकीय विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात 19.83 है जो कि 0.01 के विश्वास स्तर सार्थक अंतर है।

तालिका क्रमांक 7

अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर की छात्रों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि हेतु संख्या, मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की सारांश तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता परिणाम
प्रायोगिक समूह	25	8.16	2.36	13.57	सार्थकता अंतर है।
नियंत्रित समूह	25	3.68	1.67		

स्वतंत्रता का अंश 98

0.01 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.68

0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.01

तालिका क्रमांक 7 के अनुसार अशासकीय विद्यालय के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर परम्परागत विधि की तुलना में योजना (प्रोजेक्ट) विधि का सार्थक प्रभाव पड़ता है। जिसका क्रांतिक अनुपात 13.57 है जो कि 0.01 के विश्वास स्तर अंतर है।

निष्कर्ष -

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट)विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।
2. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।
3. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।
4. शासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।
5. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर हैं।
6. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।
7. अशासकीय विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के छात्राओं की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना (प्रोजेक्ट) विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है।

उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि पर योजना विधि एवं परम्परागत विधि के प्रभाव में सार्थक अंतर है। अत: शिक्षा की प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए जहाँ अच्छे छात्रों एवं शिक्षकों की आवश्यकता होती है उत्तम शिक्षण विधि की भी आवश्यकता होती है। शिक्षा के सार्वभोमिकरण को प्राप्त करने के लिए शिक्षा का संख्यात्मक विकास तो हो रहा है लेकिन गुणात्मक विकास कम हो रहा है। छात्रों को परम्परागत विधि से पढ़ाने से उन्हें विषय की उतनी जानकारी नही होती जितनी उनसे अपेक्षा की जाती है। वर्तमान के भूगोल विषय की शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए आवश्यक है। कि इस विषय को विद्यार्थियों को ऐसी विधि से पढ़ाया जाये जिसके

फलस्वरूप विद्यार्थियों में भूगोल विषय की उपलब्धि में बढ़ोतरी हो! योजना विधि के माध्यम से विद्यार्थियों की भौगोलिक ज्ञान की उपलब्धि से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे विद्यार्थियों को उनकी रूचि क्षमता तथा आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा देकर उनकी उपलब्धि स्तर को सुधारा जा सकता है तथा जिसमें विद्यार्थी को भूगोल विषय में उनकी योग्यता एवं प्रयास के अनुरूप सफलता प्राप्त कर सकते है। और उनकी भविष्य की नीव को मजबूत किया जा सकता है। इसके साथ ही शिक्षक भी भूगोल विषय की योजना विधि के माध्यम और रूचिकर विषय के रूप में पढ़ाये जिससे विद्याार्थियों में स्व अधिगम के लिए प्रोत्साहित हो सके।

संदर्भ ग्रंथ -

1. Rahman, F. (2011).Impact of Project Based Method on Performance of Students,Language in india:strength for Today and Bright Hope for Tomorrow,vol.11(2),Pp.394
2. Guo, S. (2012). Project-based learning: an effective approach to link teacher professional development and students learning. Journal of Educational Technology Development and Exchange,vol. 5(2),Pp 41-56.
3. Barnard, H. C. (1953). Principles and Practice of Geography Teaching, London University Tutorial Press, London.
4. Bas, G. (2010).Effects of multiple intelligences supported project-based learning onstudents' achievement levels and attitudes towards english lesson,International Electronic Journal of Elementary Education,vol. 2(3) .Pp.365
5. Babacan, S. (2012). The effect of multiple intelligence theory supported by cooperative learning method on achievement in teaching geography curriculum, H. U. Journal of Education, vol.42, P.212
6. अवस्थी, साधना (2003) - हाई स्कूल के भूगोल विषय के शिक्षक में शिक्षण प्रतिमानों के द्वारा उपलब्धि के परिपेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
7. कपिल, एच. के. (1984) - सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर,
8. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. (1982) - शैक्षिक तकनीकी के मूलधार, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
9. गैरेट, हेनरी ई. (2000-01) - शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग (ग्यारहवाँ संस्करण), कल्याणी पब्लिशर्स पीपी 317-348
10. शर्मा, आर.ए. (2013) - शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया (2013 संस्करण), मेरठ : आर.लाल. बुक डिपो पब्लिकेशन्स पीपी 567-576 एवं 761-780
11. त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2000-01) - रिसर्च मैथ्डोलॉजी (ग्यारहवाँ संस्करण). जयपुर: कॉलेज बुक डिपो पब्लिकेशन्स, पीपी 1-84
12. शर्मा, आर.ए. (2013) - शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया (2013 संस्करण). मेरठ: आर.लाल. बुक डिपो पब्लिकेशन्स, पीपी 567-576 एवं 761-780

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का अध्ययन

*श्रीमति रूपा सिंह**

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया, जिसके लिये जबलपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के 120 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है जिनमें शहरी विद्यालयों के 60 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को एवं ग्रामीण विद्यालयों के 60 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को लिया गया है प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकी गणना मध्यमान, एस.डी तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया। गणना के उपरांत परिणाम स्वरूप यह प्राप्त हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य के प्रति संतुष्टि, ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ पायी गयी है।

प्रस्तावना :- किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। वास्तविक रूप में शिक्षा का आशय है - छात्र, शिक्षक एवं पाठ्यक्रम। तीनों परस्पर एक - दूसरे पर निर्भर है। एक के बगैर दूसरे का अस्तित्व नहीं। शिक्षा व्यवस्था को संचालित करने वाली प्रबंधन इकाई के रूप में प्रशासन नाम की नई चीज जुड़ने से शिक्षा ने व्यावसायिक रूप धारण कर लिया है। समाज में शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, जहां एक ओर वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परंपराओं तथा शिक्षक कौशलों के हस्तांतरण में सहायक होता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों ने सभ्यता के दीप को प्रज्जवलित रखा है। शिक्षक में एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण होने चाहिये। उसके व्यवहार में सहानुभूति, सहयोग, समानता, शिक्षण कला में निपुणता मृदुभाषी एवं संयम आदि गुण हो तो छात्र कक्षा वातावरण में सहज रूप से सब कुछ सीख सकते हैं।

नौकरी से संतुष्टि शब्द आम तौर पर व्यापार प्रबंधन में संगठनात्मक प्रयास में प्रयोग किया जाता है, एक संगठन में परिस्थितियां तभी बिगड़ती हैं जब शिक्षक को कार्य के अनुरूप वेतन एवं सम्मान नहीं मिलता है। इसके विपरीत स्थिति होने पर शिक्षक को नौकरी से संतुष्टि मिलती है।

कार्य मनुष्य की न केवल आर्थिक इच्छा की संतुष्टि के लिये आवश्यक है बल्कि उसकी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आकांक्षाओं को भी पूरा करता है। कार्य का मानव जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि बिना कार्य मानव जीवन के स्तर की कल्पना करना भी असंभव है।

शिक्षक का प्रभाव विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर बहुत पड़ता है और इस कारण ही यह अनिवार्य है कि विद्यालयों में मानसिक रूप से स्वस्थ शिक्षा हो। शिक्षण एक मानव प्रक्रिया है इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव शिक्षक का है। यदि शिक्षक का शिक्षण कार्य प्रभावशाली होता है, तो विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षक की कुशलता एवं संवेगात्मक परिपक्वता विद्यालय के वातावरण को विद्यार्थियों के अनुकूल एवं आनंददायक बना देती है। वहीं दूसरी ओर अकुशल तथा अनुभवहीन शिक्षक विद्यालय के वातावरण को दूषित कर देते हैं।

***सहायक प्राध्यापिका, जबलपुर पब्लिक कालेज, करमेता, जबलपुर**

अत: यह आवश्यक है कि अध्यापन व्यवसाय को तकनीकी व्यवसाय की दृष्टि से विकसित किया जाये। शिक्षकों को वेतन तथा अन्य सुविधाओं में समानता दी जाये तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के पदों एवं पुरस्कारों में उन्हें भी शामिल किया जाए।

चर:- **चर :-** शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय

स्वतंत्र चर :- कार्य संतुष्टि

नियंत्रित चर :- उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकायें

उद्देश्य :-

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का अध्ययन।

(2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

(3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।

परिकल्पना:-

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

(3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न न्यादर्श लिया गया है।

न्यादर्श तालिका

विद्यालय	शिक्षक	शिक्षिकाएँ	योग
शहरी क्षेत्र के विद्यालय	30	30	60
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय	30	30	60
योग	60	60	120

प्रयुक्त उपकरण :- इस शोध कार्य हेतु प्रमोद कुमार द्वारा निर्मित ''शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि'' परीक्षण का प्रयोग किया है।

व्याख्या एवं विश्लेषण:-

तालिका क्रमांक 4.01

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
शहरी	30	22.23	5.69	6.49	0.01 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण	30	14.77	2.90		

स्वतंत्रता के अंश - 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.00

स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.66

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का मध्यमान 22.23 एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का मध्यमान 14.77 है जिनमें 7.56 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 6.49 है जो 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित मान 2.66 से अधिक है।

तालिका में प्रदर्शित मानक विचलनों के मानों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के विद्यालय के शिक्षकों के प्राप्तांकों में ग्रामीण विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक विचलनशीलता है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है, शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य के प्रति संतुष्टि अधिक है।

तालिका क्रमांक 4.02

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
शहरी	30	20.37	5.87	6.49	0.01 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण	30	14.87	2.00		

स्वतंत्रता के अंश - 58

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.00

स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.66

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं का मध्यमान 20.37 एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षिकाओं का मध्यमान 14.87 है जिनमें 5.50 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 6.49 है, जो 0.01 स्तर पर

सार्थकता हेतु निर्धारित मान 2.66 से अधिक है।

तालिका में प्रदर्शित मानक विचलनों के मानो से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों में ग्रामीण विद्यालय के शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक विचलनशीलता है, उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है शहरी विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य के प्रति संतुष्टि अधिक है।

तालिका क्रमांक 4.03

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
शहरी	60	21.35	5.82	8.01	0.01 स्तर पर सार्थक
ग्रामीण	60	14.82	2.47		

स्वतंत्रता के अंश - 118

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 1.97

0.01स्तर पर सार्थकता हेतु मान - 2.60

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का मध्यमान 21.35 एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का मध्यमान 14.82 है, जिनमें 6.53 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 8.01 है जो 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित मान 2.60 से अधिक है।

तालिका में प्रदर्शित मानक विचलनों के मानों से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राप्तांकों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक विचलनशीलता है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है, कि शहरी एवं ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है।

निष्कर्ष :- प्रस्तुत शोध कार्य ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का अध्ययन'' के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार है

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक है। (तालिका क्रमांक 4.01)

(2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों की शिक्षिकाओं की अपेक्षा कार्य शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि अधिक है। (तालिका क्रमांक 4.02)

(3) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं अपेक्षाकृत अपने कार्य से अधिक संतुष्ट है। (तालिका क्रमांक 4.03)

संदर्भ ग्रंथ -

1. भटनागर, ए.बी., डॉ. मीनाक्षी ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन'' सूर्या पब्लिकेशन।
2. गुप्ता, एस.पी. (2006), ''भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
3. राम, पारसनाथ ''अनुसंधान परिचय'', द्वादश संस्करण, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
4. शर्मा, डॉ. आर.ए. (2003), ''शिक्षा अनुसंधान'' आर लाल बुक डिपो, मेरठ।

Ethics & Technology in Education System

*Dr. Urmila Yadav**
*Dr. S.D.Singh***

ABSTRACT

Education is one of the significant factors instrumental to the development of a country. It provides an opportunity to critically reflect upon the social, economic, cultural, moral spiritual and ethical issues facing humanity. It should be transformed to the needs of the time and changing scenario of the world. Technology is a new tool in education that constantly changes and offers new Opportunities for teaching and learning. Even so, old habits are hard to change. Typically, the effects of technology are complex, hard to estimate accurately and likely to have different values for different people at different times. Its effects depend upon people's decisions about development and use. Recent growth of the internet and World Wide Web allows new developments in the style teachers transfer knowledge to their students. The aim of this article was to understand the Concept of Ethics, Computer ethics & ethical challenges in education in terms of students, teachers, and schools and to know how to use technology as a tool of learning and teaching in education system.

Keywords : Ethics, Values, technology, education, internet, students

Objectives :

- Concept of Ethics
- Concept of Computer ethics
- Why Ethics are so important?
- Impact of technology in education
- Ethical Challenges
- How can we Impart Ethics in education
- Conclusion

Introduction : As research and technology are changing society and the style we live, scientists can no longer claim that science is neutral but must consider the ethical and social aspects of their work. We start our lives learning ethics from our parents. Those early lessons stay with us for a very long time if reinforced by society. So what is ethics? It is not the same as morals. It actually describes the character of one's profession or one's religion of practice (Simpson, 2004).

So What are Ethics?- Ethic is a branch of philosophy that deals with the morality; the word ethic has been derived from the Greek word 'ethos' which means character (Pabla, 2011). Aristotle was one of the first great philosophers to define the ethics. To him, ethics was more than a moral, religious or legal

***Principal, KR College, Mathura**
****Assistant Professor, (SOL)Sharda University**

concept. To determine what is ethically good for the individual and for the society, he said, it is necessary to posses three virtues of practical wisdom: temperance, courage and justice (Pabla, 2011).

Why Ethics are so important? The simplest and best answer for this is to save humanity on planet and which means to save our planet, we humans forgetting that we are spoiling everything. The greedy human losing his control, we destroy everything and everyone for the sake of money. Education should not be business, the most important objective of education should be to equip the students with ethical values."Humans are the only living being who pays to live ", of course we cannot say everything is wrong but there is no limit for his act. Ethics in education might bring the change. What kind of ethics we are talking here? According to Rushmore Kidder's research, we are talking about the following ethics in education-

Ethics of justice

Ethic of Critique

Ethic of Care

Ethic of profession

Ethics of Computer : During the mid 1970s, a medical teacher and researcher Walter Maner first separated the term "computer ethics" as a branch of philosophy. During the 1980s, schools started using computers. A decade later, those computers connected to the internet. Not until November 1990 did schools' curricula have any ethical or social applications in regards to the web. These curricula were added because of the Computer Science Accreditation Commission/Computer Science Accreditation Board (CSAC/CSAB) recommendation. According to the Computer Ethics Institute, the curriculum programs should:

- Not use a computer to harm other people
- Not interfere with other people's computer work
- Not use a computer to bear false witness
- Not copy or use any software for which you have not paid
- Not use other people's computer resources without authorization
- Not appropriate other people's intellectual output
- Not snoop around in other people's computer files
- Not use a computer to steal
- Always use a computer to respect other people

Impact of Technology in Education : Technological developments have several impacts on our lives. These impacts economically, socially and interpersonally and educationally affect our daily lives. The economic impact of technology is mostly seen in economically challenged places. It creates a digital divide between poor and rich, rural and urban, developed countries and undeveloped countries. When technology serves as reinforcement between social classes, it makes accessibility to education even harder for the poor. However, the internet provides a good resource for people. For example, distance learning allows Universities to increase their market, while reducing financial demands on student. Because of distance learning, many individuals may access different educational institutions, and may become life

long learners.

Besides these impacts on education there are also some drawbacks. For example in Distance learning, it reduces the face to face interaction between students to students or/and students to teacher.

ETHICAL CHALLENGES :

Challenge of Privacy :

Internet users consider privacy (security) to be one of the important issues. The usage of internet has grown explosively as fast internet connections get cheaper. However, a lot of the internet users (e.g. students) are not aware of the fact that personal information may be revealed when they go online. Anonymous information about users' web-surfing habits might be merged with individual personal information. Online transactions of financial payments, grants, grade reports, and disciplinary actions are necessary for organizations such as universities and banks to function effectively. However, these transactions pose an additional risk to a student's privacy.

For example, when students post their assignments on the net, these assignments may/may not represent students' beliefs, but if the assignment is controversial and if somebody can access it, it can jeopardize future employment or scholarship opportunities. a large number of files through the network and causing the system to crash.

Challenge of Property/Copyright :

Even though technology is a big part of our education system, there is an ongoing debate about who owns online educational materials, professors or the university. Since all the information is stored on the university database, its copyright belongs to the university. However, some faculty may argue that it's their own product of information and the copyright should be theirs. Another debate is that the on-line version of a course may reduce the value of the faculty. So the question is, should the faculty focus on increasing their value to the university, or continue to teach accordance with the new face of educational innovation in order to improve students' critical thinking (Peace & Hartzel, 2002).

Challenge of Netiquette :

One of the main purposes of the internet is to serve as a communication tool. All chat rooms provide easy and cheap access to find friends or just to post ideas about anything. However, this does not give people the right to send offensive pictures or messages to anybody. We know that with today's technology, it is easy to access anybody's messages. By keeping this in mind, students may be less likely to write something or send pictures offensive to others that they will regret later on.

Challenge of Vandalism :

Protecting the computers and network while using technology is very important in school settings, for everybody uses these tools. Everybody should be responsible for protecting technological instruments. Teachers should teach students careful use of equipment, resources and facilities. In November 2004, the University of Iowa Department of Psychology had to deal with vandalism. A group of people who called themselves advocates of animal rights destroyed many research materials, and computers and removed more than 400 animals from the Spence Laboratories. This act of vandalism cost the university thousands of dollars, which had to be paid from students' tuition.

Challenge of inappropriate sites :

Access of inappropriate sites Technology should not primarily be used as a tool to reward students who finish their class work the fastest; instead it should be utilized as an opportunity for all students to engage in its interactive uses. In the internet environment, there are so many inappropriate places students can access. The Children's Internet Protection Act requires public schools and libraries to take steps to prevent minors from accessing certain materials on cyberspace. Many filtering systems protect children from these inappropriate websites. Inclusion of technology in any course has great potential to increase learning and expand students' knowledge. Educators have argued that free access to a wide range of information will be beneficial, as society moves into an electronic future. Another side of the issue is that the increased use of technology is actually widening the gap between the "haves" and "have nots." This "digital divide" implies unequal access of some sectors of the community to information and communications technology and to the acquisition of necessary skills. The main reason for the digital divide is the cost to access information on the net.

Challenge of Accuracy & Trust wordiness :

Although there is a wide realm of information available on the net, there is no agency monitoring **"truth or accuracy of information."** There is no restriction on false information. Teachers should inform their students about the situation to protect them from citing or reading incorrect information. Inaccurate information can cause confusion in society, and even medical and legal issues.

How can we Impart Ethics in education System?

Although the use of internet technology in education is fairly new, this emerging field is being used more widely. Educators can take more advantage of these innovations than before by incorporating them into their educational practices and to adapt to changes taking place in society. Marry (2000)

Responsibility of Teacher : Teachers are important elements in the education system. Since they are responsible for the development of students, teachers need to be aware of ethical responsibilities. Teachers should be good role models for students because students learn by examples. Being a good model requires caring, compassion, sensitivity, commitment, the pursuit of truth and respect of self and others, honesty, trustworthiness, integrity, equality, impartiality, fairness, and justice (Bodi, 1998).

Teachers should teach students the possible harm of not following the ethical rules while using the internet, and guide them through their use of the internet at a level appropriate to their age. This guidance should allow students to ask themselves:

- Is it illegal?
- Does it violate ethics codes?
- Does it bother your conscience?
- Does it look as through someone is likely to be harmed? (Bodi, 1998)

The responsibility of teachers should be to :

Teach students not to use or pass personal information to others.

- Inform students how they can benefit from respecting the privacy of others
- because someday their own information may be at risk.

- Remind students not to take others' work directly or copy others' work from the internet as their own, for example, downloading illegal software, music and movies.
- Remind students to be respectful to others when communicating on the internet, not using offensive words and pictures.
- Help students to develop positive attitudes toward technology.
- Outline explicit rules regarding access to content on the internet (Berson et al, 1999, Simpson, 2004, and Bennett, 2005).

Teachers are in a unique position to show students how to use technology properly. According to the International Society for Technology in Education, teachers should follow performance indicators for social, ethical, legal, and human issues. These areModel and teach legal and ethical practices related to technology use. Apply technology resources to enable and empower learners with diverse backgrounds, characteristics, and abilities. Identify and use technology resources that affirm diversity. Promote safe and healthy use of technology resources.Facilitate equitable access to technology resources for all students (Bennett, 2005, p.38).

Responsibility of schools- The responsibility of schools is also increasing.

After proper training in technology integration, teachers can engage students effectively in technology classrooms. At this point, schools should make in-service workshops for teachers to develop these skills. Therefore, the role of schooling is also changing. Schools also can provide a different learning environment to people, such as distance learning through the use of the internet; it would help people to pursue their studies in their own time and location. Schools should have rules and obligations to help students learn how to use the internet in a safe and responsible manner. For example, filtering is important for school and home computers. Teachers and parents should work together and discuss what kinds of restrictions are more efficient for students. Some people think we should protect our children from harmful, offensive and inappropriate information on the web.

As we can see, sometimes the technology is not logical. Schooling should help students learn how to think critically about technology issues, not what to think about them. Teachers can help students acquire informed attitudes about the various technologies and their social, cultural, economic, and ecological consequences. When teachers do express their personal views, they should also acknowledge alternative views and fairly state the evidence, logic, and values which allow that other people have those views.

In classroom teaching, technology changes the learning environment. It enables teachers to become guides as well as facilitators. It also permits students to become self-directed learners who collaborate with their friends and technology. Technology helps deliver lessons more effectively if used appropriately according to students' needs with the teacher serving as facilitator and mentor.

Conclusion :

Our aim is to promote the development of students' critical thinking and analysis skills. The overall goal of ethical principles is to protect and advance human values. Although the internet makes available a wealth of useful, educational information to the student, it also provides access to unwelcome information, such as inappropriate pictures and chat rooms. Technology will play an Increasingly important role in the future. Our responsibility is to prepare students for this reality. The form of schooling is changing

because of all the technology being infused into education. Technology development also facilitates more individualized instruction for each student. From the educational perspective, teachers need to know how to use technology as a tool because although many students use computers at home, they generally do not know how to use them as tools for learning. Teachers should have enough background to decide which technologies to use, and how to use them. Part of being prepared for that responsibility requires knowing how technology works, including its alternatives, benefits, risks, and limitations. On the other hand, students should learn how to ask important questions about the immediate and long-range impacts that technological innovations and the elimination of existing technologies are likely to have.

REFERENCES -

- Berson, M. J.; Bersn, I. R., & Ralston, M. E. (1999). A response to "separating wheat from chaff". Social Education, 63(3), 160-161.
- Bodi, S. (1998). Ethics and information technology: some principles to guide students. The Journal of Academic Librarianship, 24(6), p.469.
- http://www.ebscohost.com
- Callister, T. A. Jr. & Burbules, N. C. (2004). Just give it to me straight: A case against filtering the internet. Phi Delta Kappan, 85 (9), p648.
- Computer Ethics Institute. A project of the Brookings Institution.
- http://www.brook.edu/its/cei/cei_hp.htm
- International Society for Technology in Education. Educational technology standards and performance indicators for all teachers.
- http://cnets.iste.org/teachers/t_stands.html

A Comparative Study Of Educational Interest Of Students Having Visual & Hearing Impairment

Dr. Dimple Bhalla*

ABSTRACT

This study throw light on the educational interest of visually and hearing impaired students of high school and higher secondary level of Jabalpur District. A self-made questionnaire is used to find the educational interest of visually and hearing impaired girls and boys of high school and higher secondary level by using survey method. In the present study sample of 69 girls and 76 boys having visual impairment and 53 girls and 57 boys having hearing impairment is used. The objective of the study is to compare the educational interest of students having visual and hearing impairment. For this purpose survey method is used and purposive sampling has been done.

Key words : Educational Interest; Visual Impairment; Hearing Impairment.

Introduction : More than 500 million people in the world are disabled as the consequence of mental, physical or other sensory impairment. All children have the right to be educated regardless of their disability or learning difficulty because education is a human right. There is no dearth of laws and schemes made by government in the country to promote education of physically challenged children. Central and state governments are vigorously preparing policies to provide free education to all the physically challenged children till the age of 18 years.

They have also made efforts in promoting integration of physically challenged children in normal schools under the Persons with Disabilities Act 1995 known as PD Act. Government has made comprehensive education schemes to provide various facilities to remove architectural barriers of physically challenged, supply free books, uniform and other materials which support education, grant scholarship, restructure curriculum and modify the examination pattern for making education easily accessible to children with special needs.

Education is a powerful instrument of social change and often initiates upward movement in the social structure. Thereby, it helps to bridge the gap between different sections of the society. The education system in the country has undergone major change over the last few years; result in better provision of education and better educational practices. The Kothari Commission, the first education commission of independent India observed that - "the education of the handicapped children should be an inseparable part of the education system". In the field of education, perceptions towards children and adults with disabilities have changed significantly. The greatest challenge of today is to ensure that all schools are readily and fully accessible to children with disabilities as to the non-disabled.

*Assistant Professor, Dept. of Education G.S. College of Commerce & Eco., Jabalpur M.P.

Like normal students, physically challenged students also have varying educational interest. Educational interest is the feeling of a student that determines what subject or field he or she likes the most in the education. Educational interest of a person do not always matches with their ability. Thus, ability of an individual plays an important role in determining the educational interest of the children. The teachers, their method of teaching, school environment, family environment, parents, peer group students & other members of society contributes in developing educational interest of physically challenged students. As we all know family is the first teacher for every child and thus it the prime duty of family of physically challenged children to make efforts to understand the capability of their children and motivate them to participate in all educational activities like normal children and don't show pity on them. It is the family who can help them to make their own identity and make them feel that they are also worth as aperson like other members of the society.

Our senses are the gateways to learning. We acquire any information or knowledge through experiences we gain through the senses like hearing, seeing, smelling, tasting & touching. Thus in physically challenged children like visually and hearing impaired students difficulty in understanding occurs due to lack of senses seeing and hearing respectively. It doesn't mean that they cannot attain education as other normal children. The only difference is that they need special assistance & aid or appliances for learning. Visually impaired students acquire knowledge either by listening to anyone or by reading books or study material written in braille or by using talking computer terminal, optacon etc. Similarly children having hearing impairment face a communication disability as neither can they hear nor they can speak and so they try to understand others and express their feelings through sign and gestures or by writing things on paper. Thus the inability to perform normal task without any assistance seriously affects the social and educational development of physically challenged children.

Teachers need to make special consideration while dealing with physically challenged students during teaching. For treating such children, teacher need to make close collaboration with the students, the students' family and the psychologist who can guide the way they have to follow while teaching them in special school. While teaching teacher need to be sensitive about the social, academic and emotional challenges a child with visual and hearing impairment faces every day. Another efforts that need to be taken by the teachers is that they should "learn to read" the child's facial expressions in order to analyze the problems and needs of these children and provide them necessary guidance needed for their development.

Researches have shown that visually impaired students have more interest towards music, arts, languages and literature whereas the hearing impaired students have wider range of educational interest including interest in science and mathematics along with music, arts, literature and languages. The variation in the educational interest is observed due to lack of trained teachers and aids & appliances that can support the study of subjects like science and mathematics for visually impaired students.

Other factors that causes low educational interest in physically challenged students is in appropriate school environment, lack of trained teachers, lack of family support & peer group support, lack of confidence due to inability in carrying out their normal life activities without any support etc.

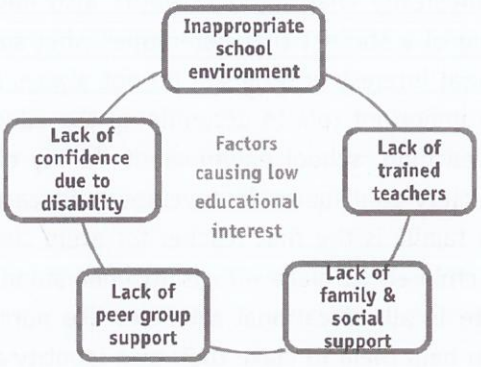

Objectives :

- To compare the educational interest of girls having visual and hearing impairment.
- To compare the educational interest of boys having visual and hearing impairment.
- To compare the educational interest of boys and girls having visual impairment.
- To compare the educational interest of boys and girls having hearing impairment.

Hypothesis :

- There is no significant difference in the educational interest of girls having visual and hearing impairment.
- There is no significant difference in the educational interest of boys having visual and hearing impairment.
- There is no significant difference in the educational interest of boys and girls having visual impairment.
- There is no significant difference in the educational interest of boys and girls having hearing impairment.

Sample of Study :

In the present study sample of 145 visually impaired (69 girls & 76 boys) and 110 hearing impaired (53 girls & 57 boys) students of high school and higher secondary level is taken from Jabalpur district. Survey method is used to find the educational interest of visual and hearing impaired students.

Tools Used :

Self-made Educational Interest Scale is used to find the educational interest of students having visual and hearing impairment.

Statistical Method Used :

The collected data is treated with mean, standard deviation and critical ratio to find the result.

Findings :

Table1: Result of educational interest of girls having visual and hearing impairment.

Group	No.	Mean	S.D	δd	C.R	p-value
Girls having Visual Impairment	69	63.98	11.22	1.98	0.131	0.05
Girls having Hearing Impairment	53	64.24	10.58			

Degree of freedom -120

Minimum value of significance at 0.01=2.62
Minimum value of significance at 0.05=1.98

From the above table it is clear that the mean of scores of educational interest of girls having visual impairment (63.98) is lower than the girls having hearing impairment (64.24).

The value of standard deviation for the two groups of girls having visual and hearing impairment are 11.22 and 10.58 respectively, which suggest that the variability among the educational interest of girls having visual impairment is slightly higher as compared to the girls having hearing impairment.

To determine the significance of mean difference statistically, the value of critical ratio was worked out to be 0.131. The value of critical ratio (0.131) is lower than 1.98, the minimum value of significance at 0.05 level, which suggest that there is statistically no significant difference between the educational interest of two groups of physically challenged girls.

On the basis of the above result, it can be inferred that, the educational interest of group of girls having hearing impairment is slightly better as compared to the group of girls having visual impairment.

Graph 1: Comparison of Girls having visual & hearing impairment.

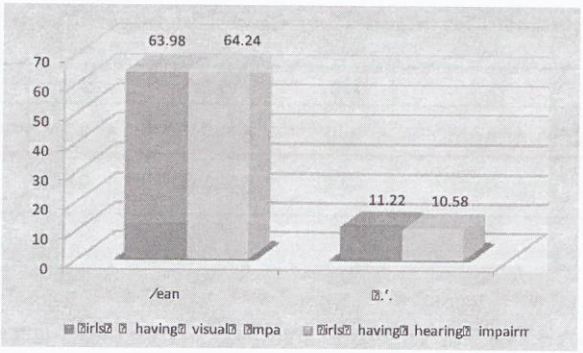

Table2 : Result of educational interest of boys having visual and hearing impairment.

Group	No.	Mean	S.D	δd	C.R	p-value
Boys having Visual Impairment	76	65.26	11.9 5	1.93	0.113	0.05
Boys having Hearing Impairment	57	65.17	10.29			

Degree of freedom -131

Minimum value of significance at 0.01=2.62
Minimum value of significance at 0.05=1.98

From the above table it is clear that the mean of scores of educational interest of boys having visual impairment (65.26) is higher than the boys having hearing impairment (65.17).

The value of standard deviation for the two groups of boys having visual and hearing impairment are 11.95 and 10.29 respectively, which suggest that variability among the educational interest of boys having visual impairment is slightly higher as compared to the boys having hearing impairment.

To determine the significance of mean difference statistically, the value of critical ratio was worked out to be 0.113. The value of critical ratio (0.113) is lower than 1.98, the minimum value of significance at 0.05 level, which suggest that there is statistically no significant difference between the educational interest of two groups of physically challenged boys.

On the basis of the above result it can be inferred that, the educational interest of group of boys having visual impairment is better as compared to the group of boys having hearing impairment.

Graph 2 : Comparison of boys having visual & hearing impairment.

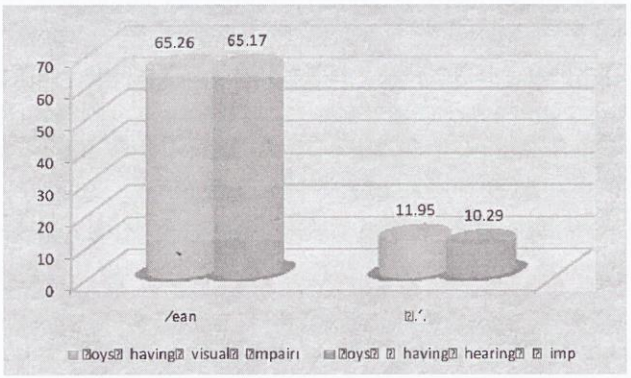

Table3 : Result of educational interest of girls and boys having visual impairment.

Group	No.	Mean	S.D	δd	C.R	p-value
Girls having Visual Impairment	69	63.98	11.22	1.92	0.66	0.05
Boys having Visual Impairment	76	65.26	11.95			

Degree of freedom - 143

Minimum value of significance at 0.01= 2.61
Minimum value of significance at 0.05= 1.98

From the above table it is clear that the mean of scores of educational interest of girls having visual impairment (63.98) is lower than the boys having visual impairment (65.26).

The value of standard deviation for the group of girls and boys having visual impairment are 11.22 and 11.95 respectively, which suggest that the variability among the educational interest of girls having visual impairment is slightly lower as compared to the boys having visual impairment.

To determine the significance of mean difference statistically, the value of critical ratio was worked out to be 0.66. The value of critical ratio (0.66) is lower than 1.98, the minimum value of significance at 0.05 level, which suggest that there is statistically no significant difference between the

educational interest of girls and boys having visual impairment.

On the basis of the above result, it can be inferred that, the educational interest of group of boys having visual impairment is better as compared to the group of girls having visual impairment.

Graph 3 : Comparison of girls & boys having visual impairment.

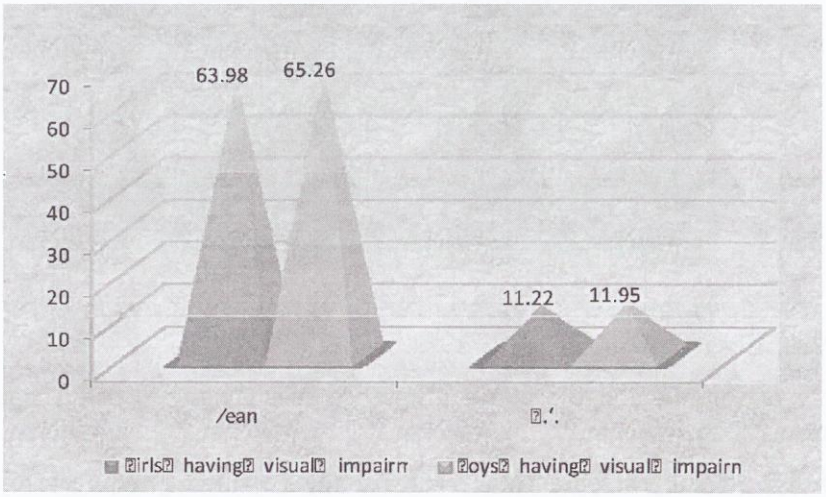

Table4 : Result of educational interest of girls and boys having hearing impairment.

Group	No.	Mean	S.D	δd	C.R	p-value
Girls having Hearing Impairment	53	64.24	10.58	1.99	0.46	0.05
Boys having Hearing Impairment	57	65.17	10.28			

Degree of freedom - 108

Minimum value of significance at 0.01= 2.63
Minimum value of significance at 0.05= 1.98

From the above table it is clear that the mean of scores of educational interest of girls having hearing impairment (64.24) is lower than the boys having hearing impairment (65.17).

The value of standard deviation for the group of girls and boys having hearing impairment are 10.58 and 10.29 respectively, which suggest that the variability among the educational interest of girls having hearing impairment is slightly higher as compared to the boys having hearing impairment.

To determine the significance of mean difference statistically, the value of critical ratio was worked out to be 0.46. The value of critical ratio (0.46) is lower than 1.98, the minimum value of significance at 0.05 level, which suggest that there is statistically no significant difference between the educational interest of girls and boys having hearing impairment.

On the basis of the above result, it can be inferred that, the educational interest of group of boys having hearing impairment is better as compared to the group of girls having hearing impairment.

Graph 4: Comparison of girls & boys having hearing impairment.

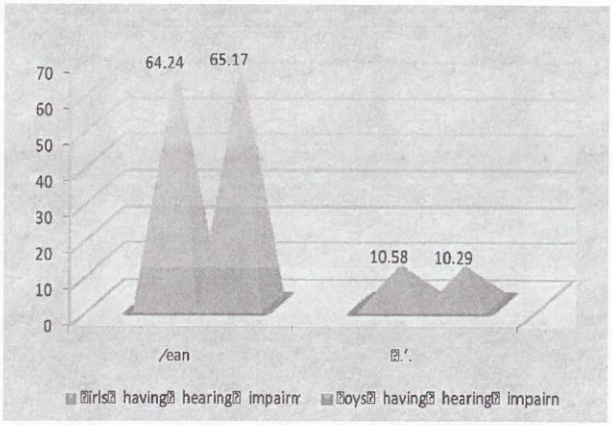

Discussion on the result

The possible reasons behind the above difference seen among visually impaired and hearing impaired groups are as follows -

- **No choice in subject selection -** For visually impaired group 'arts' is the only option available after 10th class in M.P. whereas for group having hearing impairment other options (science & commerce) are also available.
- **No use of new technology -** Special schools for visually impaired group are not using new technology i.e. assistive technology which can make computer and internet accessible for their student's personal and professional growth so that they can compete with group having hearing impairment.
- **Lack of awareness -** Lack of awareness about the free aids and appliance (for improving vision and hearing) provided by the government is seen in head of the institutions as a result of which students cannot avail its benefits.
- **Lack of communication skill -** Girls having visual and hearing impairment hesitate and face difficulty in interacting with normal people which results in development of inferiority complex in them.
- **Inefficient teachers -** Teachers due to lack of understanding towards needs of physically challenged students are not handling them properly, as a result of which they are unable to develop educational interest in them. They are also not using new technology of teaching to attract their interest towards studies.
- **Lack of support & motivation -** Parents being illiterate does not support and motivate their children for higher educational.
- **Low self-confidence -** Boys having locomotors impairment have low self- confidence due to their physical limitations which restrict and impair them in their primary functional capacities.

Conclusion :

1. The educational interest of group of girls having hearing impairment is better than the group of girls having visual impairment as the mean of scores of educational interest of group of girls having hearing impairment is higher than group of girls having visual impairment. (Table No. 1)
2. There is no significant difference in the educational interest of group of girls having visual and hearing impairment as the calculated value of critical ratio is lower than the minimum value of significance at 0.05 level. (Table No. 1)
3. The educational interest of group of boys having visual impairment is better than the group of boys having hearing impairment as the mean of scores of educational interest of group of boys having visual impairment is higher than group of boys having hearing impairment.(Table No. 2)
4. There is no significant difference in the educational interest of group of boys having visual and hearing impairment as the calculated value of critical ratio is lower than the minimum value of significance at 0.05 level. (Table No.2)
5. The educational interest of group of boys having visual impairment is better than the group of girls having visual impairment as the mean of scores of educational interest of group of boys having visual impairment is higher than the group of girls having visual impairment. (Table No. 3)
6. There is no significant difference in the educational interest of group of girls and group of boys having visual impairment as the calculated value of critical ratio is lower than the minimum value of significance at 0.05 level. (Table No. 3)
7. The educational interest of group of boys having hearing impairment is better than the group of girls having hearing impairment as the mean of scores of educational interest of group of boys having hearing impairment is higher than the group of girls having hearing impairment. (Table No. 4)
8. There is no significant difference in the educational interest of group of girls and group of boys having hearing impairment as the calculated value of critical ratio is lower than the minimum value of significance at 0.05 level (Table No. 4)

Suggestions :

It is the responsibility of government and every section of the society associated with the physically challenged children i.e. parents, peer group, school management, teachers to provide additional motivation, emotional support, physical assistance and financial support to not only visually and hearing impaired students but also to other physically challenged students so that the interest can be developed towards education and they can complete their education without any problem.

References :

- Advani, L.(2002); "Education: A fundamental riht of every child regardless of his/her special needs", Journal of Indian Education, Special Issue on Education of Learners with Special needs, New Delhi, NCERT.
- Charles, J.P. & Steve, B., (1986); "Counselling the Physically Disabled student: Accepting the Challenge", The Journal of Humanistic Education and Development, Vol. 24, Issue 3, Pg. 166-124.
- Garatte, H., E., (2005); "Statistics in Psychology and Education", Paragon International Publication, New Delhi.
- Gupta, S., (1995); "Overcoming Disability-Health for the Millions", VHAI, New Delhi, Vol. 21, No. 6.
- Milsom, A., (2006); "Creating Positive School Experience for Students with Disability", Professional School Counselling Journal, Oct 2006, 10(1), Pg 66-72.
- Munyi, C., W., (2012); "Past and Present Perceptions towards Disability: A Historical Perspective", Disability Studies Quarterly Journal, Vol. 32, No.2.
- Rajkunwar, S. & Others (2013); "Adjustment and Academic Achievement of Visually Handicapped School Children in Assam", International Journal of Science & Research, ISSN(online): 2319-7064.
- Tavakol,Khosrow& Others, (2008); "Parental Anxiety and Quality of life in Children with Blindness in Ababasire Institution", IJNMR 2008, 13(4), Pg 141-144.

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुधा द्विवेदी *

शोध सार

शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास और उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। राष्ट्र और समाज की उन्नति व विकास भी शिक्षा पर ही आधारित हैं। राष्ट्र और समाज के कल्याण के लिये यह अत्यंत आवश्यक है कि देश के नागरिक योग्य, कुशल, स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर व देशप्रेमी हों। सामाजिक रूप से समाज सेवा की भावना से ओत प्रोत हों, संवेगात्मक रूप से संतुलित हों, राजनैतिक रूप से चैतन्य व जागरूक हों। अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से विश्व बंधुत्व की भावना में विश्वास रखते हों; ऐसे नागरिकों का निर्माण शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है।

''भारत के भाग्य का निर्माण विद्यालय की कक्षाओं में हो रहा है।'' कोठारी कमीशन ने 1964-66 के मध्य अपने प्रतिवेदन में इस उक्ति से अपना कथन प्रारम्भ किया था।

शिक्षा राष्ट्र की रीढ़ है और शिक्षक शिक्षा प्रणाली का प्रमुख अंग है। शिक्षण की सफलता शिक्षक की योग्यता पर निर्भर करती है। प्रत्येक शिक्षक के अपने विचार, मान्यताएँ, सिद्धांत और आदर्श होते हैं; चाहे वह आशावादी हो या निराशावादी, सकारात्मक हो या नकारात्मक, भौतिकवादी हो या आदर्शवादी। शिक्षक के इन आदर्शों का शिक्षा की विविध समस्याओं, शिक्षार्थी, शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण, शिक्षा प्रणाली, विद्यालय की सामाजिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द *- विद्यालयीन शिक्षिका, महाविद्यालयीन शिक्षिक, भूमिका अंतर्द्वंद*

प्रस्तावना :- राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों के कारण वर्तमान में भौतिक वादिता को अत्यधिक बल मिल रहा है, इसके कारण परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं के साथ में अन्य सुख सुविधाओं वाली आवश्यकता बढ़ती जा रही है। परिवार में बच्चों के लिए आकांक्षा के स्तर उच्च होते जा रहे हैं और संसाधनों एवं आर्थिक स्त्रोतों की कमी के कारण यह स्थिति उत्पन्न हो गई है कि महिलाएँ परिवार से बाहर निकल कर परिवार के आर्थिक संसाधनों के विकास में योगदान दें। जिसका अर्थ यह हुआ कि परिवार की महिलाएँ कोई नौकरी या व्यवसाय करें और बहुत सी महिलाएँ वर्तमान में व्यवसाय में लग गई हैं।

इतना सब होने के उपरांत भी भारतीय परिवार के मूलभूत ढाँचे में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है क्योंकि परिवार में बच्चों के लालन-पालन का उत्तरदायित्व माता के काम काजी होने के बावजूद भी उन्हीं को समझा जा रहा है। इससे कामकाजी माताओं को दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ रहा है, एक ओर जहाँ उनका आर्थिक संसाधनों के जुड़ाने में कार्यक्षेत्र का दबाव उन पर बढ़ गया है इतना सबके साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में उनकी भूमिकाओं में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। इन सबके कारण इनमें जो दबाव बढ़ रहा है उसके कारण कई बार ऐसा लगता है कि कभी तो परिवार का दबाव कार्यक्षेत्र पर पड़ता है और कभी कार्यक्षेत्र का परिवार पर। इससे इन भूमिकाओं में अन्तर्द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है जिससे दोनों

***अध्यक्ष, शिक्षा संकाय (बी.एड.), श्री गुरू तेगबहादुर खालसा महाविद्यालय, जबलपुर**

जगह के कार्य प्रभावित होते हैं क्योंकि दो महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों में संतुलन बनाए रखना कभी-कभी कठिन हो जाता है और तेजी से बदलते परिवेश में यह वास्तव में कठिन भी हो गया है।

भूमिका अन्तर्द्वंद्व के प्रत्यय को समझने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि भूमिका के अर्थ को समझकर उसके साथ अन्तर्द्वंद्व को जोड़ा जाए।

भूमिका अन्तर्द्वंद्व -

भूमिका अन्तर्द्वंद्व उन परिस्थितियों में होता है जहाँ भूमिकाकर्ता (ऐक्टर) को संघर्षात्मक या प्रतिद्वंदात्मक प्रत्याशाओं का सामना करना पड़ता है। जब एक ही भूमिका के अंतर्गत विभिन्न तरह के प्रतिद्वंदात्मक प्रत्याशाओं का सामना करना पड़ता है, तो इससे व्यक्ति में जो, भूमिका संघर्ष होता है उसे ''अंत: भूमिका अन्तर्द्वंद्व संघर्ष'' कहा जाता है, जैसे विश्वविद्यालय में कुलपति से विभिन्न समूहों जैसे - शिक्षकों, छात्रों एवं कर्मचारियों की प्रत्याशाएं अलग-अलग होती हैं जिन्हें कुलपति को पूरा करना होता है इससे कुलपति को होने वाला भूमिका अन्तर्द्वंद्व, 'अंत:भूमिका अन्तर्द्वंद्व' है। परंतु जब किसी व्यक्ति को एक से अधिक भूमिका करने में प्रतिद्वंद्वात्मक प्रत्याशाओं का सामना करना पड़ता है तो इससे उत्पन्न होने वाला भूमिका अन्तर्द्वंद्व को ''अंतर भूमिका अन्तर्द्वंद्व'' की संज्ञा दी जाती है। जैसे एक ऑफिसर सिर्फ अपने दफ्तर का ऑफीसर ही नहीं होता है बल्कि अपने बच्चों का पिता भी होता है। ऐसी परिस्थितियों में भूमिका संघर्ष स्पष्टत: होगा जिसे अंतर भूमिका संघर्ष की संज्ञा दी जाती है।

भूमिका द्वंद्व से भी व्यक्ति में आत्महत्या की प्रेरणा उत्पन्न होती है। प्रत्येक व्यक्ति को समाज में तरह-तरह की भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है, जैसे एक व्यक्ति को एक पति, पुत्र, सहकर्मी आदि की भूमिका निभानी पड़ सकती है। ऐसी भूमिकाएं एक दूसरे के साथ संघर्ष उत्पन्न कर सकती हैं और व्यक्ति में तनाव उत्पन्न कर सकती हैं। स्टैक 1987 तथा इस्टीलियन 1985 द्वारा किए गए शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि जो महिलाएं घर से बाहर कोई नौकरी करती हैं उनमें प्राय: भूमिका द्वंद्व होता है क्योंकि इनकी पारिवारिक माँग तथा नौकरी की जरूरतें प्राय: एक-दूसरे से टकराती हैं, परिणामत: महिलाओं में आत्महत्याओं का प्रयास तुलनात्मक रूप से अधिक होता है।

अन्तर्द्वंद्व चेतन तथा अचेतन दोनों स्तरों पर हो सकते हैं, परंतु अधिकांश अन्तर्द्वंद्व चेतन स्तर पर ही होते हैं, अचेतन स्तर के अन्तर्द्वंद्व अधिकांशत: मानसिक रोगियों में ही अधिक पाये जाते हैं। अन्तर्द्वंद्व में दो इच्छाएँ, महत्वाकांक्षाएँ कतिपय, आदर्श और विश्वास आदि कुछ भी हो सकते हैं। परंतु यह अन्तर्द्वंद्व में उपस्थित प्रेरणाओं से संबधित होते हैं। उपस्थिति प्रेरणाओं से संबंधित प्रत्युत्तर तात्कालिक भी हो सकते हैं।

साहित्य समीक्षा -

जयरमन्ना (2001) ने अपने अध्ययन ''**प्राथमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षकों के कार्य उन्मुखीकरण के सम्बंध में**'' द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन कर निष्कर्ष दिया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व कार्य उन्मुखीकरण में धनात्मक सम्बंध था अर्थात् शिक्षक की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव शिक्षा की गुणवत्ता पर पड़ता है। शिक्षक के द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण एवं समुचित विकास किया जाता है ताकि छात्र न केवल व्यक्तिगत उन्नति करे वरन् देश की उन्नति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के योग्य हों।

इस महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करने वाले शिक्षक की स्थिति वर्तमान में अत्यंत सोचनीय है। वर्तमान में शिक्षक को संविदा व शिक्षा कर्मी के रूप में अस्थायी रूप से नियुक्त किया जा रहा है। बेरोजगारी की समस्या के कारण कई उच्च

शैक्षणिक योग्यता अर्थात् स्नातक, बी.एड., स्नातकोत्तर, एम.एड., पी.एच.डी., एम.फिल. वाले शिक्षक निम्न पदों पर कार्य कर रहे हैं। सम्भवत: इस कारण उन्हें कार्य से असंतुष्टि है, परिणामत: उनके जीवन में भी असंतोष उपजा है जिसका प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है।

शकुन्तला (2001) ने शिक्षक योग्यता, भावात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य के सम्बंध में उनके समायोजन का अध्ययन कर परिणाम दिया कि शिक्षकों की शिक्षण योग्यता, भावात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य का समायोजन के साथ धनात्मक सहसम्बंध था।

कौर एवं पुनिया (2008) द्वारा हरियाणा के हिसार जिले की कामकाजी महिलाओं पर किये गये अध्ययन में अवलोकन किया गया कि सर्वाधिक प्रतिशत उन कामकाजी महिलाओं का है जो आर्थिक आवश्यकताओं (50%) के कारण नौकरी करती हैं, इसके पश्चात् वे महिलाएँ हैं (23%) जो अपने आर्थिक स्तर में वृद्धि करना चाहती हैं, 11 प्रतिशत महिलाएँ अपनी शिक्षा का सही उपयोग करने के लिए, 9 प्रतिशत महिलाएँ स्वतंत्र आय हेतु तथा शेष महिलाएँ विभिन्न उद्देश्यों के कारण कार्य करती हैं।

उद्देश्य -

1. विद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व सम्बंधी परिणामों का अध्ययन करना।
2. महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व सम्बंधी परिणामों का अध्ययन करना।
3. विद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व सम्बंधी परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध विधि -

विद्यालय एवं महाविद्यालय की 25-25 शिक्षिकाओं का योजना के अनुसार न्यादर्श के लिए चयन किया गया। सर्वप्रथम शिक्षिकाओं से मधुर संबंध स्थापित किया। इसके पश्चात् शिक्षिकाओं को 'कार्यरत महिलाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व मापनी' दिया और इसमें ऊपर लिखे हुए निर्देशों को पढ़ने को कहा। इस परीक्षण का प्रशासन व्यक्तिगत रूप से किया गया। इसके पश्चात् फलांकन कुंजी की सहायता से फलांकन किया गया।

परिकल्पना -

1. विद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व में सार्थक अंतर नहीं है।
2. विद्यालयीन शिक्षिकाओं और महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व में समानता है।

परिणाम व विश्लेषण -

विद्यालय एवं महाविद्यालय में कार्यरत् शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व का अध्ययन करने हेतु लिए गए न्यायदर्श पर कार्यरत् महिलाओं के लिए भूमिका अन्तर्द्वंद्व मापनी को प्रशासित किया। इसके पश्चात् प्रशासित करने के उपरांत प्राप्त परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार है:-

1. विद्यालय में कार्यरत् शिक्षिकाओं के परिणामों का विश्लेषण
2. महाविद्यालय में कार्यरत् शिक्षिकाओं के परिणामों का विश्लेषण

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के परिणामों की व्याख्या :-

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद्व के अध्ययन हेतु 'कार्यरत महिलाओं के लिए भूमिका अन्तर्द्वंद्व मापनी' से प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर केंद्रीय-प्रवृत्ति, मानक-विचलन तथा टी-मान संबंधी परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार है:-

सारणी क्रमांक 1

विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व के परिणामों को दर्शाती हुई तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	सार्थकता
विद्यालयीन शिक्षिकाएं	25	42.30	3.42	0.25	सार्थक अंतर नहीं है।
महाविद्यालयीन शिक्षिकाएं	25	42.00	4.62		

स्वतंत्रता के अंश = 48

0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए मान - 2.01

0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए मान - 2.68

इस श्रेणी के वर्गीकरण के आधार पर विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिका के भूमिका अन्तर्द्वंद्व के मध्यमान तथा मानक विचलन को दर्शाते आरेख:-

आरेख क्रमांक 1(अ)

विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व के परिणाम (मध्यमान)

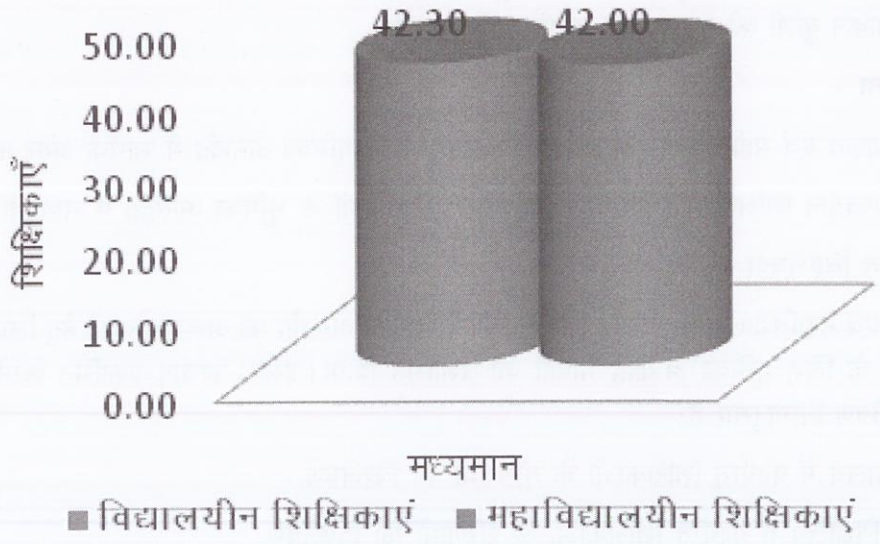

आरेख क्रमांक 1(ब)

विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व के परिणाम (मानक विचलन)

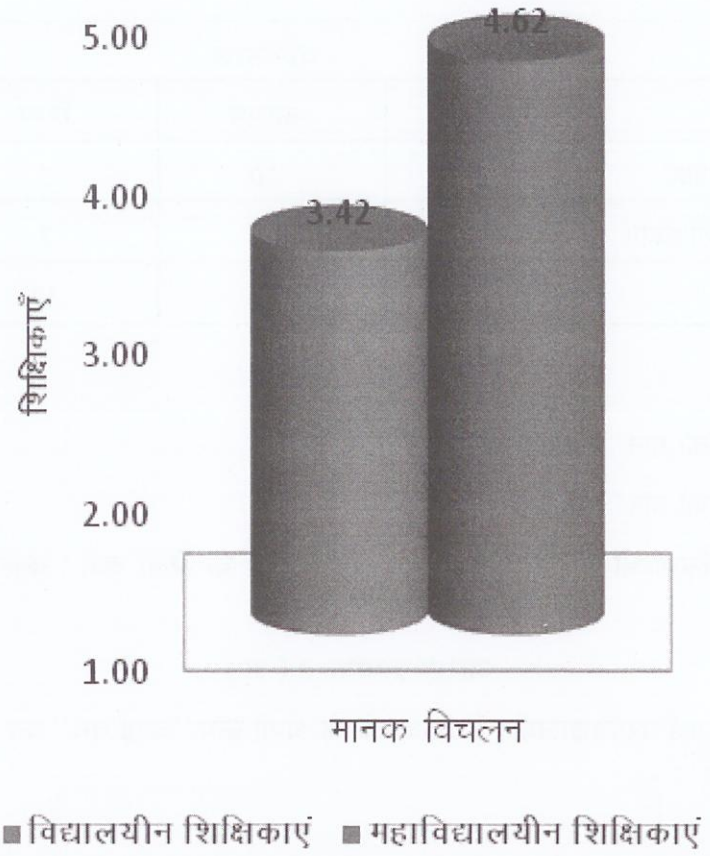

उपरोक्त सारणी एवं आरेख में परिणामों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि विद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद्व के प्राप्तांकों का मध्यमान 43.30 प्राप्त हुआ है जबकि महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं का भूमिका अन्तर्द्वंद के प्राप्तांकों को मध्यमान 42.00 प्राप्त हुआ है। दोनों मध्यमानों के अंतर की सार्थकता हेतु निकाले गए टी का मान 0.25 आया जिससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है यदि मध्यमानों को देखा जाए तो दोनों मध्यमानों में केवल .30 का अंतर है जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों का भूमिका अन्तर्द्वंद समान है।

विद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों का मानक विचलन 3.42 प्राप्त हुआ है, जबकि महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों का मानक विचलन 4.62 प्राप्त हुआ है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयीन शिक्षिकाओं की अपेक्षा महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों का मानक विचलन अधिक है। जिस आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों का फेलाव विद्यालयीन शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक है। अत: इस तालिका से यह बात स्पष्ट होती है कि विद्यालयीन शिक्षिकाओं और महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं का भूमिका अंतर्द्वंद लगभग समान है।

सारणी क्रमांक 2

विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के श्रेणी क्रम ''काई वर्ग'' के परिणामों को दर्शाती हुई परिणाम तालिका

समूह	वर्गीकरण			योग
	उच्च	औसत	निम्न	
विद्यालयीन शिक्षिकाएं	-	20	5	25
महाविद्यालयीन शिक्षिकाएं	-	18	7	25
योग	-	**38**	**12**	**50**

काई वर्ग का मान - .42 सार्थक अंतर नहीं है।

5% पर सार्थकता का मान - 3.84

1% पर सार्थकता का मान - 6.63

विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के श्रेणी क्रम ''काई वर्ग'' के परिणामों को दर्शाते हुए आरेख:-

आरेख क्रमांक-2 (अ)

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के श्रेणी क्रम ''काई वर्ग'' का औसत स्तर

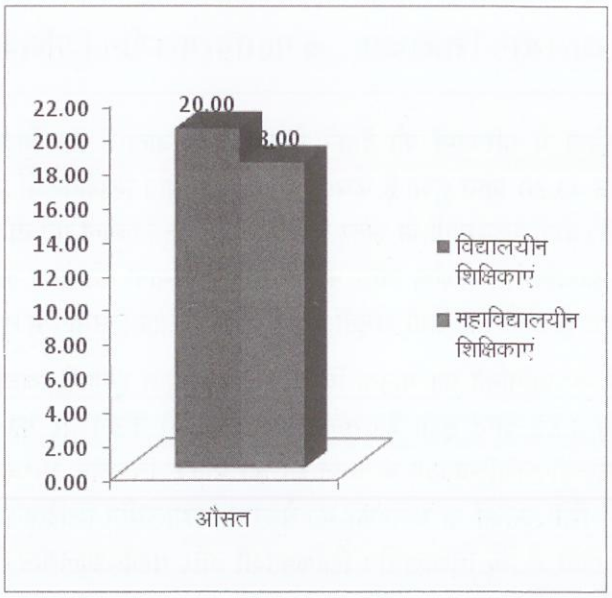

आरेख क्रमांक 2 (ब)

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के श्रेणी क्रम ''काई वर्ग'' का निम्न स्तर

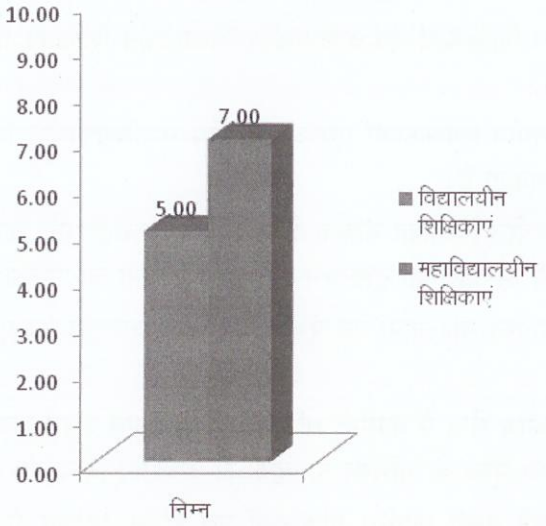

उपरोक्त सारणी एवं आरेख में परिणामों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि विद्यालयीन शिक्षिकाओं और महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों को श्रेणी वार वर्गीकरण करने पर दोनों ही समूह की कोई भी शिक्षिकाएं भूमिका अन्तर्द्वंद की उच्च श्रेणी में नहीं आई हैं। जहां तक औसत वर्गीकरण की श्रेणी है 25 में से 20 विद्यालयीन शिक्षिकाएं इस श्रेणी में आती हैं। जबकि महाविद्यालयीन शिक्षिकाएं 25 में से केवल 18 औसत श्रेणी में आती हैं। इस आधार पर यह माना जाता है कि महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं की अपेक्षा विद्यालयीन शिक्षिकाएं अधिक औसत श्रेणी में आई हैं। इसी तरह भूमिका अन्तर्द्वंद की निम्न श्रेणी वर्गीकरण में 25 विद्यालयीन शिक्षिकाओं में से केवल 5 शिक्षिकाएं निम्न श्रेणी में आई हैं जबकि महाविद्यालयीन शिक्षिकाएं 25 में से 7 इस श्रेणी में आई हैं। यहां महाविद्यालयीन शिक्षिकाएं निम्न श्रेणी वर्गीकरण में अधिक आई हैं। अगर तुलनात्मक दृष्टि से पूर्ण श्रेणी को देखा जाए तो कमोवेश दोनों ही समूह का भूमिका अन्तर्द्वंद लगभग समान दिखाई पड़ता है। वर्गीकरण की श्रेणी का अंतर देखने के लिए निकाले गए काई वर्ग का मान .42 आया है। जो इस बात की पुष्टि करता है कि दोनों समूहों के परिणामों में सार्थक अंतर नहीं है। अत: भूमिका अन्तर्द्वंद में महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं विद्यालयीन शिक्षिकाओं में अंतर नहीं आया है।

परिणामों की विवेचना के परिपेक्ष्य में यदि पूर्व में ली गई प्राकल्पना ' विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद नहीं होता है।' को देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के परिणामों में सार्थक अंतर नहीं आया है अत: हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष -

1. विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद में अंतर नहीं है।
2. भूमिका अन्तर्द्वंद की विभिन्न श्रेणियों में विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों में अंतर नहीं है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव -

1. इस शोध पत्र में भूमिका अन्तर्द्वंद के लिए विद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं को लिया गया है। इसमें अन्य क्षेत्रों में कार्यरत् महिलाओं का भूमिका अन्तर्द्वंद का अध्ययन किया जा सकता है।
2. शासकीय विद्यालयीन शिक्षिकाएं एवं अशासकीय विद्यालयीन शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद का अध्ययन किया जा सकता है।
3. शासकीय महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं एवं अशासकीय महाविद्यालयीन शिक्षिकाओं के भूमिका अन्तर्द्वंद का अध्ययन किया जा सकता है।
4. शासकीय सेवा में कार्यरत् विवाहित महिलाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद एवं शासकीय सेवा में कार्यरत अविवाहित महिलाओं से भूमिका अन्तर्द्वंद का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. शासकीय सेवा में कार्यरत महिलाओं एवं पुरुषों में भूमिका अन्तर्द्वंद का मात्रात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. ग्रामीण क्षेत्र में शासकीय सेवा में कार्यरत् महिला एवं पुरुष एवं शहरी क्षेत्र में कार्यरत् क्षेत्र में शासकीय सेवा में कार्यरत् महिला एवं पुरुष के भूमिका अन्तर्द्वंद का अध्ययन किया जा सकता है।
7. एकल परिवार में रहने वाली कार्यरत् महिलाओं एवं संयुक्त परिवार में रहने वाली कार्यरत् महिलाओं में भूमिका अन्तर्द्वंद का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. अस्थाना, विपिन, श्रीवास्तव, विजया, अस्थाना, निधि - ''शैक्षिक अनुसंधान एवं साख्यिकी'' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा 2008-2009
2. भटनागर, ए.बी. - ''विज्ञान शिक्षण'' आरलाल बुक डिपो 2005
3. भटनागर, आर.पी., भटनागर, मीनाक्षी- ''शिक्षा अनुसंधान'' लायल बुक डिपो, मेरठ, द्वितीय संस्करण 2007
4. कपिल, एच.के - ''अनुसंधान विधियाँ - एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा बारहवाँ संस्करण 2006
5. कृष्णमूर्ति, जे. - ''शिक्षा एवं जीवन का महत्व'' (अनूदित), कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, वाराणसी
6. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. - ''शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार'' - विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2004/2005
7. शर्मा, ए. - ''विज्ञान शिक्षण'' लॉयल बुक डिपो 2002
8. शर्मा, आर.ए. - ''शिक्षा अनुसंधान'' - आर. लाल बुक डिपो, मेरठ संस्करण 2006
9. त्यागी, गुरुशरण दास, नंद, विजय कुमार ''उदीयमान भारत में शिक्षा'' - विनोद पुस्तक मंदिर, 2005
10. Asian Journal of Psychology and Education, 6(2), 12-16.
11. Buch, M.B., IVth Buch Survey
12. Buch, M.B., VIth Buch Survey 1993-2005
13. Research Link, November 2007
14. Teacher's Adjustment Inventory, Smt. Rashmi Ojha
15. Teacher's Role Conflict Inventrory Manual 1991, Dr. Pramila Prasad and Dr. L.I. Bhushan

जनसंचार माध्यम एवं भारतीय महिलाओं का विकास

*श्रीमती श्वेता सिंह**

सारांश

भारतीय महिला इस शब्द को सुनते ही हर नागरिक के मन में एक छवि उभरने लगती है। भारतीय महिला अर्थात एक बेटी, बहन, माँ, पत्नी, भाभी, बुआ, मौसी आदि। आज हमारे देश में स्वतंत्रता प्राप्त होने के इतने वर्ष बाद भी महिलाओं की यही छवि नजर आती है।

समाज में स्त्रियों को यथोचित्त स्थान दिलाने के लिए स्वयं महिलाओं को आगे आना होगा और अपना विकास स्वयं करना होगा। आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है किंतु हमारी मानवीय सोच ही उनकी प्रगति में बाधक है जब कोई महिला अपने भविष्य में आगे बढ़ना चाहती है। आत्मनिर्भर बनना चाहती है तो सर्वप्रथम उसके परिवारजन को ही उसमें आपत्ति होती है। फिर भी नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है इस सफलता को दिलाने में जन संचार माध्यम ने बहुत साथ दिया है। इसके द्वारा एक जागृति आई है। महिलाओं के विकास में हिंदी सिनेमा का भी बहुत बड़ा हाथ है जो समय-समय पर इस प्रकार प्रेरित करने वाली फिल्में बनाती है जैसे:- ''चक दे इंडिया, मर्दानी, जय गंगाजल'' आदि।

अंतत: हम यही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों में भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है, उसने कई उपलब्धियाँ प्राप्त की है किंतु आगामी समय में प्रवेश करने के पहले हमें जरूरत है उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की जिसके लिए आवश्यकता है विचार परिवर्तन की, सामाजिक संकीर्णताओं से मुक्ति पाने की। भारतीय महिला अपना आसमान खुद तलाष लेगी, अगर वातावरण अनुकूल हो।

राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता एवं महिला संगठनों ने नारी चेतना पैदा करने एवं उन्हें अपने अधिकारों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी के परिणाम स्वरूप सन् 1975 को अंतराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया। सन् 1971 में भारत सरकार द्वारा स्त्रियों की परिस्थिति के बारे में एक समिति गठित की गई जिसमें 1974 में स्त्रियों की उन्नति के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये। भारत में महिला उद्यमिता में भी प्रगति हुई है और आज अनेक महिलायें अपने स्वयं के कारखाने और उद्योग चला रही हैं।

भारतीय महिलाओं के विकास से तात्पर्य किसी पद को हासिल करना बस नहीं है विकास वह है जिसमें हर महिला अपना सर गर्व से उठा कर चल सके। भारतीय महिलाओं के विकास से वो अपने जीवन से जुड़े हर फै सले स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें समक्ष बनाना ही महिलाओं का वास्तविक विकास है।

हमारे प्रधानमंत्री मान. श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा ''महिला दिवस'' पर कहा गया वाक्य ''देश की तरक्की के लिए पहले हमें भारत के महिलाओं को सशक्त बनाना होगा'' अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एक बार जब महिला अपना कदम उठा लेती है, तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर बढ़ता है। बहुधा हम देखते हैं कि किसी महिला का

* सहायक प्राध्यापक, सरदार पटेल कॉलेज ऑफ टेक्नालॉजी, बालाघाट (म.प्र.)

समाज में परिचय देते समय यह भी उल्लेख किया जाता है कि वह कामकाजी है या घरेलू है परंतु ये भेद-भाव ही हमारे देश की नारियों के विकास में बाधा है। हमारा समाज ही ये भेद-भाव पैदा करता है। हमारे समाज में कामकाजी महिलाओं को अधिक आदर से देखा जाता है और इसकी वजह से घरेलू महिलाओं में रोष भी होता है। यहां हम यह प्रश्न उठा सकते हैं कि क्या घरेलू महिलाएँ कामकाजी नहीं होती हैं परन्तु ये तथ्य सही नहीं है घर पर रहने वाली महिलाएँ हो या बाहर काम करने वाली दोनों को ही अपने-अपने तरीके से पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करना होता है। जहाँ घरेलू महिला अपने श्रम द्वारा परिवारजनों को सुख देती है और उनकी उन्नति में योगदान देती है वहीं कामकाजी महिला आर्थिक सहयोग देकर पारिवारिक उन्नति में अपना योगदान देती है। समाज के चहुंमुखी विकास के लिए दोनों का ही अपना अलग महत्व है। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने भी पिछले दिनों एक वक्तव्य में घरेलू महिलाओं को भी कामगार मान कर हर महिने वेतन दिए जाने की वकालत की है अन्य किसी के समझने से पहले स्वयं घरेलू महिलाओं को, कामकाजी महिलाओं का और कामकाजी महिलाओं को घरेलू महिलाओं का आदर करना सीखना होगा तब ही नारी का पूर्ण विकास होना संभव प्रतीत होता है।

भारतीय महिलाओं के विकास में जनसंचार माध्यम का योगदान:-

आधी दुनिया से संदर्भित सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन की प्रस्तुति महिला पत्रकारिता है। आबाल वृद्ध के लिये आकर्षण का केंद्रीय तत्व है। महिलाएँ पत्रकारिता में मानवीय पक्ष प्रस्तुत करती हैं। जयशंकर प्रसाद के अनुसार ''नारी की करूणा अंतर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।'' आधी दुनिया अखबार को ताजगी और दृष्टि देती है। आज वह कौन सा क्षेत्र है जहां नारी कार्यरत् नहीं है। आकाश की ऊँचाइयों में प्रगति के पर फैला नारी आश्चर्यजनक उड़ान भरने लगी है। हमें उस पर गर्व है।

जनसंचार साधनों ने भारतीय नारियों को मुखर बनाया है। जेम्स स्टीफेन की वाणी को पत्रकारों ने सार्थकता प्रदान की है-

''औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती हैं, क्योंकि वे जानती कम, समझती अधिक हैं।''

''वस्तुत: सभी महान् कार्यों के प्रारंभ में औरतों का हाथ रहा है।''

There is a woman at the beginning of all Great things.

(Low Mattina)

हमारे संचार साधनों ने नारी-जाति में जागरूकता पैदा की है। दहेजबलि, पति प्रताड़ना, पत्नी त्याग के समाचारों के प्रकाशन से मानव समाज के अर्ध्दांग को गौरवान्वित करना पत्रकारों का ही कार्य है। पत्रों ने समाज में एक नई दृष्टि दी है कि आज भी हम महिलाओं को महराजन, महरी, आया, धोबन, नर्स आदि के रूप में ही देखते हैं। संचार माध्यम महिलाओं के विकास में मुख्य भूमिका का निर्वाह कर रहा है। बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा एवं अनेक सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में हिन्दी के पत्र प्रभावकारी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को कुटीर उद्योग एवं हस्तकला से कैसे संबंद्ध किया जाय इस प्रश्न को पत्रिकाएँ सुलझा रही हैं।

जनसंचार मे प्रमुख कार्य एवं विशेषताएँ:- ये निम्नानुसार हैं-

जनसंचार के कार्य:-

(1) सूचना देना (4) निगरानी करना

(2) शिक्षित करना (5) एजेंडा तय करना

(3) मनोरंजन करना (6) विचार-विमर्ष के लिये मंच उपलब्ध कराना।

जनसंचार की विशेषताएँ:-

(1) इसमें फीडबैक तुरंत प्राप्त नहीं होता।

(2) इसके संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है।

(3) संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता।

(4) इसमें ढ़ेर सारे द्वारपाल काम करते है।

''21वीं शताब्दी भारतीय नारी के लिए वरदान सिद्ध हुई हैं। आज की नारी अबला नहीं सबला बन गई है।''

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में है पानी'' वाली यह मैथिलीशरणगुप्त जी की पंक्ति निर्मूल हो रहीं है। वह अबलापन की भावनाओं को तिलाजंली देकर विकास के सोपान पर अग्रसर है। वह **किरण बेदी** है, **कल्पना चावला** भी है। भारतीय वायुसेना के सबसे बड़े जहाज आईपीएल-76 को उड़ाने वाली देश की प्रथम पायलेट **वीणा सहारण** ही है। गणतंत्र दिवस 2012 के समारोह के अवसर पर दिल्ली के राजपथ पर आयोजित होने वाली परेड में भारतीय वायुसेना की टुकड़ी का नेतृत्व करने वाली **स्नेहा** पहली महिला अधिकारी हैं। मिसाइल मेन ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की विरासत को आगे बढ़ा रही अग्नि मिसाइल की प्रोजेक्ट डायरेक्टर **के. सी. थॉमस** को मिसाइल मेन और अग्नि पुत्री के नाम से गौरवान्वित किया गया है। साफ्ट शक्ति तिग्गा भारत में टेरिटोरियल आर्मी की पहली महिला हैं। व्यावसायिक संस्थानों में महिलाएँ रोल मॉडल का कार्य करने के सपनो को साकार कर रहीं हैं। एक सर्वे के अनुसार भारतीय महिलाओं की भागीदारी कुल उद्योगों में 10% हो गई है और निरंतर बढ़ते जा रही है।

एक सर्वे के अनुसार भारत में कुल 9 लाख 95144 हजार लघु उद्योग उद्यमशील महिलाओं द्वारा संचालित हैं। साक्षरता की दृष्टि से भी महिलाओं ने प्रगति की है। आज केरल में शत-प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। राष्ट्रीय कार्यक्रमों में स्वयं सहायता समूह, महिला विकास के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं। इन समूहों के द्वारा तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति के साथ ही अपने निजी उद्योग स्थापित करने में भी समक्ष बन गई हैं।

महिलाओं के विकास में भारतीय संविधान का योगदान:-

भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियाँ जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही हैं। वहीं भारतीय संविधान में भी ऐसे बहुत से एक्ट बनाये हैं जो महिलाओं के विकास में सहायता प्रदान करते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख हैं-

1. भारत का संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद-14)
2. राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करना (अनुच्छेद-15(1)
3. अवसर की समानता (अनुच्छेद-16)
4. समान कार्य के लिए समान वेतन की गारंटी देना (अनुच्छेद-39)
5. महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान बनाए जाने की अनुमति देना।(अनुच्छेद-15)(3)

6. महिलाओं की गरिमा के लिए उपमानजनक प्रथाओं का परित्याग करने अनुच्छेद-51 (ए) और साथ ही काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियाँ सुरक्षित करने और प्रसूति सहायता के लिए राज्य द्वारा प्रावधनों को तैयार करने की अनुमति देना अनुच्छेद 42(25)

7. 1956 के दशक के मध्य के हिंदु पर्सनल लॉ (हिंदु, बौद्ध, सिखों और जैनों) ने महिलाओं को को विरासत का अधिकार दिया। 2005 हिन्दु कानून में संशोधन के बाद महिलाओं को अब पुरुषों के बराबर अधिकार दिये जाना। 2005 हिन्दु कानून

8. कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2013. एक्ट 2013

भारत के विकास में महिलाओं का योगदानः-

यदि हम इतिहास के पन्ने पलटें तो हम ये समझ सकते है कि महिलाओं का योगदान है। जो आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणा है और इस प्रेरणा को महिलाओं में जागृत करने का कार्य जनसंचार माध्यम का है जो समय-समय पर महिलाओं को उनके विकास के प्रति जागृत कर रहा है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण कार्य से निम्न हैं-

- 1966 : इंदिरा गाँधी भारतीय की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं।
- 1970 : कमलजीत संधू एषियन गेम्स में गोल्ड जीवने वाली पहली भारतीय महिला थीं।
- 1972 : किरण बेदी भारतीय पुलिस सेवा में भर्ती होने वाली पहली महिला थीं।
- 1979 : मदर टेरेसा ने नोबेल शान्ति पुरस्कार प्राप्त किया और यह सम्मान प्राप्त करने वाली प्रथम भारतीय महिला नागरिक बनीं।
- 1984 : 23 मई को बछेन्द्री पाल माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।
- 1989 : न्यायमूर्ति एम. फतिमा बीवी भारत के उच्चतम न्यायालय की पहली भारतीय जज बनीं।
- 1992 : प्रिया झिंगन भारतीय थलसेना में भर्ती होने वाली पहली महिला कैडेट थीं (6 मार्च, 1993 को उन्हें कमीशन किया गया)
- 1994 : हरिता कौर देओल भारतीय वायुसेना में अकेले जहाज उड़ाने वाली पहली भारतीय पायलट बनीं।
- 1997 : कल्पना चावला भारत में जन्मीं ऐसी प्रथम महिला थीं जो अंतरिक्ष में गयीं।
- 2000 : कर्णम मल्लेष्वरी ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं (सिडनी में 2000 के समर ओलंपिक में कांस्य पदक)
- 2002 : लक्ष्मी सहगल भारतीय राष्ट्रीय पद के लिए खड़ी होने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं।
- 2004 : पुनीता अरोड़ा, भारतीय थलसेना में लेफ्टिनेंट जनरल के सर्वोच्च पद तक पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं।
- 2007 : प्रतिभा पाटिल भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं।

■ 2009 : मीरा कुमार भारतीय संसद के निचले सदन, लोक सभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं।

निष्कर्ष: -

जब है नारी में शक्ति सारी, तो फिर क्यूँ नारी को कहे बेचारी-

तुम्हारी श्रेष्ठ कथाएँ, तुम्हारे संघर्ष में निहित हैं।

तुम्हारी सफलता के बीच, अवरोधों में समाये हैं,

तुम्हारी सराहना पीड़ाओं से फूटेगी, डटी रहो।।

डिजिटल जनसंचार माध्यम संरचना और भागीदारी के लिहाज से पारम्परिक माध्यम से बिल्कुल अलग है। यह मीडिया इंटरनेट आधारित एक ऐसा संचार माध्यम है जिसमें इसे इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति ऑनलाइन समुदाय बनाकर उनके साथ किसी भी तरह की सूचना, संवाद, विचार, आडियो विडियों के माध्यम से जुड़ सकता है एवं संवाद कर सकता है। इन माध्यमों में फेसबुक, वाट्सएप, वेबसाइट, ट्विटर, ब्लॉग अत्यन्त प्रचलित मीडिया है। संविधान में महिलाओं को सभी तरह के अधिकार दिये हैं और इन अधिकारों को लागू करने के लिये कानून बना दिये हैं लेकिन इनका लाभ महिलाओं को तब होगा जब उनकी जानकारी महिलाओं को होगी। महिलाओं में जागरूकता विकसित करने में जनसंचार माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। जनसंचार के विभिन्न माध्यम महिलाओं में जागरूकता विकसित करने उन्हें अपने अधिकारों एवं भूमिकाओं के बारे में सजग बनाकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अभी भी कई महिलाओं का मानना है कि सोशल-साइट्स अभी सिर्फ मनोरंजन एवं दिन भर की सूचना आदान-प्रदान करने के लिये उपयोग में लायी जाती हैं और सोशल नेटवर्किंग साइट्स मुख्यत: शहरी क्षेत्रों में ही प्रचलित है। जहाँ तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की बात है ग्रामीण इलाकों में उसकी ज्यादा आवश्यकता है। इंटरनेट सुविधा का ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तार कर सोशल साइट्स के माध्यम से, उनका ग्रुप बनाकर, उनको जागरूक किया जा सकता है।

आज से 69 वर्ष पूर्व सन् 1947 में भारत में महिलाएँ केवल घरों में रहती थीं। उन्हें घर से बाहर निकलने, पढ़ने-लिखने, खेलने, पुरुषों की तरह बाहर काम करने, आदि अनेक क्षेत्रों में भागीदारी की अनुमति नहीं थी। भारतीय संविधान में महिला एवं पुरुष दोनों के लिए समान अधिकार बनाए गए हैं, किन्तु निरक्षरता एवं घरेलू तथा भारतीय धार्मिक परंपरओं के कारण महिलाएँ उन समस्त अधिकारों का सम्पूर्ण उपयोग नहीं कर पाइं हैं।

आज भारतीय नारी ने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। अगर हम शिक्षा के विषय में बात करें तो पुरुषों की अपेक्षा, महिलाओं में अशिक्षा का स्तर अधिक है किन्तु अगर शिक्षित पुरुष से तुलना की जाए तो वह उनसे कहीं आगे हैं। हम बहुधा समाचार पत्रों में पढ़ते हैं-हाईस्कूल परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मारी, आईआईटी परीक्षा परिणाम में छात्रा सर्वप्रथम। अत: महिलाएँ अपने प्रयास और प्रयत्न में पीछे नहीं हैं, किन्तु आवश्यकता है उन्हें सही अवसर प्रदान करने की।

इसी तरह विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, खेल, राजनीति हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। जिस तरह सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष कहा जाता है उसी तरह इंदिरा गाँधी ने प्रधानमंत्री के रूप में भारत का नाम संपूर्ण विश्व में गौरवान्वित किया है। सौन्दर्य के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन ने न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में सौन्दर्य के क्षेत्र में सम्मान प्राप्त किया है। संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर को साक्षात सरस्वती माँ का दर्जा दिया गया है। किरण बेदी,

पीटी उषा, कल्पना चावला, जैसी महिलाओं ने सिद्ध किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि जनसंचार माध्यम महिलाओं के विकास के सुअवसरों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्रचारित करे जिससे वे उन अवसरों का लाभ उठाकर विकास की दिशा में अग्रसर हों।

संदर्भ ग्रंथ –

1. गरीब महिलाओं के कैरियर को संवारने में जुटी है –
   hindi.yourstory.com>read>poore-woman.
2. भारतीय महिला – तेजी से बढते कदम – वेब दुनिया विशेष – 08 hindi.webdunia.com.
3. भारतीय परिदृश्य: मीडिया में महिलाओं का चित्रण –
   asbmassindia.blogspat.com>2012/02
4. महिला विकास और सषक्तिकरण एवं जन माध्यम–
   www.newswriters.in>2015/10/05 M.Ed.
5. भारत में महिलाएँ – https://hi.wikipedia.org/5/9de
6. Medieval and Modern India- Vedam books - ISBN No-81-7594-078-6.
7. National Policy for the Empowerment of Woman (2001) 2006/12/24.
8. Towords gender equality authorspress - ISBN No-81-7273-306-2.
9. Vietoria A velkoff is Arjun adlakha (oct1998) 'woman of the world womans health in india".
10. Woman in Ancient India ट्रबनर्स ओरियंटल सीरीज 2001 ISBN No-978-0-415- 24489-3.

Alcohol, Phenol & Ether

*Mrs. Anjulata Yadav**

Abstract

Alcohol and phenol are formed when a hydrogen atom in hydrogen aliphatic and aromatic respectively is replaced and hydroxyl group (OR group).Ether are polar but insoluble in H_2O and have low boiling point the alcohol of comparable molecular masses because ether do not form hydrogen bonds with water in alcohol -OR group is attached to sp3hybridised carbon secondry and tertiory alcohol. In phenol -OR group is attached to sp2 hybrid carbon. These may also be monohydric, dihydric etc. The dihydric phenol further rosy be artho meta or paea derivative. Ether are the organic compound in which two alkyl or aryl groups are attached to a divalent oxygen known as ether formula R-O-R where R may be alkyl or aryl group.

Alcohol, phenol and ethers are the carbon compounds containing atoms of oxygen besides hydrogen. Alcohol and phenols are farmed when a hydrogen atom in hydrocarbon aliphatic and aromatic respectively is replaced by hydroxyl group. Student as well as teachers start learning chemistry of these compounds in class XII. Interaction with student and teachers has led to identification of a few of the following chapters which may be given special emphasis by the teachers while discussing this unit in the class to make Chemistry learning more meaningful.

1. Nomenclature of alcohols, phenol and Ethers

a) Alcohols :-

- Rules for naming alcohols follow the guideline already given for alkenes in summery.
- The number of carbon atom in the longest carbon chain containing the OH group gives the stem.
- Use a prefix to identity the position of the carbon carring the OH had a suffix of ol number from the end of the chain closest to the alcohol group.
- Use number and di, tri etc as appropriate.
- If a molecule contains a multiple bonds well as an alcohol group give the carbon with the OH group attached the lowest possible number.

Alcohols may be classified as primary (1?) secondary (2?) tertiary (3?) depending on whether the carbon atom carring the OH is attached to 1 other carbon group, 2 other carbon groups at 3 other carbon groups respectively

Ex- CH_2CH_2CH, Ethonl , 1 Propanol, , 2 propanol, , 1, 2 cyclo, hexandial, , penl-3-eh-1-al

* Asst. Prof. Jabalpur Public College, Jabalpur (M.P)

b) Ethers - Two ways of naming ethers

- The alkyl groups attached to the-o-are named in alphabetical order as two separated ward and the ward ether added.

If both of the groups attached to the ether oxygen are the same, the ether name is simplified by using the prefix, di-with the name of the groups ex.- CH3-O CH3 is called dimethyl ether.

3. Alternatively ethers, may be named as alkoxy derivatives of alkanes. In this method of naming the longest continous alky chain farms the stem of the ether name and the alkoxy groups is named as a substituent on the alkane back bone

Ex:- $CH_3-CH_2-O-CH_3$, Ethyle Methyle

$CH_3-CH_2-O-CH_2-CH_3$ Diethyl ether

C) Phenols-

Some representative examples phenalic compounds are given below :-

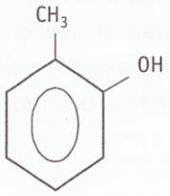

2 Methylphenal

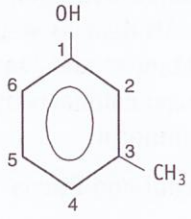

3 Methylphenal

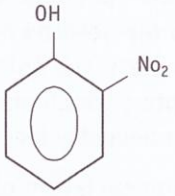

2 Nitrophenal

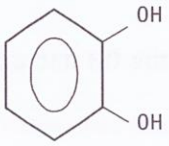

2 Methylphenal

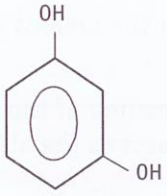

1, 3 Benzenediol

1, 4 Benzenediol
Chydroquinone

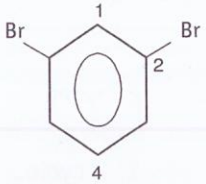

2, 6 Dibromophenal

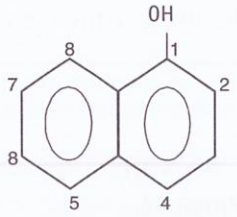

1-Naphthol (d-Napththol)

Note that-

The phenal is used as a parent name and the other substituents present in the compound are given a specific number according to their position on the aromatic ring

3. Structure and properties of Alcohol and phenols -

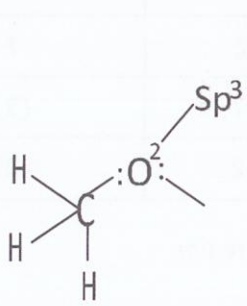

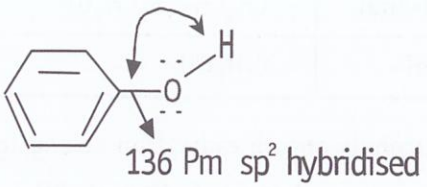

Alcohol

Phenol

The oxygen atom O an alcohol is sp3 hydridised and has two non bonding pairs of electrons.

The O-H bond of alcohol is strongly polarized and hydrogen bonding accours in much the some way as in water molecules.

As a consequence alcohols have relatively high boiling points compared to their arganic compounds of a similer molecular weight-and alcohols are significantly more water soluble than other classes of organic compounds which are capable of hydrogen bonding.

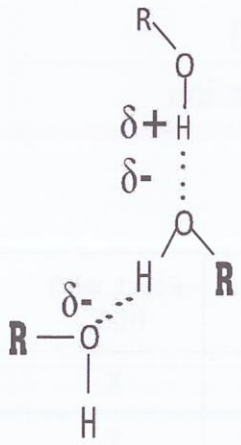

Hydrogen bonding between alcohol Molecules

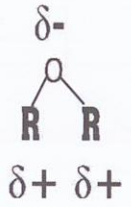

weak dipole

dipole attraction

S-between ether

Molecules only

Phenol also shows hydrogen bonding and is partially soluble in water. However ethers are nal-hydrogen bond donors and so are not soluble in water

Name	Structure	Molecular	Bp c2(c)	Water solubility
Ethnal	CH_3CH_2OH	46	78	3
Dimethile	$CH_3O\ CH_3$	46	-24	7
Propane	$CH_3\ CH_2CH_3$	44	-42	7
1-but-anal	$CH_3CH_2CH_2CH_2OH$	74	117	(3)
Phenol	C_6H_5OH	94	182	(3)

Alcohols absorb radication strong lg ~ 3500cm-1 in the infrared region

Reaction of Alcohal, Phenol, Ether:-

Acid-base reaction of alcohols and phenol :-

a) Alcohols are very weak acid but may loose H+ from the OH group if Sodium or a sufficiently strong base is present.

b) Phenol is more acidic than alcohols and H+ may be removed withs Sodium hydroxide solution it is less acidic than Carboxylic acid.

Ex- $CH_3CH_2CH_2OH\text{–}Na \longrightarrow CH_3CH_2CH_2O + Na + 11zHzcg>$

1 - Propanal 1- Propoxide ion

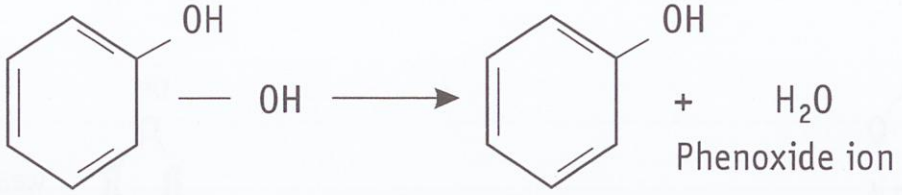

Relative Acidities

Ethenol	CHI_3	Pke	React with Na	React with OH-	React with HCO_3
–	–	16.6	ÿ	X	X
Phenol	C_6H_5OH	9.9	ÿ	ÿ	X
Acetic acid	CH_3COOH	48	Ÿ	Ÿ	ÿ

 ISSN No. : 2456-2424 : June 2017

Reaction of Ethers with H-X:

Ethers react with H-X under drastic conditions to from halogen derivatives the order of reactivity of H-X is HI> HBr>HCL.

This is so because the bond dissocialing energy of H-I is louwest in case of simple ethers, two molecules of alkyl halids are farmed:-

$$CH_3CH_2 - O - CH_3 + 3H - I \longrightarrow 2\ CH_3I + H_2O$$

$$C_2H_5O - C_2H_5 + 2H - 1 \xrightarrow{\Delta} C_2H_5I + H_2O$$

In case of mixed ethers, the bulkier onion I preferable ges with the smaller alkyl grap as show below.

$$CH_3 - O - C_2\ H_5 + H - I \longrightarrow CH_3I + C_2H_5OH$$

$$CH_3 - O - CH\ (CH_3) + H - I \xrightarrow{\Delta} CH_3I + (CH_3)_2\ CHOH$$

Terbary alcohols undergo dehydration most easily. This is so because carbocation is the intermedicate during dehydration Tertiary carbocation being the most stable is farmed preferentially and easily carbocation formation Tendency can be underslood by discussing mechanism of acidic dehydration of ethanol.

Reaction:-

$$C_2H_5OH \xrightarrow[443\ K]{Conc\ H_2SO_4} CH_3 = CH_2 + H_2O$$

Machanism :-

(i) $H_2SO \rightleftharpoons H^+ + H\ S\ OH^-$

(ii)

(ii) 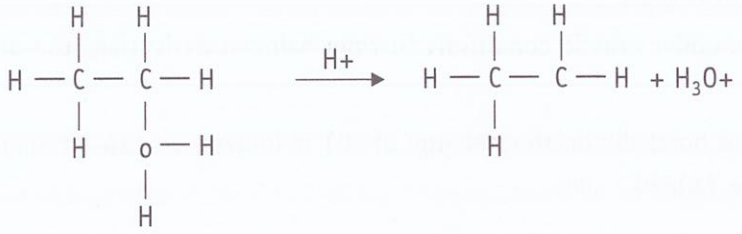

(iii) 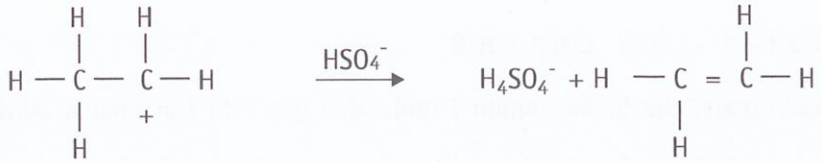

During acidic dehydration of alcohols, the bond between C and –OH is broken. The similar type of bond cleavage also taken place during reaction of students and they will appreciate that phenal is a strating material for synthesis of may dyes drugs and polymers like bokelite and melamine of daily use. The fallowing exercise may be laracliced by the bright learners for brainstorming.

References:-

1. William reusch farmer (sonma state university)
2. Gupta V.P. (2001) learning of arganic chemistry through interconversation; school science march P.hb - 52
3. NCERT chemistry - A text book for class XII 2009 P.P. 250 - 269 New Delhi.
4. Pradeep Chemistry- A text book for class XII 2015 P.P. 169-172.

PATRONS

Shri Praveen Verma
Director, Jabalpur Public College
Jabalpur, (M.P.)

Dr. Kapil Dev Mishra
Vice Chancellor, RDVV
Jabalpur (M.P.)

Dr. Balbir Singh
USA
bsingh1932@msn.com

Father G.V. Vazhan Arasu
Principal, St. Aloysius College,
Jabalpur (M.P.)

Shri Bhupendra Nigam
Councellor, Govt. College of
Educational Psychology, Jabalpur (M.P.)
9425161398

Prof. S.K. Mehta
03,Shivani Complex, Gupteshwar
Road, Madan Mahal, Jabalpur (M.P.)
0761-2420596

EDITOR IN CHIEF
Dr. G.S. Mishra

EDITOR
Dr. Nivedita Paul

MANAGING EDITORS
Dr. Chitranshi Verma
Smt. Meenakshi Shrivastava
Dr. Shweta Pandey
Dr. P.L. Mishra

ADVISORY BOARD
Dr. K.M. Bhandarkar, Gondia (M.S.)
Dr. V.K. Gupta, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. V.M. Shashi Kumar,
Thiruvananthapuram, Kerala
Prof. B.K. Sahoo, Dean Faculty of Education,
RDVV, Jabalpur (M.P.)
Dr. Damodar Jain, Bhopal (M.P.)
Dr. Shobhana Khare, Jabalpur (M.P.)
Dr. S.D. Singh, Mathura (U.P.)
Dr. Ashutosh Dubey, Jabalpur (M.P.)
Dr. Bhawana Soneji, Jabalpur (M.P.)
Dr. Sanjay Shrivastava, Jabalpur (M.P.)
Dr. Nilima Bhagwati, Assam
Dr. K.K. Sharma, Kurukshetra, (Haryana)
Dr. Alka Nayak, Ex. Vice Chancellor
RDVV, Jabalpur (M.P.)
Dr. Susamma Johnson,
Jabalpur (M.P.)
Dr. P. Pal Devnasan, Tamilnadu
Dr. Sunil Pahwa, Jabalpur (M.P.)
Dr. Prem Khatri, Nepal
Dr. Arun Shukla, Jabalpur (M.P.)
Dr. Raina Tiwari, Jabalpur (M.P.)
Dr. Rashmi Singh, Jabalpur (M.P.)

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers, Editors in Chief and the members of the Editorial Board do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

EMERGING RESEARCH JOURNAL

A Peer Reviewed (Refereed/Juried) International Journal

SUBSCRIPTION FORM TEMPLATE

I wish to subscribe to Emerging Research Journal for [1] [2] [3] Year(s). A Bank D.D. Bearing No. ..... Dated ..... for Rs./$ ..... drawn in favour Of **"JABALIPUR PUBLIC COLLEGE"** payble at Jabalpur, towards subscription has been enclosed herewith.

Name : .....

Designation : ..... Qualification : .....

Subscription Year : 1 Year [ ] 2 Years [ ] 3 Years [ ]

Subscription Type : Individual [ ] Institutional [ ]

Delivery Address : .....

.....

Contact No. : ..... E-mail : .....

SUBSCRIPTION RATES

DURATIOON	INDIVIDUAL	INSTITUTIONAL	ROW (USD)
One Year	Rs. 500	Rs. 600	$ 50
Two Year	Rs. 900	Rs. 1100	$ 75
Three Year	Rs. 1200	Rs. 1500	$ 100

Note :

1. Subscriptions are available for a whole volume (June & Dec.) only.
2. No cancellations are permitted.
3. Claims for missing issues can be made only within 45 days of publication date.
4. All legal disputes subject to Jabalpur Jurisdiction only.

SUBSCRIPTION ADDRESS

Subscription Manager
Emerging Research Journal
Jabalpur Public College
49, Kameta Patan Road, Jabalpur
Madhaya Pradesh Pin-482002
jabalpurpubliccollegejbp@gmail.com
Cont : 0761-2688838, 9425154312

Get it photocopied for more subscription

INTERNATIONAL CONFERENCE
ON
"E-GOVERNANCE IN EDUCATION"
Organized by
JABALPUR PUBLIC COLLEGE
JABALPUR PUBLIC COLLEGE

Since 1995

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

Shape your career with us

Facilities & Highlights

- Conference Hall
- Well Equipped Lab
- Library
- Wi-Fi Campus
- Canteen
- Career Guidance
- Sports & Games
- Campus Selection

- D.El.Ed.
- B.Ed.
- M.Ed.
- B.A. B.Ed.
- Proposed B.Ed. M.Ed.

For More Information Contact

49, Kameta Patan Road, Ahead of Radio Station
Near MPSRTC Depot, Jabalpur (m.p.)
Ph. : 0761-2688838/9425154213/9826826822/9713561012
E-mail : jabalpurpubliccollegejbp@gmail.com
Website : jpc.org.in

VOLUME-2 ISSUE-1 EMERGING RESEARCH FOCUS JOURNAL June-2017